

श्री सद्गुरुवेनमः

अब भया रे गुरु का बच्चा

अकह नाम कैसे कै जानी। लिखि नहीं जाय पढ़ो नहीं वानी॥
कलियुग साधु कहै हम जाना। झूठ शब्द मुख करहिं बखाना॥

—कबीर साहिब जी

पिण्ड ब्रह्माण्ड और वेद कितेबै, पाँच तत्त के पारा।
सतलोक यहा पुरुष विदेही, वह साहिब करतारा॥

—दादू दयाल जी

नाम बिदेही जब मिले, अंदर खुलें कपाट।
दया सन्त सतगुरु बिना, को बतलावे बाट॥

—तुलसी साहिब हाथरस वाले

—सतगुरु मधु परमहंस जी



सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, ज़िला साम्बा (जे. एण्ड के.)

सुरत कमल सद्गुरु स्थाना

— सतगुरु मधुपरमहंस जी

प्रचार अधिकारी

— राम रतन, जम्मू

© SANT ASHRAM RANJRI (J & K)

ALL RIGHTS RESERVED

First Edition	—	Jan., 2011
Copies	—	5000

Website Address.

www.sahibbandgi.org

www.sahib-bandgi.org

E-Mail Address.

*satgurusahib@sahibbandgi.org

Editor

Sahib Bandgi Sant Ashram Ranjri

Post -Raya, Distt.-Samba (J & K)

Ph. (01923) 242695, 242602

विषय सूचि

पृष्ठ संख्या

जीव बेचारा क्या करे	5
सदगुरु मेरे सत्य लोक पठाई	24
घट ही माहिं सो मूर	25
जो कुछ है सो सुरति है	32
भक्ति सिखाती है जीने की कला	60
अब भया रे गुरु का बच्चा	67
कहैं कबीर सुनो चितलाई	101
आसान और कठिन	110



जीव बेचारा क्या करे

बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव।

जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥

यह आत्मा यथार्थ में बहुत बंधनों से बँधी है। इतना बुद्धिजीवी जीव, जो सृजन का सरामौर है, जिसे नारायणी देही भी कहते हैं, ऐसा सबसे उत्तम प्राणी अपने बंधनों को नहीं समझ पा रहा है। कैसे बँधा है, नहीं देख पा रहा है; किसने बाँधा है, नहीं समझ पा रहा है; कैसे छूटे, निश्चय नहीं कर पा रहा है; गठानें कहाँ हैं, नहीं देख पा रहा है। क्या रहस्य है?

आत्मज्ञान बिना नर भटके, क्या मथुरा क्या काशी॥

इतना बुद्धिजीवी इंसान इन चीजों का रहस्य नहीं जान पा रहा है, बंधन को नहीं समझ पा रहा है, अपने वजूद को नहीं देख पा रहा है।

धर्मशास्त्रों में संकेत मिलता है कि प्रभु आत्मा में है। वो आपसे अभिन्न है। इसके बावजूद इन तथ्यों को नहीं जान पा रहा है। क्या कारण है? कितनी ताक़तवर ताक़तें हैं, जिन्होंने आत्मा को भ्रमित किया है! आत्मा उन्हें समझने में सक्षम नहीं हो रही है। पीर, पैगंबर, कुतुब, औलिया आदि कोई भी रहस्य को समझ नहीं पा रहा है। किस अज्ञात प्रबल विरोधी ताक़त ने आत्मा को अँधकार में धकेला है कि चाहकर भी अपने मुकाम तक नहीं पहुँच पा रहा है!

बिन रसरी सकल जग बंधा॥

इनसे छुटकारे का हकदार केवल इंसान है, क्योंकि सबसे अक्लमंद

प्राणी है। इतने अक्लमंद इंसान को अपने बंधन समझ नहीं आ रहे हैं। यह रहस्य है। आइए देखें, गोस्वामी जी ने भी इशारा किया। जब गरुड़ जी आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए काकभुशुण्डी जी के पास पहुँचे तो वहाँ पर संवाद है।

सुनो तात यह अकथ कहानी। समझत बने न जाय बखानी॥

हे प्रिय! आत्मज्ञान की अकथ कहानी बताता हूँ, जिसे समझना है। मैं व्याख्यान नहीं कर पाऊँगा, पर तुम समझने का प्रयास करना, क्योंकि पूरा नहीं बोल पाऊँगा। यानी बोलने के लिए शब्द नहीं हैं, इसलिए तुम्हारा सहयोग चाहिए। तुम ध्यान से मेरी बात सुनना। यह अकह है, क्योंकि शब्द व्यक्त नहीं कर पायेंगे। अकह है, अकथ है, तो भी कह रहा हूँ, तो भी व्याख्यान कर रहा हूँ। जो आत्मा के ज्ञान की, आत्मा के बंधन की बात बोल रहा हूँ, वो अकथ है, तो भी प्रयास कर रहा हूँ।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखरासी॥

यह आत्मा परमात्मा का अंश है; अविनाशी है; चेतन है, चेतना से युक्त है; अमल है, गंदगी से रहित है। यह छल, कपट से रहित अत्यंत ही सरल है। इसमें छल, कपट नहीं हैं। सहज है। इस आत्मा में कहीं भी वक्रता नहीं है। कहीं भी छल नहीं जानती है, कहीं भी कपट नहीं करती है। सुखरासी है, आनन्दमयी है।

सो माया बस भयौ गुसाईं। बंधौ कीर मरकट की नाईं॥

ऐसी आत्मा कीर और बंदर की तरह बँधी है। कीर तोते को कहते हैं। तोते को बाँधते हैं तो बाँस की नलिका बनाते हैं। उसे चरखे पर रखते हैं। नीचे शीशा बाँधते हैं; ऊपर फल रखते हैं। तोता फल देखकर आता है। चरखे पर पाँव रखता है तो चरखी वज्रन से घूम जाती है। शीशे में अपना रूप देखता है, सोचता है कि किसी दूसरे तोते ने पकड़ लिया है। वो मानता है कि कोई दूसरा तोता पकड़ लिया है। उसे गिराने वाला

दूसरा कोई नहीं था। चरखी इस तरह से बनाई गयी थी कि वज्रन से घूम गयी। उसके पाँव ऊपर की ओर और सिर नीचे हो गया। वहाँ शीशा लगा रखा होता है। वो सोचता है कि किसी दूसरे तोते ने बाँध दिया है। हालांकि खुला है। इतने में मदारी आकर उसे पकड़ लेता है और पिंजरे में डाल देता है।

आत्मा भी बिना बंधन के अपने को बाँधा महसूस कर रही है। इस आत्मा को बाँधने वाला कोई भी नहीं है। यह बंधने वाली चीज़ नहीं है।

बंधन की प्रकृया में तीन चीज़ें होती हैं—बाँधने वाला, बाँधने वाला और बंधन। उदाहरण के लिए गाय, घोड़े आदि को बाँधते हैं। बाँधने वाला हुआ पशु, बाँधने वाले हुए आप-हम लोग और बंधन हुआ रस्सी आदि से। इसका मतलब है कि आत्मा के बंधन में तीन चीज़ें होंगी। एक तो बाँधने वाला—आत्मदेव। कितना कौतुक है कि इतनी शक्तिशाली आत्मा को बाँधा गया है! बड़े तरीके से बाँधा गया है। दूसरा, बाँधने वाला है। यह कौन है? बाँधने वाले को क्या देख सकते हैं? क्या बाँधी हुई आत्मा को महसूस कर सकते हैं? पहली बात यह है कि धरती पर रहने वाले मनुष्य ने यह स्वीकार कर लिया है कि बंधन में हूँ। इसलिए छूटने की चेष्टा कर रहा है, मोक्ष की प्राप्ति का प्रयास कर रहा है। यानी मान लिया है कि बंधन में है। यह पक्की धारणा है कि हम बंधन में हैं। तो आत्मा बाँधी हुई है। जो पंच भौतिक तत्वों से परे है, अविनाशी है, मन, बुद्धि आदि से परे है, ऐसी आत्मा किस सिस्टम से बाँधी है?

कहीं गठान लगी हो तो खोलते हैं। पहले देखने की कोशिश करते हैं कि किस तरह की गठान है। गठान खोलने के लिए भी जानना पड़ता है कि कैसी है। गाँठ को देखकर ही खोलने का यत्न करते हैं। इस तरह आत्मदेव की मुक्ति के लिए बाँधा किसने है, कैसे बाँधा है आदि बातें जाननी होंगी। इन बातों को जाने बिना किसी भी कीमत पर अपना

कल्याण नहीं कर सकते हैं।

ऐसी आत्मा कैसे बँधी? कैसी है आत्मा, जिसे बाँधा गया? उसका अपना स्वरूप कैसा है? खुद कैसी है? गठान कैसी है? छूटेगी कैसे? जब तक ये चीजें नहीं देखेंगे, नहीं छूट पायेंगे।

वस्तु कहीं ढूँढ़े कहीं, किहि विधि आवे हाथ।

कहैं कबीर भेदी लिया, पल में देत लखात॥

पहले देखना है, बँधने वाला—आत्मा। जब भी आत्मा को जानने का प्रयास करते हैं, बोध नहीं होता है। जब भी हम इसका स्वरूप देखने की कोशिश करते हैं तो दो चीजों का बोध होता है। पहला तो व्यक्ति दिखता है। यह देही पंच-भौतिक तत्वों से बनी है। इसकी 25 प्रकृतियाँ हैं। उदाहरण के लिए पृथ्वी-तत्व है। हाड़, माँस आदि सबमें है। इसमें जल तत्व भी मौजूद है। थूक, मूत्र, वीर्य आदि भी सबमें दिख रहा है। इसका केंद्र शिशन इंद्री है। वायु-तत्व नाभि में है। बोलना, सुनना, बल लगाना आदि इसकी प्रकृति है। सबमें यह तत्व दिख रहा है। अग्नि-तत्व भी दिख रहा है, क्योंकि भूख, प्यास, आलस्य आदि सबमें है और दिख भी रहा है। इसका केंद्र मुख में है। फिर आकाश-तत्व सुषुम्ना में है। पाँचों तत्व शरीर में हैं। फिर पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ भी दिख रही हैं। रोम, माँस, मल, मूत्र आदि सब दिख रहा है। पूरे तत्व मौजूद हैं। यह ढाँचा समझ आ रहा है। सबके शरीर का सृजन मातृ-गर्भ में हो रहा है। माता के रज और पिता के वीर्य से सृजन हो रहा है। यही सिस्टम है। मैथुन सृष्टि है। फिर पाँच कर्मेन्द्रियाँ दिख रही हैं। पाँव दिख रहे हैं। कर्म इंद्री है। चलने का काम कर रहे हैं। मूत्र इंद्री भी दिख रही है। यह भी कर्म इंद्री है। मूत्र-विसर्जन का काम करती है। कर्म इंद्री मुख भी दिख रहा है। खाने का काम कर रहा है। इन्हें कर्मेन्द्रियाँ कहते हैं। हाथ भी कर्म इंद्री हैं। सारे काम इनसे हो रहे हैं। गुदा मल-विसर्जन का काम करती है।

फिर ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। आँखें दृश्य का ज्ञान देती हैं। नासिका खुशबू-बदबू का ज्ञान देती है। मुख कर्म इन्द्री के साथ-साथ ज्ञान इन्द्री भी है। यह हमें स्वाद बताता है। कान शब्दों का भाव देते हैं। त्वचा शीतोष्ण का ज्ञान देती है। इन दस इन्द्रियों से शरीर सुसज्जित है। 25 प्रकृतियों सहित शरीर का खेल समझ आ रहा है। ठीक-ठीक समझ आ रहा है। यह कभी भी आत्मा नहीं हो सकता है। इंसान मर जाता है तो इस देही को श्मशान में ले जाते हैं। मिट्टी, मिट्टी बन जाती है, पवन, पवन में समा जाती है। शरीर की हक्रीकत समझ में आ रही है। हमारी आत्मा शरीर नहीं है। पर हम शरीर को ही सत्य मान रहे हैं। यह जिस्म दिख रहा है। यह आत्मा नहीं हो सकता है, क्योंकि नाशवान् है। पाँच भौतिक तत्त्व नाशवान् हैं। भौतिक तत्त्व आत्मा नहीं हो सकते हैं। फिर शास्त्राकारों ने इसे अधम कहा, अनित्य कहा। ज्ञानियों ने, संतों ने कभी भी इस देही को अमर नहीं कहा।

पाँच तत्त्व को अधम शरीरा ॥

इसकी सभी इन्द्रियाँ विषय-भोगों में लिप्त हैं।

पाँच सखी पिहुँ पिहुँ करत हैं, भोजन चाहत न्यारी न्यारी ॥

इसलिए हम शरीर को कम-से-कम आत्मा नहीं कह सकते हैं। कोई भी लक्षण मेल नहीं खा रहा है। तो यह आत्मा हो ही नहीं सकता है। फिर कहाँ है आत्मा? कहाँ खोजें? कहीं तीर्थ स्थानों पर है, पानी में है, कहाँ है? देखना होगा। जो देख रहे हैं, कतई नहीं है। इसके लिए कहा—

पाँच तत्त्व को तन रच्यो, जान्यो संत सुजान।

इसमें कछु सांचो नहीं, नानक साँची मान ॥

साहिब भी कह रहे हैं—

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खानि।

शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ॥

इन वाणियों से पता चल रहा है कि शरीर गंदा है, विकारों से युक्त है, बीमारियों से भरा है। अच्छा, हमारा शरीर तो आत्मा नहीं हो सकता है। फिर दूसरा दिख रहा है—व्यक्तित्व। ऐसे में आत्मा को कैसे ढूँढ़ें?

जैसे दूध दूध दही माखन, बिन मथे भेद न घी दा॥

आत्मा को समझना ही है। दूसरा दिख रहा है—व्यक्तित्व। यह क्या है?

पहली बात तो यह कि किसी भी तरह से देखने से शरीर को आत्मा नहीं बोला जा सकता है। कभी भी, बिलकुल भी नहीं। यह तो फिर वैसा ही हो जायेगा। एक पहाड़ी आदमी कहीं घूमने गया। वो जो-जो देख रहा था, वो-वो सब लिखते जा रहा था। उसने अगर अमरूद फल देखा तो वो लिख रहा था। हाथी देखा तो वो भी लिख रहा था। जब भी आदमी को ज्ञान होता है तो ज्ञाता बनता है। एक दिन वो मित्र के साथ था। तो हाथी आ रहा था। मित्र ने पूछा कि तुम घूमकर आए हो, बताओ कि यह क्या चीज़ आ रही है? उसने अपनी डायरी निकाली; कहा कि यह अमरूद है। उसके मित्र ने कहा कि यह अमरूद कैसे हो सकता है! उसने कहा कि अच्छा, रुको। उसने फिर डायरी देखी; कहा कि यह हाथी है। मित्र ने कहा कि हाथी तो बहुत बड़ा होता है। उसने फिर एक नज़र डायरी पर लगाई और झट से कहा कि हाथी नहीं तो अमरूद तो है—ही—है।

कहने का भाव है कि अधूरी जानकारी रखते हैं तो गड़बड़ होगी—ही—होगी।

तो हमारी आत्मा शरीर नहीं है। यह तय है। इसमें अमरूद-हाथी वाली संशय बनी है। शरीर की बनावट और है। शरीर का ढाँचा भी आत्मा से मैच नहीं हो रहा है।

पहले तो व्यक्ति दिख रहा है। फिर दिख रहा है—व्यक्तित्व। कोई

गंभीर है, कोई सहनशील है, कोई अपराधी है, कोई सेक्सी है। व्यक्तित्व क्रिया-कलापों से संबंध रखने वाली चीज़ है। अब यह व्यक्तित्व भी आत्मा नहीं हो सकता है, क्योंकि इसमें दोष हैं। आदमी लालच करता है। इसमें विकार भरे पड़े हैं। कहीं दूर से भी मैच नहीं हो रहा है, क्योंकि आत्मज्ञानियों ने जैसी व्याख्या की है, उससे मेल नहीं हो रहा है। व्यक्तित्व का मेल नहीं हो रहा है। इसमें क्रोध भी है जबकि आत्मा में क्रोध नहीं है। इसमें काम भी है। आत्मा में वो भी नहीं है। आत्मा बहुत निर्मल है, बहुत चेतन है। हमारी आत्मा अपने में स्थित है। परम चेतन होने पर भी अपने में स्थित है। बड़ा ही गंभीर, बड़ा ही पेचीदा आत्मा का स्वरूप है। तो जो व्यक्तित्व है, उसे भी आत्मा नहीं कह सकते हैं। शरीर कैसे चल रहा है? कुछ कहते हैं कि शरीर का संचालन करने वाली आत्मा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि शरीर को मस्तिष्क ही कंट्रोल करता है।

मान लो कि मैं किसी को पानी लाने के लिए कहूँ। वो मेरी गाड़ी की तरफ दौड़ता है। यह काम बहुत कम समय में हुआ। एक सैकेंड से भी कम समय में हुआ। ब्रेन ने चित्त से पूछा कि कहाँ है पानी? चित्तकोष या याददाश्त ने बताया कि गाड़ी में है। ब्रेन ने पाँवों को संदेश दिया। पैर उसी दिशा में बढ़े। कल्पना नहीं की जा सकती है कि कितनी स्पीड में यह काम हुआ।

आप मोबाइल ओपन करते हैं। कॉल सेक्शन में जाते हैं या कोई अन्य चीज़ ओपन करते हैं। तो वहाँ संकेत मिलता है कि थोड़ा रुको। कम्प्यूटर में भी ऐसा ही होता है। कोई कमाण्ड देते हैं तो वो कहता है कि अभी काम हो रहा है। यानी संकेत है कि थोड़ा रुक जाओ, थोड़ा वेट करो। लेकिन इंसान कैसा कम्प्यूटर है। इसमें जो काम हो रहा है, वो बहुत जल्दी हो रहा है। कम्प्यूटर को इंसान की नकल पर बनाया। सुपर कम्प्यूटर की 50,000 मेमोरी है। पर इंसान में 2 खरब मेमोरी सेल्स हैं।

आपने जीवन में जो-जो देखा, उसकी कॉपी आपके चित्तकोष में है। आजकल चिप आती है, जो 500 गाने रिकार्ड कर लेती है; 1000-2 गाने तक स्टोर कर लेती है। इस तरह इंसान में ऐसी चिप है, जिसमें ज़िंदगी का मामला रिकार्ड है। इंसान के अन्दर बड़े रहस्य भरे पड़े हैं। तो मस्तिष्क ही कोशिकाओं का, इंद्रियों का राजा है, जिसके द्वारा काम होता है। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है।

कभी संकल्प करने की ताकत कम हो जाती है। कभी याद करने की ताकत कम हो जाती है। एक ने कहा कि मैं कलर्क हूँ। मुझे दिमाग पर चोट लगी। अब मुझसे कोई पूछता है कि क्या काम करते हो तो मुझे थोड़ा समय चाहिए। मैं तुरंत जवाब नहीं दे पाता हूँ।

यानी देरी से समझने की एक कमी आ गयी। मैंने कहा कि चोट से कोशिकाएँ दब गयी हैं। वो कोशिकाएँ दब गयी हैं, जो अर्थ के भाव को समझ पाती हैं। वो काम तो कर रही हैं, पर चोट के कारण ठीक से काम नहीं कर पा रही हैं। यदि पाँव में चोट लगे तो ठीक से नहीं चल पाता है, लँगड़ाकर चलता है।

शरीर के सभी सिस्टम ब्रेन से जुड़े हैं। इसलिए हमारा ब्रेन हमारी आत्मा नहीं हो सकता है। कभी कोई शरीर को चोट पहुँचाता है तो क्रोध आ जाता है। क्रोध क्यों आया? ब्रेन पूरी देही का जिम्मेवार है। आप देखें कि पाँव पर चोट लगे, तो भी परेशान हो जाता है; हाथों पर चोट लगे, तो भी परेशान हो जाता है। जब भी कहीं चोट लगती है तो ब्रेन के पास एक मेसेज पहुँचता है। वो स्वीकार नहीं करता है। अगर किसी ने चोट पहुँचाई तो फौरन कहता है कि मार मुक्का या मार थप्पड़। क्यों नहीं किया मंजूर? क्योंकि उसकी जिम्मेवारी है।

हमारा अन्तःकरण जिस्म में ओतप्रोत है। हमारी आत्मा भी जिस्म में ओतप्रोत है। पर वो आत्मा नहीं है। क्योंकि इसके लक्षण, स्वभाव आदि किसी भी दृष्टि से आत्मा से मेल नहीं खा रहे हैं। आत्मा

सहज है, गुणातीत है, निराली है। इसलिए आंक्रात होने का सवाल ही नहीं है। यह केवल इंद्रियों और मस्तिष्क का खेल था।

हम केवल व्यक्तित्व तक रहें क्या? इसके आगे इंसान ने खोज नहीं की। इंसान की दौड़ यहीं तक हुई। इसके पीछे क्या चीज़ है, वहाँ नहीं पहुँच पाया। सवाल उठा कि दिमाग सर्वोपरि है क्या? हमारी आत्मा का क्या रोल है इसमें? कर्मानुकूल जन्म-मरण को धारण कर रही है। गीता में भी कहा कि हे अर्जुन, जैसे व्यक्ति पुराने वस्त्रों का त्याग कर नये वस्त्र धारण कर लेता है, इसी तरह कर्मानुकूल आत्मा एक शरीर का त्याग कर दूसरा शरीर धारण कर रही है। कर्मानुकूल!

सवाल उठा कि कर्म-विधान से आत्मा का क्या संबंध है? कौन-2 से कर्म यह कर रही है? मूलतः चार तरह के कर्म इंसान कर रहा है। पहला तो वो नौकरी कर रहा है—चाहे सरकारी हो या प्राइवेट। ब्रेन से यह काम कर रहा है। दूसरा, खेतीबाड़ी करता है। इसमें भी शोध करता है। तीसरा, व्यापार करता है। चौथा, फ्राड भी करता है। मूलतः चार तरह के कर्म कर रहा है। इन सभी का अभीष्ट क्या है? मतलब क्या है? महत्व क्या है? हम सभी कर्म भौतिक और मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कर रहे हैं। इसमें कोई भी कर्म आत्मा से संबंधित नहीं है। तभी तो कह रहे हैं—

जीव पड़ा बहु लूट में, नहीं कछु लेन न देन॥

कोई लेना-देना नहीं है आत्मा का। हमें देखना होगा। यहाँ पर आत्मा का रोल क्या हो रहा है? जरूर कहीं शामिल है। तभी तो सज़ा है।

कोई लड़की आत्महत्या करती है तो सास को, जेठ को, ननद को, घर के लोगों को पकड़ रहे हैं। क्यों? क्योंकि भागीदारी हो रही है। केस चलता है। लड़की के माँ-बाप से पूछते हैं कि कोई टेंशन तो नहीं दे रहे थे। वो जब टेंशन में, उलझन में फँस गयी तो आखिर में टेंशन बढ़ी।

उसके पास हल नहीं मिला तो अंत में अपने को शांत करने के लिए सोचा कि मर ही लेते हैं। उसने प्रॉब्लम का हल आत्महत्या समझा। किसी भी तरह मर गयी। अब कौन-कौन शामिल था इसमें? जो-जो शामिल था, उसे भी सज़ा मिल जाती है।

आखिर पाप-कर्मों में हमारी आत्मा भी शामिल है क्या? वो तो बेकार में लगी हुई है। उसे क्या लेना खाने-पीने से? कुछ कोई चीज़ खाकर कहते हैं कि मज़ा आ गया। मज़ा इंद्रियों को आया। सभी शरीर की संतुष्टि के लिए काम कर रहे हैं। कोई कर्म आत्मा के लिए नहीं है। फिर सज़ा क्यों है?

सास को भी जेल में डाल देते हैं। क्योंकि शामिल थी। उसे देखना चाहिए था कि वो परेशान-सी लग रही है। अब वहाँ कानून ने क्यों दंड दिया? जब मायके गयी तो पुत्रवधु हुई। उन्हें माता-पिता का रोल करना था। जेठ-जेठानी का काम था कि बहन की तरह व्यवहार करना। अगर ऐसा व्यवहार नहीं किया तो संविधान दंडित कर रहा है। हमारी आत्मा क्यों दण्डित हो रही है? मास्टर जी पर गुस्सा आया तो ब्रेन ने कहा कि मारो। आत्मा को क्या लेना था! तो जन्म क्यों मिल रहे हैं? कह रहे हैं कि कर्मानुकूल आत्मा को नाना योनियों में जाना पड़ रहा है। कहीं-न-कहीं हमारी आत्मा का समावेशन है। कहीं-न-कहीं लगी है। तभी तो हमारी आत्मा दंडित हो रही है। जितने भी तरह के कर्म हैं, यह सबमें शामिल हो रही है।

एक ने कहा कि जो हम बुरे कर्म कर रहे हैं, वो हमारा मन है और जो अच्छे कर्म कर रहे हैं, वो हमारी आत्मा होगी। मैंने कहा कि दोनों तरह के कर्मों का अधिष्ठाता हमारा मन है। आत्मा दोनों कर्मों से परे है। कर्म-क्षेत्र से इसका कोई संबंध नहीं है। कर्म के विभाग से संबंधित नहीं है आत्मा। दोनों मन की उपज है। इसलिए कहा—

पाप पुण्य ये दोनों बेड़ी। इक लोहा इक कंचन केरी।।

बेड़ी तो बेड़ी है, चाहे सोने की है, चाहे लोहे की। इस तरह दोनों कर्म बंधनकारक हैं। लेकिन शरीर में कुछ करना है तो शुभ-कर्म ही करना है और वो भी फल-रहित होकर। यदि फल की इच्छा से किया तो पुनर्जन्म होगा। फिर उसका फल भोगने के लिए आना पड़ेगा। इसलिए निष्काम-भाव से शुभ-कर्म किये जाने चाहिए।

तो देखना है कि आत्मा कहाँ-कहाँ शामिल हो रही है। बुरे कर्मों में भी शामिल है और अच्छे कर्मों में भी। तभी तो कह रहे हैं—

जीव पड़ा बहु लूट में, नहीं कछु लेन न देन॥

यह जीव बड़ी लूट में है। कुछ लेना ही नहीं है। हमारी आत्मा कहाँ पर शामिल है, जो इसे बार-बार जन्म लेना पड़ रहा है? जो हमारा व्यक्तित्व है, किन चीजों से बना है? क्या-क्या है इसमें? आपको कोई भोजन खिलाता है तो पूछता है कि क्या है इसमें? आप दुबारा मुँह में डाल चबाकर कहते हैं कि इसमें आलू भी है; इसमें टमाटर भी है; इसमें नमक भी है। यह जीव ने बताया। खाकर बताते हैं। हालांकि नमक देखा नहीं। आप चबाते जाते हैं और बताते जाते हैं कि क्या-क्या है।

देखते हैं कि व्यक्तित्व में क्या-क्या है। इसमें एक तो दिख रहा है—मन। मन को कैसे जानें? संकल्प मन की वृत्ति है। दूसरा—बुद्धि। वो कैसे दिखे? जैसे चबाकर दिखा कि क्या है? क्रिया से दिख रहा है कि बुद्धि भी है। फैसला करते हैं तो यह बुद्धि का काम है। चल रहे हैं, तो भी फैसला किये जा रहे हैं। बुद्धि दिख रही है। फिर चित्त भी दिख रहा है। हर पल आप कुछ याद कर रहे हैं। अहंकार भी बिलकुल दिख रहा है। काम कर रहे हैं तो यह अहंकार है। क्रोध दिख रहा है। ये सब चीजें हरेक में दिख रही हैं। पाप-पुण्य भी दिख रहा है। काम भी दिख रहा है, क्रोध भी दिख रहा है। पूरा-पूरा मन दिख रहा है।

आदमी छल, कपट करता है। एक आदमी जमीन दान देना चाहता था। मुझे बोला कि 100 बीघा जमीन दान में दूँगा। मैंने कहा कि

कोई बात नहीं। कहा कि 10 बीघा का पैसा देना, क्योंकि जीवन गुज़ारना है। मैंने अपने लोगों से तहक़ीकात करवाई। जब तहक़ीकात की गयी तो पता चला कि उसकी वो 10 बीघा जमीन ही थी और वो पैसा भी 5 गुणा माँग रहा था। वो 100 बीघा की बात कर रहा था। वो बाकी तो सरकार की थी। यह है—छल। क्या यह आत्मा कर रही है? यह धोखाधड़ी आप मत सोचना कि आम आदमी नहीं कर रहा है; सब कर रहे हैं, क्योंकि मन की आदत है।

कोई सफा न देखा दिल का।

बिल्ली देखी बगुला देखा, सर्प जो देखा बिल का।।

ऊपर ऊपर सुन्दर लागे, भीतर गोला पाथप का।

कोई सफा न देखा दिल का।।

कुछ गलती करके आते हैं और कहते हैं कि माफ़ी दे दो। पहले दोष तो बताओ। चालाकी से माफ़ी नहीं माँगनी है।

एक बादशाह दाउद था। उसका सेवक उरियाह था। उस राजा की 9 रानियाँ थीं। दाउद पैगंबर भी कहलाता था। बड़ा सिद्ध साधक भी था। एक दिन सेवक की स्त्री को देखा, उरियाह की पत्नी को देखा; सुन्दर लगी। दाउद ने सोचा कि इसे कैसे प्राप्त करूँ! सोचा कि यदि पति ज़िंदा रहेगा तो मेरी नहीं हो सकती है। उसने सेवक को किसी काम के बहाने से जंगल में भेज दिया। दूसरी ओर 4-6 सैनिक भेज दिये और कहा कि इसे मार डालना। उन्होंने उरियाह को मार दिया। अब राजा दाउद ने उसकी पत्नी को अपने पास ले लिया। दाउद एक पैगंबर था। दाउद एक दिन इबादत में था तो उसे ऐसा लगा कि कुछ गलती हुई। दाउद एक आँख से स्वर्ग और दूसरी आँख से नरक देख रहा था। उसे भयावह लगा। उसने प्रार्थना की कि हे खुदा, माफ़ कर दो। खुदा ने कहा कि माफ़ करता हूँ, पर उरियाह का क़तल माफ़ नहीं कर सकता हूँ। यदि उरियाह माफ़ करे तो माफ़ कर दूँगा। वो उरियाह की कब्र के पास गया, आवाज़ दी। तीसरी

आवाज़ दी तो वहाँ से आवाज़ आई, हाँ मालिक ? राजा ने कहा कि मैं दाउद हूँ, तुम्हारा मालिक । बोला—हाँ, मैं देख रहा हूँ । दाउद ने कहा कि मैं माफ़ी माँगने आया हूँ । बोला—कैसी माफ़ी ? कहा कि मेरे कारण तेरी जान गयी । कहा कि कोई बात नहीं; मैं अपने काम से गया था; माफ़ कर दिया । वो वापिस आया, कहा कि हे खुदा, मुझे उरियाह ने माफ़ कर दिया है । खुदा ने कहा कि यह माफ़ी नहीं है । इसमें भी चालाकी है । जाओ, उरियाह को कहो कि तुम्हारी पत्नी को प्राप्त करने के लिए मैंने तुम्हें स्वयं मरवाने का षड्यंत्र रचा था । वो पुनः उरियाह की कब्र के पास आया; आवाज़ दी । तीसरी आवाज़ में वहाँ से आवाज़ आई कि क्या बात है मालिक ? कहा कि माफ़ी माँगने आया हूँ । उरियाह ने कहा कि मैंने तो आपको माफ़ कर दिया है । दाउद ने इस बार सारी बात बताई, कहा कि तेरी स्त्री को प्राप्त करने के लिए ही मैंने षड्यंत्र रचा था । किसी विरोधी ने तुम्हें नहीं मारा है । कब्र से आवाज़ आई—क्रयामत तक तुझे माफ़ नहीं कर सकता हूँ ।

तो कभी मैं भी अचरज करता हूँ कि कैसी माफ़ी है ! आदमी में चारसौबीसी है, हेराफेरी है । ये सब काम शातिर दिमाग़ करता है । ये सब चीज़ें व्यक्तित्व से संबंध रखती हैं । तभी तो कह रहे हैं—

दिल का हुजरा साफ़ कर, जाना के आने के लिए ।

ध्यान औरों को उठा, उसको बिठाने के लिए ॥

एक दिल लाखों तमन्ना, उसपे भी ज्यादा हवस ।

फिर ठिकाना है कहाँ, उसको बिठाने के लिए ॥

कभी तो लोग बड़ी चालाकी से मेरे पास आते हैं । मैं कहता हूँ कि ख़ालिस होकर आना; चालाकी लेकर नहीं आना ।

गुरु लोभी शिष्य लालची, दोनों खेले दाँव ।

कहैं कबीर कैसे तरें, चढ़ पत्थर की नाव ॥

एक बंदा मेरे पास आया, कहा कि मेरी स्त्री ने मुझपर एफ. आई.

आर. दर्ज करवा दी है; पुलिस मुझे ढूँढ़ रही है। आप फ़ोन पर उसे समझा दो। मैंने कहा कि अपनी स्त्री का नम्बर दो। मैंने नम्बर मिलाया तो इतने में वो गोल हो गया। देखो, वो छल करने आ रहा था। पति-पत्नी को अपना संरक्षक मानती है। वो पति को जेल में क्यों बंद करना चाहेगी! जब मैंने उससे पूछा तो उसने कहा कि बहुत मारता है। दूसरी बार जब वो मिला तो मैंने कहा कि नम्बर दो। उसने जो नम्बर दिया, बी.एस.एन.एल का बाप भी नहीं मिला सकता था। मैंने पहले ही पूछा था कि मारते तो नहीं हो? कहा कि नहीं।

मैं कहता भी हूँ कि पति मारता है तो सीधा एफ.आई.आर. करवाओ या वूमेन सेल में जाओ।

तो यह क्या है? यह अपने वजूद से धोखा कर रहे हैं। यह तिकड़मबाजी नहीं चाहिए। यदि कोई कर रहा है तो उलझन में समझना। हृदय दर्पन की तरह हो। साहिब तो कह रहे हैं—

अन्दर सफा बाहर सफा। फिर साहिब काहे खफा।।

मैं कहना चाहता हूँ कि पूरे कर्मों में, अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित में आत्मा की भागीदारी है। यह शामिल है? नहीं तो किस बात की सज़ा है! कहीं-न-कहीं उसकी सहभागिता है। इस कर्म के विभाग में दंड क्यों मिल रहा है? कहाँ बँधी है? क्या काम कर रही है? हम उस बिंदू की तरफ चलते हैं। इसे फजूल सज़ा है या जायज है? क्यों शामिल हो रही है? हमारी आत्मा द्रष्टा है। केवल देखने वाली है या कर्ता भी है? हमारी आत्मा केवल द्रष्टा नहीं है, कर्ता भी है। तभी तो सज़ा मिल रही है। आपकी आत्मा शामिल हो रही है। सवाल उठा कि क्यों शामिल हो रही है? हर कर्म में शामिल हो रही है। एक आदमी कत्ल करके आया तो आत्मा निर्दोष है क्या? नहीं है। यदि निर्दोष है तो सज़ा किस बात की मिल रही है? पूरा अँधेरापन चल रहा है क्या? नहीं, इसकी पूरी सहभागिता है। सब कर्मों में शामिल है। क्या कारण है? किस रीति से अपराधी है?

बहु जल गयी तो सास को भी जेल में डाल देते हैं। क्यों नहीं प्रॉब्लम समझी! सहयोग क्यों न दिया! पंखे पर लटकी तो बेकग्राउण्ड सास ने ही तैयार किया था। आत्मा को भी जेल में ठोंका गया है। ज़रूर आत्मा सहभागी है। पर फजूल में ही है। तभी कहा है—

जीव पड़ा बहु लूट में, नहीं कुछ लेन न देन॥

किसी भी कर्म से इसे कुछ लेना-देना नहीं है। जो भी कर्म कर रहे हैं, कुछ भी संबंध नहीं है। पर हर कर्म में, गंदे-गंदे कर्मों में भी आत्मा शामिल हो रही है।

बहुत दिन से शरीर में रह-रहकर शरीर और मन ही अपने को समझ रही है, इसलिए निर्मल करना ज़रूरी है।

हमारी आत्मा मन से मैली हो गयी।

बंधौ कीर मरकट की नाई॥

कह रहे हैं—

जड़ चेतन है ग्रंथि पड़ गयी। यद्यपि मिथ्या छूटत कठिनई॥

यह आत्मा पूरी बँधी पड़ी है। पर किसी को समझ नहीं आ रहा है कि कहाँ बाँध रखा है। कह रहे हैं—

यद्यपि मिथ्या छूटत कठिनई॥

आत्मा बंधन में है नहीं, पर बँधी है। गठान है नहीं, पर छूट नहीं रही है। इस स्थिति को बड़े सुन्दर अलंकार से कहा—

आपा को आपा ही बंधौ॥

खुद ही अपने को बाँध दिया है। पूरा झमेला मन का है। आत्मा ने अपना पूरा ध्यान इसमें फँसा दिया है। अपनी उर्जा से संचालित कर रही है। इसी की उर्जा से सब संचालित हो रहा है। इसलिए सज़ा है। तभी समझा रहे हैं—

मन जाता है जाने दे, गहके राख शरीर।

उतरा पड़ा कमान से, क्या कर सकता तीर॥

साहिब की वाणी चेतावनी है। वो किस्से-कहानियाँ नहीं हैं। रास्ते पर जा रहे हैं; ब्रेकर आता है; उसके पहले चेतावनी वाला बोर्ड

आता है कि गति को संभालो। साहिब ने पूरी दुनिया को चेतवानी वाले शब्द दिये। उनकी वाणी चेताने वाली है, खबरदार करती है।

तो आत्मा की सहभागिता है। आत्मा की उर्जा नहीं आती तो कुछ नहीं हो सकता था। दिमाग़ खुद नहीं कर सकता था। वो सर्वेसर्वा नहीं है। कल्पनाएँ मन की हैं। हमारी आत्मा हमारा ध्यान है। यही घूम रहा है। ध्यान में बैठो तो उन्हीं चीज़ों में घूमता है।

मन माया में बँध रह्यो, बिसरयो नाम गोविंद।

कह नानक रे सुन मना, अंत पड़ो जम फंद॥

ध्यान में बैठते हैं तो सोचते हैं कि फलाने ने गाली दी। वहीं रम जाते हैं। बाद में होश आता है। फिर एकाग्र करने की कोशिश करते हैं। फिर कहीं दूसरी ओर उलझ जाते हैं। कहीं-न-कहीं उलझाया जा रहा है यह ध्यान। जो बाँधे हुए है, निकलने नहीं दे रहा है।

मन ही स्वरूपी देव निरंजन, तुमको राख भरमाई।

हे हंसा तू अमर लोक का, पड़ा काल बस आई॥

दुनिया के लोग कह रहे हैं कि मन को नहीं तड़पाना है। हम कह रहे हैं—

जो मन पर असवार है, ऐसा बिरला कोय॥

साहिब कह रहे हैं—

मन के मते न चल तू भाई। पलक पलक मन और॥

तो आत्मा बँधी है। कभी लड़की की पढ़ाई की चिंता, कभी विवाह की चिंता, कभी स्त्री की चिंता, कभी मकान बनाने की चिंता। आत्मा को इन्हीं में उलझा दिया है मन ने। सब प्रिय लग रहे हैं। बंदा मुक्ति तो चाहता है, पर इनसे निकलना नहीं चाह रहा है।

ब्रेन भी स्वयंभू नहीं है। यह वजीर है। आर्डर मन के हैं।

सुषुम्न मध्ये बसे निरंजन, मूँधा दसवाँ द्वारा।

उसके ऊपर मकर तार है, चढ़ो सम्हार सम्हारा॥

वहाँ अंधकार है। वहाँ आकाश तत्व है। वहीं मन है। वो अंधकार में रहता है। मन वहाँ से तरंगों के रूप में संदेश देता है। वो राजा है।

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहि न चीह्नत पंडित काजी॥

मन संदेश देता है और फिर ब्रेन उसे पूरा करने में जुट जाता है।

श्रुति पुराण बहु कहें समुझाई। छूटे न अधिक अधिक अरुझाई॥

हम बड़ी शुद्ध भक्ति की बात कर रहे हैं। तभी तो आडंबर वाले तोप से उड़ाना चाहते हैं। वो तो एट्म बम से मिटाना चाहते हैं।

चारों ओर जब मार मार जो धाय। तब लालों के लाल कहाय॥

एक मौलवी आया। बूढ़ा था। कहा कि आपको मुर्शिद बनाना चाहता हूँ। कहा कि मैं आपको देख रहा हूँ; आप पाक-साफ़ रूह लगे। मैं अपने घर के 80 लोगों को भी लाऊँगा। मैंने कहा कि मैं तैयार बैठा हूँ; तू पूछ ले सबसे। जब नाम लिया तो पूरे काम छोड़ने होंगे। सारी शर्तें मंजूर करनी होंगी। तुम तैयार होकर आना। अपन तो तैयार बैठे हैं। फिर बकरी-ईद में बकरा नहीं काटना है। दाढ़ी रखे हो तो रखे रखो, कोई मतलब नहीं है मुझे। किसी भी धर्म वाले हो, उससे कोई मतलब नहीं है। केवल नियमों का पालन करना है। किसी से धोखाधड़ी नहीं करनी है, सत्य बोलना है, माँस नहीं खाना है। मैं तो शुद्ध बना रहा हूँ। सात नियम बता रहा हूँ। पालन करना।

वेश्या आयेगी तो उसे भी नाम दूँगा। पर सात नियम का पालन करना होगा। सभी बुराइयाँ छूट जायेंगी। आपको खालिस बना दूँगा। अगर मुसलमान हो तो पीवर मुसलमान बना देंगे। अगर हिंदू हो तो पीवर हिंदू बन जाओगे। अगर सिख हो तो पीवर सिख बना देंगे। अब करेला है, कोई भी खायेगा, कड़वा ही लगेगा। अपनी चीज़ जाति-बिरादरी वाली नहीं है।

तो आत्मा बँधी है। सुषुम्ना में बैठ मन ब्रेन को तरंगें भेजता है। ब्रेन नहीं समझ पा रहा है। अंतःकरण में आत्मा है। वो भी नहीं समझ पा रही है। पूरा खेल मन का है। तभी तो कहा—

तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी मन॥

आज्ञाचक्र में आत्मा है। स्वांस द्वारा मिलकर पूरी उर्जा नाड़ियों में आ रही है; अंतःकरण में मिली हुई है। इसने अपने को ब्रेन भी माना,

पूरा शरीर माना, क्योंकि पवन के साथ मिलकर पूरी देही में मिल गयी है।

गुरु इसी आत्मतत्त्व को एकाग्र कर देता है। फिर खेला समझ आने लगता है। मन-माया समझ आने लगते हैं। मन-माया का खेल दिखने लगता है।

जब मैं था तो गुरु नहीं, अब गुरु हैं मैं नाहिं।

प्रेम गलि अति सांकरी, ता में दो न समाहिं ॥

इसलिए ध्यान को संभालना, ध्यान शरीर के किसी हिस्से में नहीं बोल रहे। इस तरह हम शरीर के गहन सेल्स को जगाने की बात नहीं कर रहे हैं। हम सुरति को जगाने की बात कर रहे हैं। दुनिया में ध्यान की पाँच पद्धतियाँ हैं। हम कह रहे हैं कि ये सब दोषयुक्त हैं।

थोड़े समय बाद मोबाइल को पूरी तरह बंद कर दिया जायेगा। मुझे कभी टेंशन नहीं हुआ था। एक दिन मुझे सिर में दर्द हुआ। थोड़ी देर में मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि यह मोबाइल के कारण से है। तब मोबाइल नया-नया चला था। तब तब वैज्ञानिकों ने इसके बारे में कुछ नहीं कहा था। मोबाइल के बारे में मैंने पहले कहा कि इसके बड़े साइड इफेक्ट हैं। फिर एक चीज़ और मैंने कही कि गिद्धें कम हो गयीं और छोटी चिड़िया कम हो गयी। वैज्ञानिकों ने नहीं बोला था, जीव वैज्ञानिकों ने तब नहीं कहा था। ये गिद्धें अधिक नहीं हैं। इनके जन्म लेने का तरीका भी कठिन है। ये पेड़ के अन्दर घोंसला नहीं बना सकती हैं, क्योंकि बड़े-बड़े पंख हैं। इसलिए ये अपना घोंसला पेड़ की चोटी पर बनाती हैं। कुछ साल पहले बड़ा कोहरा गिरा। इससे गिद्धों के अण्डे खराब हो गये। इससे पीढ़ी नहीं बढ़ी। इसलिए कम हो गयीं। ये थी ही कम।

गिद्ध 80 योजन तक देखती है। कभी आप ऊँचाई पर देखते हैं कि गिद्धें घूमती हैं। जहाज़ों से गिद्धें ही टकराती हैं। आगरा में अगर कोई जानवर मरा होगा तो मुम्बई से गिद्ध देख लेती है। सोचें कि क्या नज़र है उसकी! फिर वो सबको ख़बर करती है और सब मिलकर वहाँ जाती हैं और नोच-नोचकर खा जाती हैं। इसलिए

रामायण में गिद्धराज ने ही देखकर बताया था कि समुद्र पार रावण की अशोकवाटिका में सीता जी हैं।

आपके घर में कुछ दाने गिर जाते हैं। आप नहीं देख पाते हैं। चिड़िया आकर चुन लेती है। आप नहीं समझ पाते हैं कि यह क्या खा रहे है।

यह छोटी चिड़िया भी कम हो गयी। पहले ये झुण्ड बनाकर घूमती थीं। यहाँ तक मोबाइल की किरणें जा रही हैं, उस सीमा में अब ये नहीं आ रही हैं। यह मोबाइल प्रकृति के लिए भी हानिकारक है। आगे चलकर इंसान इसे दूर फेंकेगा। पर अभी इसकी ज़रूरत महसूस हो रही है।

...तो सुरति कमाल की चीज़ है। इसमें सबकुछ देखने की ताक़त है। यह सुरति ही हमारी आत्मा है। यह सुरति शरीर में 7 भागों में बँट गयी है। एक ही सुरति है। जैसे एक ही शरीर के गर्दन, घुटने, बाजू, कंधे आदि 9 खंड हैं, पर शरीर एक ही है। ऐसे ही एक ही सुरति शरीर में आनन्द सुरति, मूल सुरति, चमक सुरति आदि 7 हिस्सों में बँट गयी है। इन्हीं से सब काम हो रहे हैं। इसी को सब जगहों से निकालकर एकाग्र करना है। इसमें बड़ी ताक़त है। यह ताक़त शरीर की ज़रूरतों के लिए इस्तेमाल हो रही है। यह खजाना सबके पास है।

शरीर की ज़रूरत को सबने समझा, क्योंकि इसे ऐंनर्जि चाहिए। इसलिए शरीर की तरफ ही सबका ध्यान है। सुरति को ऐंनर्जि की ज़रूरत नहीं, इसलिए किसी ने उस तरफ ध्यान नहीं दिया। साहिब ने ध्यान पर कहा—

**सुरति संभाले काज है, तू मत भरम भुलाय।
मन सय्याद मनसा लहर में, बहत कतहूँ न जाय॥**



सद्गुरु मेरे सत्यलोक पठाई

आत्मा के सत्यपिता सद्गुरु साहिब ही हैं और सत्यधर्म गुरुभाई है। आत्मा की लज्जा और सहष्णुता सद्गुरु शरण में ही है और शीलता व सहजता सत्संग में है। आत्मा का आनन्द और संतोष नाम के सुमिरन में ही है। सद्गुरु दर्शन में ही क्षमा भाव समाया है। आत्मा का ज्ञान व विवेक सद्गुरु साहिब की वाणी-शब्द ही है जिससे लोभ-मोह-अहंकार नष्ट हो जाते हैं। सद्गुरु साहिब के शब्द से ही सुरति चैतन होकर आशा-तृष्णा और बुद्धि वश में आ जाते हैं। सद्गुरु साहिब ने वो मूल अकह नाम दिया है जिससे चोर मन के सब छल समझ में आने लगे हैं। हे जीवात्मा! तूने बड़े भाग्य से यह मनुष्य तन पाया कि सद्गुरु से सत्यधर्म जान लिया। सद्गुरु साहिब ने सारनाम से हँस आत्मा को मोक्ष देकर निज अमरधाम पहुँच दिया है।

मेरा सद्गुरु सत्य पिता है, धर्म मेरा गुरु भाई।
लज्जा मेरी गुरुशरण है, शीलता सत्संग समाई॥
सन्तोष सदा नाम सुमिरन है, क्षमा गुरु दर्शन पाई।
ज्ञान विवेक सद्गुरु वाणी है, लोभ मोह अहंकार नसाई॥
सद्गुरु शब्द सुरत जागी है, आशा तृष्णा बुद्धि वशआई।
सत्यनाम सद्गुरु दीना है, मनचोर समझ अब आई॥
बड़े भाग यह तन पाया है, सत्यधर्म सद्गुरु चिन्हाई।
सार शब्द दे सद्गुरु मेरे, मोक्षधाम सतलोक पठाई॥

—एक सेवक, भोपाल



घट ही माहिं सो मूर

जेहि खोजत कल्पो भये, घट ही माहिं सो मूर॥

यह मनुष्य परमात्म-तत्त्व की खोज बहुत समय से कर रहा है। कल्पान्तर हो गये हैं। करोड़ों युग हो गये हैं। यानी बहुत दिन हो गये हैं। यह खोज आज से नहीं है। आप देखें कि कुछ छोटे-छोटे बच्चे बड़े बुद्धिमान होते हैं, कुछ दयालु होते हैं, कुछ उदण्ड होते हैं। सवाल उठा कि उन्हें उदंडता किसने सिखाई? एक सात साल का बच्चा था। उसकी माता ने कहा कि यह बड़ा ही जिद्दी है। 7 साल का बच्चा जिद्द कर रहा था। यह था पूर्व संस्कार। जितने भी जन्म आपके हुए हैं, सबका रिकार्ड है।

जन्म एक नहीं जन्म अनेका। छूटे नहीं भक्ति को लेखा॥

पूर्व संस्कार साथ में रहते हैं।

कर्म सानी बुद्धि उत्पानी॥

चराचर जगत के प्राणियों में यह बुद्धि मिलती है। एक भैंस है। अपने बैठने की जगह बड़ी साफ़ रखती है। इतना इंसान भी नहीं रखेगा। कभी गोबर अपनी जगह पर नहीं करती है। अपनी जगह कभी गंदगी नहीं होने देती है। दूसरी भैंस की साइड में करती है। अब भैंस को सफ़ाई किसने सिखाई? यह है संस्कार।

इस दुनिया में जो कुछ बाहर देख रहे हैं, अन्दर में है। सब इसी से निकला। टेपरिकार्डर ब्रेन से ही तो निकला। कम्प्यूटर भी इसी ब्रेन से निकला। पहले इसी में ऑइडिया आया। इंसान के शरीर में बहुत रहस्य भरे पड़े हैं।

कबीर काया अथाह है, कोई बिरला जाने भेद॥

जो महसूस कर रहे हैं कि फलाना हूँ, इसके पीछे तत्व छिपा है..... बहुत सूक्ष्म। वो आत्मा है। इसलिए आत्मा मन-माया की सीमा में बँधी हुई है। साहिब ने कहा—

मनहिं स्वरूपी देव निरंजन, तोहि रहा भरमाई।
हे हंसा तू अमर लोक का, पड़ा काल बस आई॥

तो यह व्यक्तित्व सहायक नहीं है। साहिब कह रहे हैं—

यह काया है समरथ केरी। काया की गति काहू न हेरी॥

बड़े-बड़े धुरंधर इस काया का रहस्य नहीं जान पा रहे हैं। सब कुछ इसी से निकला।

इस घट भीतर सात समुन्दर, या ही में नदिया नारा॥
या घट भीतर सूरज चंदा, या ही में नौ-लख तारा॥
या घट भीतर सोना-चाँदी, या ही में लगत बजारा॥
या घट भीतर हीरा मोती, या ही में परखन हारा॥
या घट भीतर काशी मथुरा, या ही में गढ़ गिरनारा॥
या घट भीतर देवी देवा, या ही में ठाकुर द्वारा॥
या घट भीतर ब्रह्मा विष्णु, शिव सनकादि अपारा॥...
या घट भीतर रिद्धि सिद्धि के, भरे अटल भंडारा॥
या घट भीतर तीन लोक है, या ही में सिरजनहारा॥

इस इतने विशाल शरीर का राजा कौन है? साहिब कह रहे हैं—

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहिं न चीह्नत पंडित काजी॥

इस तीन लोक में मन विराजमान है। हर आदमी सोच रहा है कि मैं सोच रहा हूँ। यह सोच भी तो मन है। यह आप क्या हैं, यह भी तो मन है। मैंने पीछे भी कहा कि आदमी सोचता है, मेरा दिमाग सर्वोपरि है। यह नहीं है सर्वोपरि। ब्रेन के पास तरंगें पहुँचती हैं। ये तरंगें ऊपर से आती हैं।

मन तरंग में जगत भुलाना ।।

ये तरंगें सूक्ष्म रूप से ब्रेन के पास पहुँचती हैं। कभी इच्छा होती है कि फलानी जगह पिकनिक के लिए जाना है। यह इच्छा क्यों हुई? आपने गंभीरता से चिंतन नहीं किया। सच यह है कि यह इच्छा आपकी नहीं है। यह तो थोपी गयी है। आपके दिमाग के ऊपर यह थोपी गयी है। यह इतनी बारीकी से थोपी गयी है कि आप रहस्य नहीं जानते हैं। ये अत्यंत सूक्ष्म तरंगें हैं। इन अतिसूक्ष्म तरंगों में इच्छा आपके पास आई। पर आपने मान लिया है कि यह मेरी इच्छा है। सच्चाई यह थी कि आपकी इच्छा नहीं थी। आप लाजवाब चीज़ हैं। आप शुद्ध आत्मा हैं। इसमें इच्छा नहीं है। इसमें चाह नहीं है। आत्मा संकल्प-विकल्प से परे है। समस्या क्या है? समस्या यह है कि आत्मा बँधी है। क्या हम बंधन देख सकते हैं? बिलकुल। कैसी है आत्मा? अजन्मा, नित्य, सहज, इन्द्रियातीत, व्योमातीत, पंच भौतिक तत्वों से परे, न्यूनाधिक नहीं होती, जरा-मरण से दूर, अनश्वर, अखंडित, निरालंब, आनन्दस्वरूप, सहज। वाह, ऐसी संज्ञा इसकी है। आदमी क्यों चिंतन नहीं कर रहा है!

आत्मा कभी-कभी अपने को मन समझ रही है, कभी शरीर समझ रही है। जब भी अपने स्वरूप में जानने की कोशिश करती है, इसे बताया जाता है कि तू शरीर है। जैसे स्त्री को पुरुष देखने के अंदाज से जताता है कि तू स्त्री है। तो वो शरमा जाती है।

तो इस तरह मन आभास कराता रहता है कि तुम शरीर हो, तुम ही अन्तःकरण हो, तुम ही मन हो, तुम ही सोच रही हो, तुम ही विषय-विकार कर रही हो। आत्मा ने सचमुच स्वीकार कर लिया? ऐसे भ्रमित किया गया। आखिर आत्म-तत्त्व कैसा है? उलझा हुआ है। बड़े कौतुक की बात है। परमात्मा का अंश आत्मदेव छल किये जा रहा है। तभी भी वो नहीं रोक रहा है। यह आड़े-टेंढ़े काम किये जा रहा है। यानी परमात्मा हमारे अन्दर कमजोर है। वो प्रकाशमय है, पर अन्दर में तो अँधकार ही लग रहा है।

जब वो घट-2 निवासी है तो जीव का अंतःकरण प्रकाशित क्यों नहीं है ? प्रभु या तो असहाय है। वो तो सर्वशक्तिमान कहलाता है। घट-2 वासी भी कहलाता है। इसके बाद भी आदमी दूसरे का मर्डर करने जाता है। यानी वो घट-2 वासी मना नहीं कर रहा है। ये सवाल दुनिया के लोगों के अन्दर उठते हैं। कभी शिकायत भी करते हैं कि मेरे छोटे बच्चे हैं; तूने मेरी स्त्री को मारकर इनसे इनकी माँ छीन ली; तुम कसाई हो; तुमने अच्छा नहीं किया। यानी शिकायत की जाती है। इतना सर्वशक्तिमान अन्दर बैठा है और आदमी चोरी कर रहा है। वो रोक नहीं रहा है। रेप करने जा रहा है। वो घट-घट वासी बोल ही नहीं रहा है। मसला क्या है ? उस घट-2 वासी की देख-रेख में सब काम हो रहा है।

कोई किसी को तकलीफ़ दे रहा है। देखने वाला सोचता है कि मैं इसकी मदद करूँ। पर जो घट-2 वासी है, वो मदद नहीं कर रहा है। क्यों वो मदद नहीं कर रहा है ? उसे तो करुणामय भी कहते हैं। वो क्यों नहीं दिखा रहा है करुणा ? वो आनन्दमय कैसा है, जिसके रहते जीव दुखी है ! यह रहस्य क्या है ?

सब घट मेरा साईंया, खाली घट न कोय।

बलिहारी वा घट की, जा घट परगट होय।।

वो अभी क्रियान्वित नहीं हो रहा है। दूध में घी है। घी से हम काफ़ी काम कर रहे हैं। दीया जलाते हैं, खाते हैं, पूड़ी बनाते हैं। दूध से पूड़ी निकालें तो नहीं हो पायेगा। घी से बत्ती जलाते हैं। दूध से जलाने की सोचें तो नहीं जलेगी। घी को प्रगट करना पड़ेगा। घट-घट वासी प्रगट नहीं होगा तो मदद नहीं करेगा। जब भी प्रगट करना चाहते हैं तो कोई विरोधी ताक़त नहीं होने देती है। ईश्वरीय ताक़त अन्दर बैठी है।

ज्यों तिल माहिं तेल है, ज्यों चकमक में आगि।

तेरा साईं तुझमें है, जाग सके तो जागि।।

वाह, मेंहदी में लालिमा है, पर हाथों की रगड़ बिना लालिमा

अपना काम नहीं कर पाती है। वो शैतानी ताक़त उस ताक़त को प्रगट नहीं होने दे रही है। उसे प्रगट करने के लिए अदद गुरु की ज़रूरत है। गुरु उसे प्रगट कर उर्जा का संचार करता है। तभी वो घट-घट वासी अन्दर में एक्टिव हो पाता है। मैंने एक सिम ली। एक्टिवेट नहीं हुई। मैंने एक से पूछा कि यह चल नहीं रही है, क्या बात है? वो बोला कि इसे एक्टिवेट करवाना पड़ता है।

जमीन के अन्दर सभी तत्व मौजूद हैं, पर युक्ति से निकालते हैं। खट्टाई निकालनी है तो नीबू का एक बीज डाल देते हैं। वो खट्टाई खींच लेता है। मीठा निकालना है तो गन्ना लगा देते हैं। वो जमीन से मिठास निकाल लेता है।

तो गुरु की ज़रूरत होगी। अन्यथा एक्टिवेट नहीं होगा, आप यकीन मानना। उसे एक पूर्ण गुरु उत्पन्न करता है। जिस दिन से उस तत्व को आपमें एक्टिव किया है, वो पक्का काम कर रहा है। विरोधी ताक़तें भी शरीर में हैं, पर उनका जोर नहीं चल रहा है। दुनिया से आपको अलग कर दिया है। आपके अन्दर प्रगट कर दिया। वो सही में काम कर रहा है। पर ब्रेन से, चित्त से समझ नहीं आयेगा। बुद्धि उसे नहीं समझ पायेगी। वो काम करता है। वो जनाता है। आप जान जाते हैं।

मैंने भोपाल में पूछा कि जिन्हें लगता है कि नाम के बाद एक ईश्वरीय ताक़त साथ में काम कर रही है, वो हाथ खड़ा करो। बड़े लोगों ने किया। एक डायरेक्टर साहब ने भी किया। वो स्वास्थ्य विभाग में डायरेक्टर के पद पर हैं। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, दादरहवेली और अण्डेमान-निकोबार के डायरेक्टर थे। मैंने उनसे पूछा कि क्या सच में लगता है? कहा—पक्का। कहा कि मैं लड़की के रिश्ते के लिए ग्वालियर गया था। वहाँ से वापिस आ रहा था। ड्राइवर ने रास्ते में कहा कि मुझे नींद आ रही है, उतर जाओ। मैंने ड्राइवर को पीछे किया और खुद गाड़ी चलाने लगा। एक पुल के ऊपर मुझे भी झपकी लगी। दूसरी ओर से ट्रक

आ रही थी। मेरी गाड़ी की बड़ी स्पीड थी। अचानक मेरी गाड़ी की ब्रेक लगी और एक्सीडेंट होते-होते बच गया। वो एक्सीडेंट होना-ही-होना था। मैंने ठीक-ठीक जाना कि यह मेरी चेष्टा नहीं थी। बस, मुझे यूँ लगा कि मेरे अन्दर से एक ताक़त निकली और वो यह काम करके चली गयी और मुझे जताया भी नहीं। पर मैं जान गया। मैंने उस ताक़त को अनुभव कर लिया।

तो कहना चाहता हूँ कि आपके साथ वो ताक़त काम करेगी। प्रगट कर दी है। शर्त यह है कि जुड़े रहना। यह दादागिरी है क्या? अगर साहिब की भक्ति में नहीं जुड़े हो तो कहीं-न-कहीं निरंजन की फराटी में हो। अगर किसी को बुखार हुआ है तो ठीक हुआ है। यह कॉम्प्यूटराइज़्ड उसकी रज़ा है। बिलकुल ठीक हुआ है। क्योंकि—

जीव अधम और नीच है, इसको मत पतियाय॥

गुरु से कपट करना ही नहीं है। सावधान रहना है।

गुरु से कपट करे चतुराई। सो नर भव भटके आई॥

भूलकर भी नहीं करना है। बहुत बड़ा दोष है।

गुरु से कपट साधु की चोरी। या तो अँधा या तो कौढ़ी॥

साफ़-साफ़ बोलना है। आप सफ़ा हो जाओ, नेचुरल हो जाओ।

स्वच्छ हृदय में ही परमात्म-प्रकाश खिलता है।

जब तलक विषयों से यह दिल, दूर हो जाता नहीं।

तब तलक साधक विचारा, चैन सुख पाता नहीं।

कर नहीं सकता है जो, एकाग्र अपनी वृत्तियाँ।

उसको सपने में भी परमात्म, नज़र आता नहीं॥

जो सात नियम बताए, वो आन्तरिक चुनरिया को साफ़ करने का फार्मूला है। रँगरेज गंदे कपड़े को रंग नहीं लगाता है।

काली कम्बली न रँगी जाय॥

क्योंकि वो गंदे कपड़े को लगायेगा तो बेकार जायेगा। मैल धोने

के बाद छूटेगी। जहाँ से छूटेगी, चितकबरा हो जायेगा। दर्जी भी मैला कपड़ा नहीं सीयेगा। ट्रेलर मास्टर गंदे कपड़े को नहीं सीयेगा। क्यों? सूई टूटेगी। हमने भी कहा कि 3 महीने पहले शराब, माँस आदि का त्याग करके फिर नाम लेने आओ। आगे भी हिदायत देता हूँ कि अब नहीं करना कुछ भी गलत काम। क्योंकि हृदय को शुद्ध रखना है। वहीं पर साहिब का प्रतिबिंब आयेगा।

**काम क्रोध मद लोभ की, जब लग घट में खानि।
क्या पंडित क्या मूरखा, दोनों एक समानि॥**

ऐसा नहीं है कि आपमें काम नहीं है, आपमें क्रोध नहीं है। है, पर कंट्रोल में है। आपका सब कंट्रोल में है। ये खत्म हो तो जीवन खत्म है। मैं जीरो बिंदू पर भी इन्हें लाया हूँ। पर वहाँ जीवन की समाप्ति है। तो आप अपने को होश में पा रहे होंगे। कोई ग़ैरनामी यदि आपका बाप भी है, बेकार लगता होगा। यह पूरा सच है। सत्संगी मिलता होगा तो लगता होगा कि कोई घर का आदमी मिल गया।

तो यह क्या है? आपका आत्मतत्त्व चेतन कर दिया। आपने अनुभव किया होगा। जब आपसे कोई काम नहीं बनता है तो साहिब वो काम करके चला जाता है। आपका मन, आपकी बुद्धि आदि यह रहस्य नहीं समझ पा रहे हैं। पर अन्दर के तत्त्व ने समझ लिया है कि एक ताक़त काम कर रही है। आप समझ रहे हैं कि जब आप मुसीबत में थे तो एक ताक़त आई और अपना काम करके चली गयी।



**तंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरमो कोय।
सत्य नाम जाने बिना, कागा हंस न होय॥**

जो कुछ है सो सुरति है

तीन लोक में मनहिं विराजी । ताहि न चीह्नत पंडित काजी ॥

वाह भाई, राजा है क्या ? जैसे भोपाल में केंद्रीय सरकार की हुकूमत चल रही थी । मेरे वहाँ 4 प्लॉट थे । मैंने नक्शा पास करवाना था । रिजिस्टर्ड बगैरह भी हो गयी थी । पर वो 10-10 हजार रुपये एक-एक प्लॉट के अलग से माँगने लगे । यह केंद्रीय सरकार को जाता है । पर जम्मू-कश्मीर में ऐसा नहीं है । मैंने बाकायदा रसीद ली । उस महकमें में मेरे लोग हैं । मैंने उनसे पूछा कि 40 हजार रुपये ऊपर से क्यों लिए ? तो कहा कि 6 मरले से ऊपर ज़मीन की कन्स्ट्रक्शन में 10 हजार रुपये केंद्रीय सरकार के खाते में जमा होंगे ।

अभी राज्य सरकार बाद में है । केंद्रीय सरकार की हुकूमत है । इस दुनिया में हुकूमत मन की है । क्या देख सकते हैं ? हाँ । कैसे ? दुनिया का हरेक इंसान सोचता है कि हमारा दिमाग काम कर रहा है और हम उसके अनुरूप चल रहे हैं । सही में ऐसा नहीं है ।

मैंने पीछे भी कहा कि वैज्ञानिक कह रहे हैं कि शरीर का पूरा संचालन दिमाग कर रहा है । हम यहाँ पर अलग हैं । हम सब सोचते हैं कि हमारे पूरे शरीर को दिमाग चला रहा है । नहीं, यह एक वज़ीर है । राजा तो मन है ।

मन तरंग में जगत भुलाना ॥

वहाँ से जो इच्छा पैदा करेगा, उसी ओर आप जाते हैं । मन की तरंग सुषुम्ना नाड़ी द्वारा हमारे दिमाग में पहुँची । अगर उसमें थोड़ा-सा भी

इंजेक्शन गलत लगा तो बड़ी गड़बड़ हो जायेगी।

सुषुम्ना नाड़ी में चेतना है। यह मेरुदण्ड से संबंध रखती है। इसी के द्वारा टाँग हिलेगी। यही ऊपर सिर के पिछले मध्य भाग से होती हुई मस्तिष्क की तरफ जाती है। मैंने कहा था कि ध्यान करते समय कमर सीधी रखना।

पूरे शरीर को यही चेतन कर रही है। हाथ-पैर सबको सुषुम्ना चेतन करती है। अगर इसमें इंजेक्शन गलत लगेगा तो कोई अंग भी खराब हो सकता है।

मैं जानता हूँ। मैं राय देता हूँ। विरोधाभास की बात नहीं करता हूँ। मैं अपने विरोधी ज्यादा तादाद में नहीं बढ़ाना चाहता हूँ। पर अनचाहे मेरे विरोधी बढ़ जाते हैं। मैं आगाह कर रहा हूँ कि डॉ० लोगों से सावधान रहना। मेरे विरोध का कारण है। इसके पीछे वज्रन है। सयाने मेरा जमकर विरोध करते हैं। क्यों? क्योंकि मैंने आगाह किया कि इनसे बचना। ये तुम्हारी भक्ति का नाश कर देंगे। डॉ० का काम सयानों से कम नहीं है। मैं जिस भी चीज़ को समझाता हूँ, समझाकर छोड़ता हूँ।

आप सावधान रहना डॉ० लोगों से। वो तो आप्रेशन के लिए कहेंगे। ऐसा नहीं है कि ईमानदार डॉ० नहीं हैं; ऐसा नहीं है कि ईमानदार इंजीनियर नहीं हैं। बहुत कम हैं।

बच्चा जब भी जन्म लेता है, खुद ही लेता है। आप मत कहना कि माँ बच्चे को जन्म देती है। नहीं, बच्चा खुद ही बाहर आता है। मदर-डे के दिन भी बालक को जन्म देते दिखाते हैं। प्रसवसूल भयानक होता है। नारी के शरीर में एक तरफ दो नाड़ियाँ होती हैं। उनके बीच से बच्चे को आना है। वो भयानक दृश्य होता है। माता के मल-मूत्र दोनों बाहर आते हैं। प्रसव पीड़ा हुई, पर गर्भद्वार दो अंगुल खुला तो डॉ० जान जाता है कि अभी नार्मल डिलीवरी नहीं हो सकती है। तब आप्रेशन करता है। नार्मल डिलीवरी के लिए 4 अंगुल खुलना चाहिए। कभी डॉ० जानता है कि

नार्मल डिलीवरी होनी है, पर फिर भी आप्रेशन के लिए कहता है। क्योंकि बच्चा बाहर आने की कोशिश करता है। सिर से गर्भद्वार को खोलता है। जैसे अण्डे से बच्चा खुद बाहर आता है, ऐसे ही होता है। अगर बच्चे की गर्दन टेढ़ी हो गयी तो नहीं आ सकता है। यह बहुत नाजुक समय है। पहली डिलीवरी तो तौबा है। एक तो बहुत दर्दनाक होती है। डिलीवरी हमेशा हॉस्पिटल में करवाना। अगर गड़बड़ हुई तो फौरन आप्रेशन करते हैं। प्रसव पीड़ा बहुत भयंकर होती है। तो डॉ० ऐसी स्थिति में आप्रेशन करते हैं। पर अफ़सोस यह है कि नार्मल डिलीवरी में भी डॉ० मात्र पैसे के लिए आप्रेशन करते हैं। सिर में थोड़ा दर्द हुआ तो 6-7 एक्सरे करवाते हैं। कभी सिर में दर्द हो जाता है। फौरन कचूमर निकाल देते हैं। एक्सरे करवाते हैं, कहते हैं कि ट्यूमर है, फौरन आप्रेशन करना होगा। वो जानबूझकर आपकी खोपड़ी को खोलना चाहते हैं। बहुत मोटी रक़म चाहते हैं। इंसान ज़ालिम हो गया है। उसे आपकी ज़िंदगी से कुछ नहीं लेना है। वो 30-40 लाख देकर एंडमीशन लिया है। अब उसने वो रक़म वसूल भी करनी है।

अब सरकारी अध्यापक पढ़ा नहीं रहे हैं। माँ-बाप की मजबूरी है कि प्रॉइवेट स्कूलों में पढ़ा रहे हैं। छोटे बच्चे की 500 रुपये फीस है। जब मैं पढ़ता था तो साल में एक आना होता था। आज नन्हें-मुन्ने बच्चे की भी मोटी फीस है। सोचें। इसी तरह जैसे पढ़ाई में सरकारी स्कूलों में नालायकता के कारण सरकार ने प्रॉइवेट स्कूलों को खुशी-खुशी मान्यता दी। वो सोचते हैं कि हमारा सिरदर्द ख़त्म हुआ। पर उनकी यह ड्यूटी भी बनती है कि देखें कि कहीं लूट तो नहीं हो रही। ये जमकर लूट रहे हैं। आज आदमी भयानक होता जा रहा है। बहुत भयानक। कहीं थोड़ी कमर-दर्द हुई तो आप्रेशन करवायेंगे। यह कोई ईलाज़ नहीं है, ज़िंदगी-भर के लिए सत्यानाश कर देंगे।

मैं शरीर का बेलेस बनाता हूँ। मक्की खाई तो फौरन साथ में दो

मौसमी खा लेता हूँ। वो ठंडी है। पपीता खाया तो फौरन साथ में मूली खा लेता हूँ। कभी भी दवा नहीं खाता हूँ।

हरेक दवा का साइड इफेक्ट हमारे दिमाग पर पड़ेगा। दिमाग का सत्यानाश कर देगी। इसलिए नहीं ले रहा हूँ। पर किसी को नहीं बोल रहा हूँ; नहीं तो विरोध करेंगे। आपके शरीर में सिस्टम है, स्वयं ही हर बीमारी को ठीक करेगी। आप शरीर को दवा की आदत डाल देते हैं। आपकी आदत बन चुकी है।

...तो डॉ० लोगों से सावधान रहना। ये बेकार के टेस्ट कहेंगे। डॉ० फौरन कहेगा कि आप्रेशन करवा लो। भयभीत कर देगा। थोड़ा पेट में दर्द हुआ तो कहेगा कि अपेंडिक्स है। थोड़ा सिर में दर्द हुआ तो ट्यूमर।

मेरे साथ ऐसा होता है कि कभी नमक ज्यादा हुआ तो दूसरी बार नहीं होता है। अगर कहूँ कि दूध गर्म है तो दूसरी बार इतना ठंडा होगा कि पूछो मत।

मैं किसी के घर भोजन नहीं खाना चाहता हूँ। मुझे खाना खाने में प्रॉब्लम है, सोने में प्रॉब्लम है, पानी पीने में प्रॉब्लम है। आपकी एक दिन की व्यवस्था खराब होती है तो परेशान हो जाते हैं।

मैं अपनी प्रॉब्लम ज्यादा बताना नहीं चाहता हूँ।

एक बार जोगिंदर नगर में एक ऐसा लड़का मेरा भोजन बना रहा था, जिसके हाथों की उँगलियाँ गल चुकी थीं और हाथों में कई चीरे थे। उनमें मवाद थी। इस तरह वो मुझे मवाद ही तो खिलाया न! दुनिया मेरी सेवा इस तरह से करना चाहती है। मैं अगर किसी के लिए कह दूँ कि फलानी माई मेरा खाना फलानी जगह बनायेगी तो जिसके यहाँ सत्संग होता है, वो माई उसे साइड करती है, कहती है कि तू बड़ी आई साहिब का भोजन बनाने वाली। मैं बनाती हूँ। चाहे उसे स्वाँस की भयंकर बीमारी ही क्यों न हो। कुछ मेरे शब्द को काटकर मेरी सेवा करने की

कोशिश करते हैं। यह कोई सेवा नहीं है; यह तो उलटा दुख देने वाली बात है।

कभी कुछ पैर दबाने के लिए आते हैं। इतनी तेज़ी से रगड़ते हैं कि आग की तरह गर्म कर देते हैं पाँव। सेवा की जगह पर तकलीफ़ देते हैं। यदि मैं कहता हूँ कि रहने दो, तो मानते भी नहीं हैं, कहते हैं कि थोड़ी सेवा तो करने दो। वाह, यह कौन सी सेवा है! पहले तो तुम्हें सेवा करनी आती ही नहीं है। फिर, चलो, तकलीफ़ दे दी, पर जब गुरुजन कह रहे हैं कि रहने दो, तो मान लो। गुरु आज्ञा से बड़ी कोई भी सेवा नहीं है। पर वो तो अपना शौक पूरा कर रहे होते हैं।

....तो मस्तिष्क से सारे संदेश आते हैं। वो मन का मंत्री है। सुषुम्ना से ही अत्यंत सूक्ष्म तरंगों के माध्यम से अपने संदेश देता है। मस्तिष्क स्वयं नहीं देता है। मस्तिष्क की उपज नहीं है। अत्यंत सूक्ष्म तरंगें मन की हैं। मन आपको 24 घंटे व्यस्त रखना चाहता है।

मुझे आपकी सारी शंकाओं का निराकरण भी करना है। एक ने कहा कि शंका है। नानक देव जी की वाणी में आता है कि मन निर्मल हो। लेकिन आप कहते हैं कि मन काल है, निरंजन है। बहुत सस्पेंशन हो रही है।

हमें आपसे एक चीज़ चाहिए। कुछ नहीं चाहिए। हमारी नज़र एक चीज़ पर है—भरोसा। हम उसके सौदागर हैं। लोग कहते हैं कि माँ चलना सिखाती है। सच यह है कि बच्चा खुद चलना सीखता है। माँ चलना नहीं सिखाती है। माँ तो उपक्रम मात्र करती है। चलने के लिए उँगली से ग्रिप करना होता है। यह वो गिरते-गिरते सीखता है। माँ एक उपक्रम है। पर माँ सिखा नहीं सकती है कि ग्रिप कर लो जमीन को।

वो गिर पड़ता है। चोट लगती है, पीड़ा होती है। वो नहीं गिरना चाहता है। पर वो भी चलना चाह रहा है। वो सीखना चाह रहा है। आपको देखकर वो भी चलना चाह रहा है।

इस तरह आपका सहयोग चाहिए। बाकी कुछ नहीं। बाकी पूरे सिस्टम हैं। माँ ने केवल पकड़ा है। कभी छोड़ भी रही है। चिड़िया भी बच्चे को सिखाती है। पंख खोलकर उड़ना सिखाती है। सभी अपने बच्चों की रक्षा कर रहे हैं। आत्मदेव तो सबमें समाया है न!

इस तरह आपकी इच्छा-शक्ति चाहिए। उस इच्छा-शक्ति से पार कर दूँगा। सिर्फ साहिब को पकड़ना है। हालांकि निरंजन जानता है कि हो जायेगा। पर चाहता है कि दूसरे को न समझाए। वो परेशान करेगा। कभी भी नहीं छोड़ना चाहता है। इसलिए हमेशा सावधान रहना होगा। जब हमेशा एकाग्र रहोगे तो लगेगा कि वो चीज़ हमेशा साथ में घूम रही है। जब दुनिया में भटकोगे तो वो चीज़ नहीं रहेगी।

एक दिन डी.सी. साहब कह रहे थे कि आपका मजाक करने का अंदाज बड़ा ही प्यारा है। ऐसा किसी का नहीं देखा।

पहले मैं बहुत हँसाता था। लोटपोट कर देता था।

एक बंदे ने कहा कि अजीब-से सपने आते हैं। बीबी-बच्चों को भी डर लगता है। मैंने कहा कि इसका मतलब है कि घर में कुछ है। वो बोला—हाँ। मैंने कहा कि नालायक, तूने कैसे मान लिया कि कुछ हो सकता है। मैंने भी ऐसे ही कहा कि सच में कुछ है।

मैं रोटी बाँट रहा था। एक माई दूर से थाली कर रही थी। मैंने कहा कि थोड़ी और दूर नहीं जा सकती हो क्या? वो छलाँग लगाकर और पीछे हो गयी। चुटकुले का स्टॉइल और बोलने वाले का हावभाव होता है। मैं इस अंदाज में कोई भी बात सुनाता हूँ कि हँसाकर लोटपोट कर देता हूँ। पहले बहुत हँसाता था।

....तो आत्मा सबमें है। सुरति का ही खेल है।

सुरति कमल सतगुरु को वासा ॥

सुरति में ही साहिब हैं। इसलिए दुनिया में इस सुरति को नहीं घुमाना। जितना घुमाओगे, उतने साहिब से दूर हो जाओगे।

सुरति का खेल सारा है, सुरति में रच्यो संसारा है॥

साहिब कह रहे हैं—

सुरति संभाले काज है, तू मत भरम भुलाय।

मन सय्याद मनसा लहर में, बहत कतहूँ न जाय॥

मैं चाहे रिपीट करके बोलूँ तो भी बोर नहीं करता हूँ। आपको एकाग्र कर दूँगा। बस, सुरति को पकड़ना। जिंदगी में जितनी भी भूले होती हैं, सुरति के हटने से ही होती हैं। जो भी काम कर रहे हैं, सुरति हटी तो ग़लत होगा। इसलिए इसे संभालना।

खावता पीवता सोवता जागता, कहैं कबीर सो रहे माहिं॥

हमारा मस्तिष्क, हमारी नाड़ियाँ किसी की भी पहचान बनाती हैं। शायद आपकी ये कोशिकाएँ मेरा सही रूप बनाने में सक्षम नहीं हैं। ये ग़फ़लत में आ जाती हैं। ध्यान करना चाहो तो नहीं हो पायेगा। क्योंकि मैं मन की पकड़ में नहीं मिलूँगा। जब एकाग्र हो जाओगे तो आ जाऊँगा। सुरति का ही पूरा खेल है।

सुरति फँसी संसार में, ताते पड़ गयो धूल।

सुरति बाँध अस्थिर करो, आठों पहर हुजूर॥

सुरति-शब्द-अभ्यास नहीं बोल रहे हैं। केवल सुरति-योग। अगर अन्दर में भी रोशनी का ही ध्यान करते रहोगे तो वहीं भटकायेगा निरंजन।

एक ने कहा कि आप कमाई नहीं करना कह रहे हैं। फिर जो शीश से सवा हाथ ऊपर ध्यान करने को कह रहे हैं, वो कमाई नहीं हुई क्या? हमें कुछ करना ही हुआ न! मैंने कहा कि जाओ, आज के बाद कुछ मत करना। यह तो केवल एक उपक्रम बताया। ध्यान का महत्व है। कुछ न करोगे तो मन की उठापटक लगी रहेगी। बस, यह बात है। इसे उलझाकर रखना है।

वैराग्य आपमें खुद-ब-खुद आ रहा है। पूरा सिस्टम खुद-ब-खुद

हो रहा है। मोबाइल में सिम नहीं डाली तो मोबाइल कुछ भी नहीं कर पाता है। अगर कोई जानकारी चाहोगे तो नहीं मिलेगी। क्या हुआ? यह छोटी-सी सिम का कमाल था। क्या मामला था? सारा डॉटा उसी में है। कोई भी सिस्टम मोबाइल का एक्टिव नहीं होता है। यह सिम का कमाल था। आपकी सिम गुम हो जाती है। कभी नयी सिम लेते हैं। वो भी एक्सचेंज से मिली। पर जितना भी डॉटा था, वो नहीं रह जाता है। वो क्या है फिर? सिम से जानकारी कट जाती है। वो कहाँ थी? उस सिम से एक्सचेंज जुड़ा था। सिम के कारण से हमारा मोबाइल भी उससे जुड़ा था। अब यह था कि वो एक्सचेंज से जुड़ा था। उस पल उस सिम का रोल था। सिम के दर्पन से ही हम एक्सचेंज से जुड़े थे। दूसरी सिम आई तो जितना भी था, कुछ न रहा आपके पास।

इस तरह सुरति की भूमिका है। हमेशा सावधान रहना। कभी भी दुनिया में मन न लगे। सावधान रहना। और निरंजन की हमेशा कोशिश होगी कि आपकी सुरति पर हमला करे। इसलिए—

मन सय्याद मनसा लहर में, बहत कतहूँ न जाय॥

यह ध्यान बहुत बड़ी चीज़ है।

सुरति कमल सतगुरु को वासा॥

जितना मैं बोध रखता हूँ, कोई नहीं रखता है। मेरे विचार से किसी की भी थ्युरी आप नहीं पढ़ते होंगे। लहरतारा के महात्मा भी मेरी किताबें पढ़ते हैं। यह अहंकार से नहीं बोल रहा हूँ।

कबीर एको जानिया, तो जाना सब जान।

कबीर एक न जानिया, तो जाना जान अजान॥

दुनिया साहिब की वाणी को पढ़ रही है, पर अपने ब्रेन से अंदाज़ा लगा रही है। हम शुद्ध चीज़ दे रहे हैं। कहीं भी मिश्रण नहीं है।

एक आदमी दूसरे पंथ से जुड़ा था। 20 साल से जुड़ा था। एक दिन मुझे फ़ोन किया, कहा कि कुछ शंकाएँ हैं। मैंने कहा कि कहो। कहा

कि पहले मैंने भोपाल में लक्ष्मण जी से बात की, पर मेरी शंकाओं का निराकरण नहीं हो पाया। फिर अन्य लोगों को भी फ़ोन किये, पर किसी ने फ़ोन ही पटक दिया तो कोई बता नहीं पाया। वास्तविकता यह थी कि वो बहुत अनुभवी था। कोई उसकी शंकाओं का ठीक से निराकरण नहीं कर पा रहा था। वो बोला कि मैं आपसे नाम लेना चाहता था। वजह यह है कि मैंने उस पंथ से नाम लिया, पर संतुष्ट नहीं हुआ। पर मान रहा हूँ साहिब को। आज साहिब की वाणी पर बहुत लोग बोलने वाले हैं। मैंने पूरा भारत छाना। विरोधाभास लग रहा है। वो सत्लोक की बात कर रहे हैं, पर पल्लू निरंजन का ही पकड़वाते हैं। मैंने कहा कि मेरी बात आपको कैसी लगी? कहा कि मेरा मानना है कि साहिब पर जितने भी बोलते हैं, उनमें किसी के साथ भी आपका मुकाबला नहीं है। जिस गुरु से नाम लिया, जो नाम लिया, वो भी आपको बताता हूँ। मैं आपको दिल से गुरु मान चुका हूँ। वो ओम्ततसत् देते हैं। मैंने पूछा कि निरंजन को क्यों मानते हैं? कहा कि पूरी दुनिया निरंजन की है, ब्रह्माण्ड निरंजन का है, इसलिए इससे विरोध करके पार नहीं जा सकते हैं।

मैंने पूछा कि ओम् को क्या मानते हो? कहा कि (त्रिदेव) ब्रह्मा, विष्णु और महेश। मैंने कहा कि तत् को क्या मानते हो? कहा कि निरंजन। सत् को क्या मानते हो? कहा कि परम-पुरुष।

वो बोला कि आपने चौकाया, कहा कि ओम् निरंजन है। आप निरंजन को बाँयकॉट कर रहे हो। मेरा गुरु गृहस्थ है। यह मुझे पहले भी खटकता था। पर आपकी बात निराली है। वो फिर बाद में नाम लिया। बीबी-बच्चों को भी लाया। वहाँ भी उसने कुछ पूछा; कुछ शंका थी। मैंने पूछा कि वही हो न? कहा कि हाँ, वही हूँ। कहा कि आप तो दावे के साथ कह रहे हैं कि निरंजन को बाँयकॉट करके चलना है। निरंजन से परे सच है। वो सच क्या है? वहाँ फिर कैसे पहुँचें?

सर्वप्रथम कबीर साहिब ही इस नाम को संसार में लाए। कलयुग

में उन्होंने धर्मदास जी को बड़े रहस्य दिये।

विनती करते हुए धर्मदास जी साहिब से पूछ रहे हैं—

धर्मदास उठ बिनती कीन्हा। तुमरी दया पर्यो सब चीन्हा॥
अपनो भेद कहों विलछानी। जाते परै दरस पहिचानी॥
वहै शब्द गुरु कहों प्रकाशा। जामें हवै सुकृत को वासा॥
वही शब्द में दर्शन होई। भिन्न भिन्न मोहि कहो बिलोई॥

धर्मदास जी विनती करते हुए कह रहे हैं कि कृपा करके अपना भेद कहो। साहिब कह रहे हैं—

धर्मदास तुम विनती कीन्हा। हमरो रूप न काहू चीन्हा॥
अमर भेद अस्थल कै माहीं। जो पावै अस्थिर मन ताहीं॥
गगन धरनी उतपति सब नीरा। काया बीर सु नाम कबीरा॥

कह रहे हैं कि मेरा भेद कोई नहीं जानता है। कबीर यानी काया बीर यानी जिसका कोई शरीर नहीं है, वो कबीर है।

नाम हमारा मुक्तिमणि, पुरुष आपहि भाखी।

शब्द शिरोमणि सार यह, हंस सदा चित राखि॥

कह रहे हैं कि मेरा नाम मुक्तिमणि है और यह परम-पुरुष ने स्वयं कहा है। यही सार-नाम सब नामों में शिरोमणि है और हंस इसे सदा अपने हृदय में रखता है।

येही नाम लोके पहुँचावै। सुमिरत नाम पुरुष कहँ पावै॥
अब यह शब्द कहउ सम्भारा। सुनि हृदय महँ करो विचारा॥
जाते दुख द्वंद मिट जाई। धर्मराय बैठो पछिताई॥
यहि नाम को शिरहि चढ़ाई। यामें सब सुख विलसे आई॥
कपट रूप धरिहै जो कोई। भ्रम की डगर परै पुनि सोई॥
आदि शब्द सो नाम हमारा। जो बूझे सो उतरे पारा॥
धन्य भाग्य हंसन के कहिए। जो या नाम मुक्ति मन गहिए॥
सो करुणाकर बहुत अघारी। एक नाम चित लेय विचारी॥

कह रहे हैं कि यही नाम हंस को अमर लोक पहुँचाता है। जो इस नाम का सुमिरन करता है, वो परम-पुरुष को पा लेता है। इस नाम से सब दुख और झगड़े समाप्त हो जाते हैं और निरंजन बैठा पछताता है। जो इस नाम को सिर पर चढ़ाकर रखता है, उसे सब सुख प्राप्त हो जाते हैं। जो कपट करता है, वो भ्रमित होकर भटकता ही रहता है। जो आदि शब्द है, वही मेरा नाम है और जो उसे जान जाता है, वो पार हो जाता है। उस हंस के बड़े भाग्य हैं, वो मन से मुक्तिदायक इस नाम को ग्रहण करता है।

ज्ञानस्थित के येह गुण, नाम विवेकी पाइ।

कहै कबीर धर्मदास को, हंस लोक को जाइ॥

हे धर्मदास, जो इस विवेकी नाम को पा लेता है, वो अमर-लोक को चला जाता है।

धर्मदास चरण चित धरही। बार बार बिनवे अनुसरही॥
पाँजी नाम मोहि कहो विचारी। जामें होय हंस निस्तारी॥
बिन पाँजी कहा जाने भेदा। पाँजी नाम गुरु कही न खेदा॥

धर्मदास जी ने बार-बार विनती करते हुए कहा कि मुझे हंस को पार उतारने वाले नाम के बारे में बताओ, जिससे मेरे हंस का कल्याण हो सके।

धर्मदास भल कीन्ह विचारा। हंसराज बड़ भाग तुम्हारा॥
नाम सिंधु पायो तुम जबही। पाँजी निर्भय पहुँचे तबही॥
बिन निर्भय कोई भेद न पावे। बिना भेद कैसे पहिचाने॥
कहैं कबीर होइ गुरु दाया। तबही हंस अमर घर आया॥
अब सुनिये पाँजी को द्वारा। ता चढ़ि हंस उतरि है पारा॥
एक नाम एक चित हो देखा। तहाँ हंसा सुख सागर पेखा॥
पाँजी अद्भुत कहीं सुमारा। ताते होय मुक्ति व्यवहारा॥

साहिब कह रहे हैं कि हे हंसराज धर्मदास, जब तुम पार पहुँचाने

वाले इस नाम को पा लोगे तो भय रहित हो जाओगे। बिना भयरहित हुए तुम भेद नहीं जान सकते हो। जब गुरु की दया होती है, तभी हंस अमर लोक में जा पाता है। तब इस नाम पर चढ़कर हंस भवसागर के पार होता है। यह अद्भुत नाम है, जो मुक्ति का दाता है।

साहिब धर्मदास से फिर कह रहे हैं—

जब नहिं हते कूर्म नहिं कामा। आदि पुरुष कीन्हो निज नामा॥
 नाम सार हंसा जेहि पावा। वो जन चार काल पहुँचावा॥
 पहुँचावत में कछु दिल मोरा। वारी लांघि सकै नहिं चोरा॥
 जो बोले तो शिर छिन जाई। खूट गहे तो अंग नशाई॥
 सारनाम सतगुरु ने दीना। ताते धर्म शीस पर लीना॥
 जो कोई करै नाम महँ वासा। ता कहँ होइ न काल तरासा॥
 नाम प्रताप काल नश जाई। काले खेले पुरुष जाई॥
 नौ दल गुप्त हृदय में टीका। अमर मोक्षपद पावै नीका॥
 नौदल नाम जो कहौं विचारी। षटदल काढि जो बाहर डारी॥
 शुभ दल शुभचित बन भरमा। भये दल क्रोध संत तज करमा॥
 अस्थित दल राखे निज मन को। पहुँचे हंस लोक सुरजन को॥

जब कूर्म भी नहीं था और काम भी नहीं था, तब परम पुरुष ने अपना नाम प्रकट किया, जो स्वयं परम-पुरुष ही था। जो इस नाम को पा जाता है, काल उसे अपने से पार अमर लोक पहुँचने देता है। यदि वो ऐसा नहीं करे तो स्वयं जल भी नहीं लाँघ सकेगा। यदि कुछ बोलने के लिए सिर उठाए तो सिर ही चला जायेगा और यदि पकड़ने की कोशिश करे तो अंगहीन हो जायेगा। यह सार नाम सद्गुरु देता है, इसलिए निरंजन उसे अपने शीश पर पाँव रखने देता है। जो भी इस नाम में वास कर लेता है, उसे काल का भय नहीं रह जाता है। नाम के प्रताप से काल भाग जाता है और हंस अमर लोक में चला जाता है।

...तो मैंने कहा कि यहीं पर एक अदद् गुरु की ज़रूरत पड़ जाती

है। नाम रूपी यह तत्व गुरु की सुरति में है।

पारस सुरति संत के पासा ॥

उस पारस सुरति से नाम देता है। यह नाम वाणी का विषय नहीं है। गुरु उस परम-सत्ता को ही दे देता है। वही नाम पार करता है।

वो बोला कि पहले गुरु ने कहा था कि पहले ओम् जपो। जब पूछता था तो कहता था कि अभी यही करते रहो, बाद में बतायेंगे। कहा कि बूढ़े-बूढ़े लोगों से भी पूछा, जो लंबे समय से थे। उन्हें भी नहीं पता था। मेरी तलाश जारी थी। मुझे लगा कि यह ढकोसला है।

आप अन्दर से किसी की शंका का निराकरण नहीं करोगे तो वो आपकी भक्ति की तरफ मुड़ने वाला नहीं है। दूसरे बड़े-बड़े पंथों के 10-10 हजार नामियों को मैंने नाम दिया है।

आप बस, सुरति करना, चेतन हो जाओगे। नहीं करना चाहते हो तो मत करो, पर मन के साथ भी नहीं घूमना। स्कूल नहीं जाना है, मत जाओ, पर आवारा लड़कों के साथ भी नहीं घूमना।

सुमिरन मन की रीति है, भावे जहाँ लगाय।

भावे गुरु की भक्ति कर, भावे विषय कमाय ॥

....तो मैंने उस माई को, जो मन के निर्मल होने की बात कह रही थी, कहा कि मन निर्मल नहीं होता है। इसे पकड़ना है। यह निर्मल होने वाली चीज़ नहीं है।

मैं आपको समेटकर अपने तक ही रखना चाह रहा हूँ। एकाग्रता का ही पूरा खेल है। सुरति महामंत्र है; इसे पकड़ लेना।

जो कुछ है सो सुरति है, ताहि कहूँ समुझाय ॥

क्या है यह सुरति? यह सुरति बड़ी खास चीज़ है। साहिब ने सुरति अंग पर बड़ी बात की।

अँधी सुरति नाम बिन जानो ॥

नाम के बिना अँधी है। सुरति कुंद हो जाती है। जैसे कभी-कभी

देखते हैं कि छूरी से काटते हैं तो काटते-काटते छूरी कुंद हो जाती है। इस तरह सुरति मन के साथ घूम-घूम कर कुंद हो गयी है। तो साहिब वाणी में कह रहे हैं—

जो कुछ है सो सुरति है...॥

११वाँ द्वार भी इसी में है।

मैं किसी मत-मतान्तर का खंडन नहीं कर रहा हूँ। हम सुरति-शब्द-अभ्यास नहीं बोल रहे। यह भी विकृत थ्यूरी है, भ्रमित थ्यूरी है। क्योंकि साहिब ने कभी भी इन धुनों को परमात्मा नहीं कहा है। तो ये धुनें कितना चेतन करेंगी! तभी साहिब की वाणी का हवाला देते हैं—

उठ जाग री मोरी सुरति सुहागिन जाग री।
जागु जतन करि अचल रतन धन, गुरु के चरण चित लागु री।
क्या पड़ी सोओ मोह खोह में, उठि के भजन में लागु री।
सोवत तोहि बहुत दिन बीते, का तोरी मूठी में लागु री।
दोउ कर जोरि शीश धरि चरणन, भक्ति अमर वर माँगु री।
दे चित शब्द सुनो दूनो श्रवनन, उठत मधुर धुन रागु री।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत पीठ दे भागु री॥

वाह भाई, धुनें उठ रही हैं। यह तो कहा; पर क्या उन्होंने यह नहीं सुना।

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय।

सुरति समानी शब्द में, उसको काल न खाय॥

यानी वो शब्द विदेह है। ये धुनें भँवर गुफा से उठती हैं। ये आगे खत्म हो जाती हैं। इसलिए हम केवल सुरति-योग बोल रहे हैं। बहुत बड़ा अन्तर है। हमारे सिद्धांत बाकी से मिलते-जुलते लगते हैं। सही यह नहीं है। वास्तव में हम सभी से अलग हैं।

मैंने पहले भी बताया कि एक ने कहा कि एक तरफ आप कहते हैं कि कमाई नहीं करनी है और दूसरी तरफ आप कहते हैं कि सुरति

करो। यह विरोधाभास क्यों है? मैंने कहा कि आज के बाद चाहो तो सुमिरन मत करना, चाहो तो सुरति भी नहीं करना। पर तुम मन की क्रियाओं को भी रोक दो। तुम कल्पनाएँ भी नहीं करना।

कबीर मन तो एक है, भावे जहाँ लगाय।

भावे गुरु की भक्ति कर, भावे विषय कमाय॥

ठीक है, तुम भजन नहीं करो। तुम सुमिरन भी मत करो। दोनों चीज़ मत करो। लेकिन कल्पनाएँ भी मत करो न। तुम उन्हें भी रोको। पर यह संभव नहीं हो पाएगा, क्योंकि—

सुमिरन मन की रीति है, भावे जहाँ लगाय।

भावे गुरु की भक्ति कर, भावे विषय कमाय॥

अगर सुमिरन कर रहे हो तो तुम्हारा मन कहीं कल्पनाओं में घूम रहा है। फिर उतनी देर तुम मन के साथ हो, उतनी देर मन का रूप हो।

साहिब ने सुमिरन का महात्म बोला। कभी कुछ सुषुम्ना की बात करते हैं। मैं पूछता हूँ कि क्या तुम वैज्ञानिक तरीके से, तकनीकी तरीके से सुमिरन की महत्ता बता सकते हो क्या? सुमिरन से सुख होता है, यह कैसे मान लें? परमात्म-अनुभूतियाँ होती हैं। सुमिरन से सच में सुख होता है क्या? इसे वैज्ञानिक तथ्यों से कैसे प्रमाणित किया जा सकता है? सुषुम्ना नाड़ी से चेतना उठती है। यह मेरुदण्ड से होती हुई, नितंब से नीचे टाँगों तक जाती है। ऊपर यही इड़ा-पिंगला से होती हुई बंकनाल तक जाती है।

जब कोई सुमिरन करता है तो सुषुम्ना क्रियाशील होती है। जब सुषुम्ना क्रियाशील होती है तो समग्र चेतना बढ़ जाती है। दरअसल सुमिरन सुषुम्ना को चेतन करने की विधि है। स्विच को घुमाया तो डेक की आवाज़ बढ़ने लगती है। इसी तरह स्वाँसा का स्विच ऊपर की ओर घुमाना है। इससे सुषुम्ना खुलेगी। सुषुम्ना खुल जाती है तो शरीर की चेतना बढ़ती है। कभी ट्रॉसफॉर्मर लगाते हैं। यदि वोलटेज कम आ रही

है तो एक स्टेप ऊपर करते हैं। तो करेंट बढ़ जाता है। जैसे एक स्टेप ऊपर करने से बिजली बढ़ गयी, इसी तरह सुषुम्ना खुलने से शरीर की चेतना बढ़ जाती है। तब शरीर परम चेतन हो जाता है। हमारे सूक्ष्म स्नायुमंडल पर प्रभाव पड़ता है। वो कोशिकाएँ जाग उठती हैं। वो पूरे शरीर की चेतना का संचालन करती हैं।

डिलीवरी के समय डॉ० लोग मेरुदण्ड में इंजेक्शन लगाते हैं। अगर गलत लगे तो नीचे की नाड़ियाँ खराब हो जाती हैं, बंद हो जाती हैं, काम नहीं करती हैं। हमारा ब्रेन भी सुषुम्ना के द्वारा ही हरेक अंग को अपना संदेश पहुँचाता है।

जो महात्मा लोग हुए, अधिकतर किसी विद्यालय में नहीं पढ़े थे। फिर इतनी गहरी अनुभूतियाँ क्यों हुई? इतना अधिक ज्ञान कहाँ से आया? क्योंकि चेतना की मात्रा अत्यंत बढ़ गयी। उसी अवस्था में पहुँचकर हम सभी स्थितियों को ठीक से समझ सकते हैं।

हमारी चेतना स्वाँसा से उठती है, सुषुम्ना में बढ़ जाती है।

सुषुम्न मध्ये बसे निरंजन, मूँधा दसवाँ द्वारा।

उसके ऊपर मकर तार है, चढ़ो सम्हार सम्हारा॥

कभी-कभी आप हम सोचते हैं कि मस्तिष्क प्रमुख अंग है। पर विश्वास करें। वो भी किसी से संचालित है। हमारा दिमाग एक मंत्री है और शरीर में मन राजा है। कभी विचार उठा तो लगता है कि मन ने कहा। हमारा दिमाग तो मन का अनुचर है, अनुकरण करने वाला है, अनुगामी है।

मान लो, मन ने कहा कि श्रीनगर घूमो। तरंगों से यह संदेश मन ने दिमाग को पहुँचाया। माध्यम सूक्ष्म सुषुम्ना नाड़ी है। यह संदेश तब तरंगों द्वारा दिमाग को पहुँचाता है। आगे का मसौदा दिमाग तय करता है। अब फाइल दिमाग के पास पहुँच जाती है। अब वो प्लॉन करता है। वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क को किसी भी क्रिया का राजा माना। पर उस क्रिया

से पहले हुई इच्छा और कल्पना का प्रारंभ किसी बिंदू से हुआ, यह नहीं समझ पाए।

मन तरंग में जगत भुलाना ॥

पूरी दुनिया मन की तरंग में घूम रही है। एक इंजीनियर की कार का एक्सीडेंट हुआ। झटका लगा। अब उसकी गर्दन तो क्रियाशील होती है, पर बाकी अंग क्रियाशील नहीं हो पाते हैं। क्योंकि नाड़ी डिस्टर्ब हो गयी। कभी देखते हैं कि कोई झटका लगा तो टाँगें काम करना बंद कर देती हैं। वो बैठकर काम करते हैं।

इसी तरह जब वो सुषुम्ना नाड़ी खुल जाती है, स्विच ऑन हो जाता है तो शरीर में अद्भुत चेतना का विस्तार हो जाता है। एक हजार गुणा चेतन हो जाती है। साहिब वाणी में कह रहे हैं—

**इड़ा पिंगला सुषुम्ना सम करे, अर्द्ध औ उर्द्ध विच ध्यान लावे।
कहैं कबीर सो संत निर्भय हुआ, जन्म औ मरन का भ्रम भाने ॥**

आज्ञाचक्र में आत्मा बैठी है। इड़ा-पिंगला के माध्यम से शरीर में फैलती है। आत्मा ऊपर जाने की कोशिश करती है तो मन बाधा डालता है। बड़े अजीब तरीके से व्यवधान डालता है। कोई पत्थर नहीं मार रहा है। साहिब ने कहा—

**सुषुम्न मध्ये बसे निरंजन, मूँधा दसवाँ द्वारा।
उसके ऊपर मकरतार है, चढ़ो सम्हार सम्हारा ॥**

वहाँ 10वाँ द्वार बंद करके रखा है।

**कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा।
गृह छोड़ भये सन्यासी, तऊ न पावत पारा ॥**

इसलिए जो सुमिरन करने वाला है, उसकी स्वाभाविक इड़ा-पिंगला लय हो जायेगी। अन्य कितना भी तप करने वाला होगा, नहीं हो पायेगी। क्योंकि मन दुनिया में धकेलता है। उस समय ऐसा होता है कि आप एकाग्र बैठना चाहते हैं, पर वो प्रवेश नहीं लेने देता है। ब्रेक लगा

रखी है। दिखता भी नहीं है। सब मिलाकर आदमी आंतरिक जगत की बात समझ नहीं पाता है। सुरति से सुषुम्ना नाड़ी खुलती है। साहिब कह रहे हैं—

सुरति के दण्ड से, घेर मन पवन को ॥

यानी सुरति रूपी डंडे से मन और पवन को शरीर में घेरो। कैसे घेरें? कभी पशुओं को घेरते हैं। जिस तरफ चाहते हैं, उसी तरफ ले चलते हैं। गाय मुड़ना चाहती है, पर एक आदमी एक तरफ रहता है, दूसरा दूसरी तरफ। अब गाय को सीधा चलना पड़ता है। भाई, सुरति के डंडे से मन और पवन को घेरना है। तब—

फेर उलटा चले... ॥

स्वाँसा स्वाभाविक इड़ा-पिंगला के माध्यम से नाभि में आ रही है। माँइक की तार डेक के साथ जुड़ी है। माँइक में सिस्टम है। इस तरह स्वाँस ले रहे हैं, सिस्टम है। कभी इड़ा नाड़ी चल रही है, कभी पिंगला नाड़ी। नहीं तो लगातार चलेंगी तो गर्म हो जायेंगी। एक चलती है तो एक आराम करती है। इड़ा-पिंगला से ली जा रही स्वाँसा सीधी नाभि में पहुँचती है। जब पहुँचती है तो शरीर ऑक्सीजन द्वारा ही क्रियान्वित होता है। यह स्वाँसा नाभि में जाकर बदलती है। सिस्टम है। मीटर लगा है। एक लाइन पंखे में लगी है तो पंखा घूमने लगता है। एक लाइन बल्ब के साथ है तो बल्ब जलने लगता है। आपके नाभि क्षेत्र में बड़े सिस्टम हैं। वायु रिफाइण्ड होती है। वायु 10 रूपों में बदलती है। गन्ना मिल में गया तो बड़े उपयोग होते हैं। शराब बनती है, चीनी बनती है, पेपर आदि बनता है। सभी चीजें काम में आती हैं। इस तरह स्वाँसा नाभि में जाकर पहुँचती है तो यह 10 पवन में बदलती है। गन्ना कई रूपों में बदल जाता है। नाभि-दल-कमल में स्वाँसा 10 रूपों में हो जाती है—अपान, उदान, प्राण, समान, सर्वतनव्याम, नाग, धनन्जय, किरकिल, जम्भाई और देवदत्त। अपान गुदा स्थान पर है। इसका काम है—मल को बाहर करना। यह

खराब हुई तो हालत खराब हो जायेगी। **उदान** कलेजे में रहती है। इसका काम है—अपान को ऊपर नहीं आने देना। यह उदान की ड्यूटी है। यह इसे दबाए रखती है। तीसरी है—**प्राण**। यह वहाँ बन गयी। हृदय में निवास करती है। हृदय धड़क रहा है; इसी का काम है। चौथी—**समान**, जोड़ों में रहती है। हम टाँगों, बाजू, हाथों की उँगलियों आदि को फोल्ड कर लेते हैं, पर मुर्दे की बाजू फोल्ड करो तो नहीं होती, उँगलियों को फोल्ड करना चाहो तो नहीं होतीं, क्योंकि वो वायु निकल गयी। यह हवा का खेल था। **सर्वतनव्याम** पूरे शरीर में फैली है। यह शरीर को मोटा होने से रोकती है। मौत के कुछ घंटों के बाद शरीर फूलना शुरू हो जाता है, क्योंकि वो वायु भी निकल गयी। इसलिए मोटापा गैस ट्रबल है। **धनन्जय** भुजाओं में और सीने में रहती है। जो हम बल लगाते हैं, यह धनन्जय वायु का काम है। जितने भी काम करते हैं, इसका खेल है। इस तरह चेतना बिखर जाती है। **नाग वायु** कंठ में रहती है। इसका काम नींद लाना है। जो नींद को काबू करते हैं, वो इस वायु को कंट्रोल करना जान जाते हैं। **किरकिल** वायु बड़ा काम करती है। यह नासिका के अग्रभाग पर रहती है। इसका काम है—छींकना। इसका काम है कि वायुओं को आपस में मिलने न देना। शरीर में खेल ही प्राणों का है। शास्त्रानुसार पाँच प्राण हैं और पाँच उपप्राण हैं।

जैसे चार वेद हैं। हमारी संस्कृति वेदों पर आधारित है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। ऋग्वेद परमात्मा की स्थिति के लिए कहता है कि अकर्त्ता है, निराकार है। यजुर्वेद परमात्मा को सगुण रूप में मानता है। वो तीन रूपों में मानता है। सामवेद योग को स्थापित करता है। अथर्ववेद तीनों को काट, तीनों में से निकालकर सृजित है। इन चार वेदों से फिर छः शास्त्र बने। ऋग्वेद से न्यानशास्त्र की उत्पत्ति है। इसके रचयिता हैं—गौतम ऋषि। यह 300 ई. पूर्व रचा गया। गौतम ऋषि हनुमान जी के नाना थे और अंजनि के पिता। दूसरा, मीमांसा शास्त्र

यजुर्वेद से निकाला। यह 200 ई. पूर्व की रचना है। इसके रचयिता जैमिनी ऋषि थे। सामवेद से वेदव्यास ने 400 ई. पूर्व वेदान्त शास्त्र निकाला। सांख्य शास्त्र कपिल मुनि ने सामवेद से बनाया। यह 500 ई. पूर्व रचा गया। इन्हीं कपिल मुनि ने राजा सगर के 60 हजार पुत्रों को शाप देकर भस्म कर दिया था। उन्होंने ही सांख्य शास्त्र की रचना की। इसमें ध्यान सूत्र हैं, मुद्राओं के बारे में ज्ञान है। पतंजलि ऋषि ने 200 ई. पूर्व अथर्ववेद से योग-शास्त्र बनाया और ऋषि कणाद ने अथर्ववेद से ही 300 ई. पूर्व वैशेषिक शास्त्र की रचना की।

इसके बाद चार वेदों के उपवेद बने। प्रथम, आयुर्वेद धन्वन्तरी मुनि ने बनाया। वो आयुर्वेद का पिता है। आयुर्वेद हमें चिकित्सा की जानकारी देता है। दूसरा, धनुर्शास्त्र विश्वामित्र ने बनाया। इन्होंने राम जी को शिक्षा दी थी। कैसे धनुष को खींचना है। कैसे गदा चलानी है, कैसे बरछी हाथ से पकड़कर मारनी है आदि का संबंध धनुर्शास्त्र से है। तीसरा, गंधर्व शास्त्र के रचयिता भर्तृहरि हैं। इसमें 6 राग, 36 रागिनी, गायन कला सब है। जैसे कॉस्मेटिक की दुकान में शृंगार का सारा सामान मिलता है, इसी तरह ये सब चीजें इसमें हैं। इसी तरह फिर अर्थशास्त्र है, जिसमें व्यापार संबंधी जानकारी है, ऋतु संबंधी जानकारी है। किस महीने में कौन-सी फसल होगी, कब क्या बोना चाहिए आदि बातें इसमें हैं। आज बी.सी.ए, एम.बी.ए. आदि कर रहे हैं। यह सब उसमें है।

....तो चार प्राण हैं और चार उपप्राण हैं। इस तरह ये मूल 10 प्राण हुए। नासिका में किरकिल वायु है। यह सभी वायुओं का संतुलन ठीक करती है। यह विश्राम देती है। यदि यह खराब हो जाए तो दिमाग खराब हो जायेगा।

प्यास पानी से ही बुझती है। दूसरे भी तरल पदार्थ हैं। दूध भी है। शर्बत भी हैं। पर क्यों नहीं मिटती? पूरी ज़िंदगी पानी पीते हैं, पूरा जीवन प्रयोग करते हैं, पर पता नहीं है। आदमी इस शरीर में पूरी ज़िंदगी गुज़ार

जाता है, पर नहीं जान पाता है कि इसकी क्या वृत्ति है। जूस पीने से प्यास क्यों नहीं बुझी? कोकाकोला या कोई भी ठंडा पीने से क्यों नहीं बुझी? उसमें भी पानी की मात्रा तो है। पर क्या बात है कि पानी से ही प्यास बुझती है। मूल रूप से हमारा पूरा शरीर काम कर रहा है। कोशिकाएँ लगातार काम कर रही हैं। दूध पीते हैं तो उसके अन्दर स्वाभाविक गर्मी है। जिन चीजों का रस निकाल रहे हैं, उनमें अपनी उष्मा है। वो भी शरीर में आ रही है। पानी में स्वाभाविक शीतलता है। उसकी तासीर शीतल है, इसलिए प्यास की तृप्ति केवल जल से ही होती है।

हमारी बात बिलकुल पिन-प्वाइंट होगी। दूसरी किसी चीज़ की वृत्ति शीतलता नहीं है। एक दिन मैं राँजड़ी से खाना खाकर चला। प्यास लगी थी। गाड़ी में फल खाए। फिर सत्संग स्थल पर पहुँचकर दूध भी लिया। लेकिन प्यास नहीं बुझी। गला सूख रहा था। फिर थोड़ी देर में एक आदमी एक गिलास पानी लेकर आया। उस एक गिलास से प्यास बुझ गयी। क्योंकि मूल रूप से जिस शीतलता की ज़रूरत थी, वो जल ने दी।

मुझे कोई कहे कि कोल्ड-ड्रिंक पी लो, हज़ार रूपये दूँगा। मैं तो भी नहीं पीने वाला। फ्रिज का पानी भी नहीं पीता हूँ। ए.सी. में भी नहीं रहता हूँ। पहले मिट्टी के मकान होते थे; मोटी-मोटी मिट्टी की दीवारें होती थीं; स्वाभाविक एयर कंडीशन होता था। 27 लाख जीव जमीन के अन्दर रह रहे हैं। बंदा नहीं समझ पा रहा है। सर्दी से बचने के लिए चींटी जमीन के अन्दर जा रही है। जमीन का स्वभाव है कि सर्दी में गर्म हो जाती है और गर्मी में ठंडी। गर्मी में कुँए का पानी ठंडा होता है। मिट्टी में ऑटोमेटिक सिस्टम है कि मौसम के विरुद्ध चलती है। तभी अपने को सुरक्षित रख पाती है। जून-जुलाई में धान क्यों लगाते हैं? ठंडक चाहिए। पर तब तो भीषण गर्मी होती है। सच यह है कि जिस मूल ठंडक की ज़रूरत होती है, वो जमीन से प्राप्त होती है। गेहूँ को गर्मी चाहिए, इसलिए कार्तिक के महीने में बोते हैं, क्योंकि तब जमीन में गर्मी होगी।

जमीन की तासीर बदलती है। मुँह में सर्दी के महीने में भाप क्यों आ जाती है ? बाहर ठंड लग रही है। कोट या स्वेटर भी पहना है। वास्तव में शरीर में भी पृथ्वी तत्व है; वो वहाँ भी अपना कमाल दिखा रहा है। भूलकर भी सर्दी में ज्यादा गर्म चीजें नहीं खानी चाहिए। गर्मी में अधिक ठंडी चीजें नहीं खाना। संतुलित रहना।

आपके अन्दर का तापमान सर्दी में गर्म होता है। पर लोगों को पता नहीं है। बहुत नुकसान होता है, क्योंकि पृथ्वी तत्व है। गर्मी में देखना, कमर ठंडी मिलेगी, गला ठंडा मिलेगा, क्योंकि शरीर में मिट्टी है। इसलिए वो मोटी मिट्टी की दीवार बनाते थे गर्मी में।

**यह काया है समरथ केरी। काया की गति काहू न हेरी॥
कबीर काया अथाह है, कोई बिरला जाने भेद॥**

बहुत कम लोग जान पाते हैं।

....तो मैं कह रहा था कि वायु का खेल है। देवदत्त का काम है—
पलकों को गिराना और उठाना। ब्रह्मानन्द जी ने कहा—

आदमी का जिस्म क्या है, जिसपर सैला है जहाँ।

एक मिट्टी की इमारत, एक मिट्टी का मकां॥

90 प्रतिशत तो शरीर में मिट्टी है। जल और पृथ्वी का सामंजस्य है। आगे कह रहे हैं—

खून का गारा है इसमें, ईंट इसकी हड्डियाँ।

चंद स्वाँसो पे खड़ा, ऐ ख्याले आसमां॥

मौत की पुरजौर आँधी, आके जब टकरायेगी।

टूट कर यह इमारत, खाक में मिल जायेगी॥

जिस स्वाँस में सुमिरन नहीं हुआ, बेकार है। जो भी स्वाँस नाभि में पहुँची, जिंदगी को खत्म कर रही है। टार्च जली तो एँनर्जि खत्म हो रही है। गाड़ी फ्यूल का अवशोषण करती है, चूसती है तो गैस बाहर निकलती है। इसी तरह स्वाँसा ले रहे हैं। नाभि में जाकर अवशोषण हो

रहा है। फिर मुँह से निकलने वाली कार्बनडाऑक्साइड है। प्यूल भी तो इंजन के चलने पर गंदी गैस के रूप में बाहर निकला। इससे इंजन पर असर पड़ा। स्वाँसा लेने से असर पड़ रहा है। यह शरीर के सब अंगों को संचालित कर रही है। इसे संचित करने वाले दीर्घायु हो जाते हैं।

सुषुम्ना नाड़ी खुलती है तो उर्जा बच जाती है। सही में आराम और सुख मिलता है। सपने में भी आप उलझन में रहते हैं। सपने में भी मुसीबतों में होते हैं। मुसीबतें आती हैं। ग़लत काम भी हो जाते हैं। वहाँ भी मन क्रियाशील होता है। पर सुमिरन में मन की उठापठक बंद होती है। एकाग्र होने पर आप कम्पलीट आराम करते हैं। जब एकाग्र हो जाते हैं तो सच्चा सुख मिलता है। इसलिए साहिब कह रहे हैं—

जप तप संयम साधना, सब सुमिरन के माहिं।

कबीर जानत संत जन, सुमिरन सम कछु नाहिं॥

सुमिरन से सुख होता है। जिस समय सुमिरन में होते हैं, चिंताओं से मुक्त हो जाते हैं। गुरु नानक देव जी ने भी कहा—

सकल रोग की औषध नाम॥

वैज्ञानिक तरीके से जान सकते हैं क्या? गोस्वामी जी भी कह रहे हैं—

नासे रोग हरे सब पीड़ा।

साहिब भी कह रहे हैं—

सबै रसायन मैं किया, नहीं नाम सम कोय॥

क्यों? क्या वैज्ञानिक तरीके से देख सकते हैं। बिलकुल। जिस समय सुषुम्ना खुलती है तो एंनर्जि खर्च होने से बचती है। इससे चेतना बढ़ती है। यही शरीर को विशेष उर्जा देती है, जिससे शरीर में आने वाले रोग भी ख़त्म हो जाते हैं। इसे वैज्ञानिक तरीके से भी जोड़ा जा सकता है। तब शरीर की क्रियाओं से ऊपर उठ जाते हैं। हालांकि नींद में भी ऊपर उठ जाते हैं, पर ब्रेन क्रियाशील रहता है। बाहर की कोशिकाएँ चाहे

बंद होती हैं, पर कहीं नींद में अधिक काम करते हैं।

एक ने कहा कि सपने में गुस्सा आता है। मैं मार देता हूँ। फिर मैं भागना चाहता हूँ। अटपटे सपने देखता रहता हूँ। मैंने कहा कि सुमिरन करके सोया करो। स्वप्न भी चिंतन पर आश्रित है। रजाई औढ़ी है; प्यास लगी और आप आलस कर गये तो नींद में भी पानी ढूँढ़ते हैं। कभी पेशाब करने का आसल कर देते हैं तो नींद में भी रात-भर पेशाब-घर ही ढूँढ़ते रहते हैं। कभी कर भी देते हैं। तो सपने में भी आन्तरिक कोशिकाएँ एक्टिव हो रही हैं; बाहरी चुप हो जाती हैं। मुसीबत में भी पड़ जाते हैं, प्लैनिंग भी होती है। बड़े-बड़े लोग आकर कहते हैं कि नींद में पेशाब कर देते हैं। क्योंकि नींद की कोशिका में प्रवेश लेने के बाद सुरति कुंद हो जाती है। तो ये चीजें हो जाती हैं।

तो इस तरह से हम सुषुम्ना में चल रहे हैं। वहाँ प्रवेश ले लिया तो सुरति परम चेतन हो जाती है। 1000 गुणा चेतना बढ़ जाती है। सुषुम्ना नाड़ी वर्तमान में भी बड़ा कमाल दिखा रही है। मोबाइल ऑफ करने पर भी टाइम चलता रहता है। उसे अन्दर से ऐसे जोड़ा गया है कि तब भी बंद नहीं हो रहा है। इस तरह सुषुम्ना भी किसी सीमा तक ऑन है ही है। बंद होने के बाद भी काम कर रही है। जब खुल जाती है तो फिर कहना ही क्या!

क्यों भटकता फिर रहा है तू तलाशे यार में।

रास्ता शाहरग में है दिलबर पे जाने के लिए॥

यह सर्वोपरि है क्या? नहीं। यह एक आयाम है, एक उपक्रम है आन्तरिक जगत में जाने का। पानी के जहाज़ में यात्रा करनी है तो कार, बस, स्कूटर आदि किसी साधन द्वारा बंदरगाह में पहुँच जाते हैं। फिर जलयान में बैठ जाते हैं। इस तरह सुषुम्ना नाड़ी ईश्वर की ओर बढ़ने में सहायता देती है; एक साधन है। गुरु नानक देव जी कह रहे हैं—

इड़ा पिंगला सुखमन बूझो, आपे अलख लखावे।

उसके ऊपर साँचा सतगुरु, अनहद सुरति शब्द समावे।
 धुन बाजे घोरा, मगन भया मन मोरा।
 शब्दै मारा मर गया, अब मरूँ न दूजी बार।
 शब्द ते पाइये नानका, गुरु शब्द लगा प्यार॥

पहले इसके माध्यम से चलना है। बच्चों को पहले नर्सरी में भेजते हैं। वहाँ खिलौनों से सिखाते हैं। मनके दिखाकर एक-दो-तीन सिखाते हैं। वो जान जाता है। इस तरह सुषुम्ना नाड़ी मदद करती है। इसी में उलझ कर नहीं रह जाना है। इसमें सुरति एकाग्र हो जाती है, इसलिए चेतन हो जाती है। चेतना एकाग्रता में है।

बुद्धिमान लोग मकान के अन्दर ऐसे रंग देते हैं, जिससे थोड़ी लाइट होने पर भी अच्छी रोशनी हो। वो रंग रोशनी को दीप्त करते हैं। इस तरह सुषुम्ना नाड़ी चेतना को दीप्त करती है। वहाँ जाकर चेतना में निखार आता है। स्लेटी रंग है तो रोशनी नहीं होती है। क्रीम रंग है या हल्का रंग है तो फौरन निखार आ जाता है। शरीर के अनुसार हम कपड़े भी पहनते हैं। शरीर पर उनकी परछाई पड़ती है। तो सुषुम्ना नाड़ी ऐसी है कि चेतना दीप्त हो जाती है। लेकिन आगे निकल जाते हैं तो चेतना का स्वरूप ही और हो जाता है। साहिब ने शुद्ध अध्यात्म सामने रखा। लोगों को बात समझ नहीं आई तो उलटवासियाँ कहने लगे। वो तो ठीक-ठीक बोल गये, पर तुम्हारे मस्तिष्क की क्षमता इतनी थी कि तुम समझ नहीं सके। एक मेरे पास लग्न निकलवाने आया। मैंने कहा कि किस महीने में चाहते हो? कहा—ननम्बर। मैंने कहा कि यह तो कोई महीना नहीं होता। नवम्बर होता है। एक ने कहा कि दवा खाने से अरमान लगा। मैंने कहा कि आराम होता है। अरमान और आराम दो अलग चीजें हैं। मैं सभी भाषा समझता हूँ। संस्कृत भी पढ़ा हूँ। एक से पूछा कि 'गुरु निंदक संतापे' में 'संतापे' का क्या मतलब है? कहा कि यह डोगरी शब्द है। मैंने कहा कि यह संस्कृत शब्द है। कहने का मतलब है कि जो उलटवासियाँ

कह रहे हैं, उन्हें बात समझ नहीं आई है।

...तो

आत्म में परमात्म दरशो, परमात्म में झाई ।

झाई विच साई दरशो, लखे कबीरा साई ॥

जब सुरति सभी से रहित हो जाए; जब संकल्प-विकल्प से परे हो जाए, फिर परमात्म अनुभूति बड़ी आसानी से हो जायेगी। पर मन पहुँचने नहीं दे रहा है। किसी-न-किसी चिंतन में आत्मा को, ध्यान को उलझाकर रखता है। यह तथ्य बड़ा बारीक है।

जिस गहराई को मैं समझा रहा हूँ, बड़ा कठिन है। मैंने समझा दिया। आप समझ गये; पर आप वाक्यबद्ध नहीं कर पाते हैं; वाणी नहीं मिलती है। मैं सरलता से बोल देता हूँ।

पिण्डू माइयाँ भी बैठी होती हैं, कहती हैं कि बस, कुछ नहीं चाहिए। एक माई से कुछ पूछा तो उत्तर नहीं दे पाई। मैंने कहा कि सत्संग नहीं सुनती हो क्या? तो उसका बड़ा टेक्निकल जवाब था। मैंने कहा कि सो रही थी क्या? कहा—नहीं। मैंने कहा कि इतने दिन से आ रही हो; सत्संग सुनती हो। वो बोली कि आपकी बातें आपही जानें, मैं तो केवल दर्शन करने आती हूँ। क्या वैज्ञानिक जवाब था! वो पी.एच.डी. हो चुकी थी। उसने जाना—

ध्यान मूलम् गुरु रूपम् ॥

साहिब कह रहे हैं—

मूल कबीरा गहि चले, कुल खेले संसार ॥

...तो मैं कह रहा था कि जब सुरति चेतन हो ऐसी अवस्था में पहुँचती है, जहाँ बुद्धि नहीं है, चित्त नहीं है, उस स्थिति में परमात्मा आपको खुद ही दीप्त करता है। जब आदमी इस अवस्था में पहुँचता है तो अत्यंत सूक्ष्म रूप में अनुभूति करता है।

पुहुप वास से पातला, पानी से अति झीन।

वायु से उतावला, दोस्त कबीरा कीन ॥

फूल की खुशबू से भी पतला, पानी से भी अधिक सूक्ष्म और वायु की गति से भी तेज़ है। ऐसा कबीर का दोस्त है। इंद्रियातीत है; इंद्रियों से नहीं जाना जा सकता है। व्योमातीत है; रंग-रूप आदि से भी परे है। शब्दातीत है; शब्दों में नहीं बताया जा सकता है। अनिर्वचनीय है; वाणी का विषय नहीं है। निरालंब है; किसी पर आधारित नहीं है, स्वयं में ओतप्रोत है।

आत्मा को इंद्रियों से नहीं समझ सकते हैं। दिव्य-दृष्टि से अनुभूति होती है। ऐसे समय इसमें तब न कर्म-इंद्रियों का, न शरीर के किसी अंग का, न तत्व का योग होता है। तब स्वयं ईश्वरीय तत्व का प्रकाश हमारी आत्मा के अन्दर आ जाता है। इसलिए—

आतम में परमातम दर्शो ॥

इसलिए चिंता का विषय है। मन के अनुसार ही चल रहे हैं। चिंतन, मनन, सुख, दुख का अनुभव पूरा मन है। इससे आत्मा पूर्णतया परे है। साहिब कह रहे हैं—

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहि न चीह्नत पंडित काजी ॥

पूरा झमेला ही मन का है।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से ॥

इंसान के अन्दर की ताकतें प्रबल हैं। नाम से उनकी ताकत कम हो जाती है।

आत्मा इन तत्वों से जैसे-ही अलग होती है तो उसी समय निजस्वरूप की अनुभूति स्वयं ही होने लग जाती है। वाह, मन और शरीर की अड़चन है। ये दोनों मन है।

देव निरंजन सकल शरीरा। तामें भ्रमि भ्रमि रहे कबीरा ॥

साहिब ने दोनों की खबर ली है।

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खानि।

शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जानि ॥

बार-बार समझा रहे हैं—

हंसा तू तो सबल था, अटपट तेरी चाल।

रंग कुरंग ते रंग लिया, अब क्यों फिरत बेहाल॥

....तो साहिब कह रहे हैं कि नाम के बिना सुरति अँधी है। यह मन-माया में फँसकर बेहाल हो गयी है। इसलिए—

सुरति संभाले काज है, तू मत भरम भुलाय।

मन सय्याद मनसा लहर में, बहत कतहुँ न जाय॥

कहीं बाकी न उलझना। धुनों को सुन रहे हो तो उसी का रूप हो जाओगे। वो है ही निरंजन।

सो सतगुरु मोहि भावे, जो आवागमन मिटावे।

आँख न मूँदे कान न रूँधे, नहीं अनहद अरुझावे॥

दरअसल नाम-दान की प्रकृया ही यही है कि गुरु सुरति को उज्ज्वल करता है।

जन्म जन्म का मसकला पल में डारे धोय॥

उसमें बदलाव ला देता है।

उठ जाग री मोरी सुरति सुहागिन जाग री।

क्या तू सोए मोह निशा में, उठ के भजन में लाग री॥

उस अवस्था में पहुँच जाती है, जहाँ शरीर का संपर्क नहीं रहता है। जप तप संयम साधना, सब सुमिरन के माहिं। कबीर जानत संत जन, सुमरन सम कछु नाहिं॥

साहिब कह रहे हैं—

ठाढ़े बैठे पड़े उताने, कहैं कबीर मैं वही ठिकाने॥

सुरति में साहिब है। इसलिए इसी को संभाल लो तो काम हो जायेगा।



भक्ति सिखाती है जीने की कला

कुछ मत-मतान्तर दुनिया में जीने की कला सिखाते हैं। पर कैसे जीना है, कैसे रहना है, यह तो माता-पिता भी बता रहे हैं। दूसरी ओर कैसे दुनिया छोड़नी है, यह अति महत्वपूर्ण है। जब इंसान दुनिया छोड़ने की कला सीख लेता है तो फिर रहने की कला ऑटोमेटिक आ जाती है। फिर वो किसी को दुख नहीं देता है, किसी से छल, कपट नहीं करता है। जब हम भक्ति-क्षेत्र में देखते हैं तो त्रुटियाँ मिलती हैं। यदि सही भक्ति करेंगे तो जीने की कला ऑटोमेटिक आएगी।

भक्ति स्वतंत्र सकल गुण खानी। बिनु सत्संग न पावत प्राणी ॥

हमारे लोगों की जीवनी बड़ी टॉप है। व्यवहार कितना प्यारा है! किसी को नहीं मार रहे हैं, माँस नहीं खा रहे हैं, शराब नहीं पी रहे हैं, अधिक संग्रह नहीं कर रहे हैं। यह सब भक्ति से आया।

अब लोग क्यों विरोध कर रहे हैं? क्यों हमारे लोगों को तंग करने की कोशिश करते हैं? क्यों हमें रुकावट देने की कोशिश की जाती है? पहली बात यह कि आप किसी की टेंशन मत लें। आदमी की सोच बहुत डाउन चली गयी है। दुनिया में देखें तो भाई भाई को टेंशन दे रहा है, पति-पत्नी का झंझट चल रहा है। तो बाहरी लोगों की क्या बात करें! यह है कलयुग का प्रकोप! आप ऐसी जिंदगी जीना सीखें कि कोई टेंशन दे तो मत लेना। जहाँ मेरा सत्संग होता है, वहाँ लोग एकाग्रता से टेंशन देने की कोशिश करते हैं। आप इन चीजों को आत्मसात् कर लें।

रामकोट में एक पंडित जी और पंडिताइन को हत्या का नुक़स था। पंडित जी ने कई यज्ञ करवाए, कई हवन किये, कई सयानों के आगे माथा पटका, पर 40 साल भटकने के बाद भी अच्छा नहीं हुआ। उसे शांति नहीं मिली। इतने में मेरे एक ट्रस्टी चैनसिंह से संपर्क हुआ। उसने कहा कि एक बार साहिब के यहाँ चलो। उसने कहा कि वो मुसलमान है। मेरे बंदे ने कहा कि मुसलमान वाली तो कोई बात नहीं है उनमें। आपको भ्रमित किया गया है। आप चलकर तो देखें। वो आया। मैंने कहा कि पहले संपर्क जोड़ो, नाम लो। उन्होंने परिवार सहित नाम लिया तो पूरा परिवार अच्छा हुआ। उनकी इच्छा हुई कि मैं रामकोट में आश्रम बनवाऊँ, सत्संग करूँ। उसने कहा कि रामकोट में भी लोग भ्रमित हैं; यहाँ भी सत्संग करें, लोगों को वहमों से छुड़ाएँ। मैं चाहता भी था। अब वहाँ विरोध भी था हमारा। मैं उसके लिए पूरा तैयार रहता हूँ। बॉक्सर बॉक्सिंग सीखता है तो उसमें मुक्का मारना ही काफ़ी नहीं है; वो मुक्का खाने की ट्रेनिंग भी लेता है। मैं हर तरह के व्यवहार के लिए तैयार रहता हूँ।

पंडित जी ने बड़ी श्रद्धा से प्रोग्राम रखवाया। मैं वहाँ पहुँचा। जैसे ही सद्गुरुदेव की जय बोली तो सड़क की दूसरी तरफ शोरगुल शुरू हो गया। एक दुकानदार था। वो उनका शरीक भी था। उसने छः तूते हमारी तरफ मुँह करके लगाए थे। 15-20 आवारा टाइप लोग इकट्ठा हुए थे। वो ऐसे नाचने-चिल्लाने लगे, जैसे कोई पागल हो। हमारे यहाँ का नाचना भी टॉप है, गाना भी टॉप है। उनका कुछ भी अच्छा नहीं है। उनका संगीत ऐसा है जैसे पहाड़ से कोई प्लेट गिर गयी हो। उनका नाचना भी अटपटा है। हमारे यहाँ का सौंदर्य भी टॉप है। कोई अंग्रेजन देखना, बड़ी सुंदर भी होगी, तो भी अच्छी नहीं लगती है। हमारे यहाँ की सुन्दरता भी बड़ी निराली है। यहाँ की बात ही निराली है।

...तो जब वो विघ्न डालने लगे तो एक ने कहा कि अभी जाकर कहता हूँ। मैंने कहा कि नहीं, ऐसा नहीं करना। वो भी कह सकते हैं कि हमारा प्रोग्राम है। लड़ाई-झगड़ा नहीं करना है। उन्हें बजाने दो। आखिर कितनी देर बजाएँगे! कोई टेंशन दे तो आप हिंसक मत हों; ऐसा लगे कि कुछ हुआ ही नहीं है। मैंने उन्हें कहा कि आप ध्यान मेरी तरफ रखें, शोर होने दें।

आज किसी को पीड़ा देना ही सबका नज़रिया हो गया है। यह कुदरती बात है। मैंने कहा कि कुछ नहीं बोलना है। धीरे-धीरे मेरी आवाज़ साफ होने लगी और वो थक गये। पर संगीत बजता रहा।

देखो, कुछ का घर ट्रेन की पटरी पर होता है। पर वो अपनी आदत में शुमार कर लेते हैं। आप अपनी आदत में शुमार कर लो।

तो जब सत्संग खत्म किया तो भंडारे का आयोजन था। पंडित जी ने पूड़ी, हलवा, पनीर सब बनाया हुआ था। अब वो लोग, जो विघ्न डाल रहे थे, सबसे पहले आकर लाइन में लग गये। एक ने मुझसे कहा कि वो लोग खाने के लिए आ गये हैं, उन्हें भगाएँ क्या? मैंने कहा कि नहीं, उन्हें सबसे पहले खिलाओ। यह कोई हमारे विरोधी नहीं हैं। उन्हें कोई मतलब नहीं था। उन्हें तो बस इस काम के लिए बुलाया गया था। हमारे देश में मशहूर बड़ी जल्दी हो जाते हैं। आस्ट्रेलिया आदि देशों में तो लोग मशहूर होना चाहते हैं। जानबूझकर आड़े-टेढ़े काम करते हैं। यहाँ हमारे देश में यह चीज़ आसानी से मिल जाती है। निंदा जल्दी फैल जाती है। यदि मैं स्वर्ग में भी आश्रम बनाऊँगा, वहाँ भी विरोध होगा। एक ने कहा कि पंजाब में आपका विरोध नहीं होगा। मैंने कहा कि होगा, पक्का होगा। उसने कहा कि मैं होने नहीं दूँगा। मैंने कहा कि तुम क्या कर सकते हो? जब मैं कहूँगा कि चंदा नहीं देना है तो विरोध होगा-ही-होगा। जब मैं संगत को पाखंड से सावधान करूँगा, सयाने-चेलों से सावधान करूँगा तो विरोध होना ही है। वो विरुद्ध हो जायेंगे। जो सयाना तबका है, उसे

परेशानी है। बाकी को भूत मनवाकर छोड़ते हैं। उन्होंने फील किया कि ये कौन से जीव हैं, मान ही नहीं रहे हैं। उनको बड़ी परेशानी है। लग रहा है कि व्यवसाय खराब हो गया है तो गाली भी बक रहे हैं। हमारे पंथ की तरक्की देखकर भी कुछ पंथ ईर्ष्या कर रहे हैं। 1968 में मेरी ब्यालियन कुल्लियाँ में आई। यहाँ भोले लोग थे। सिर्फ शादी होती थी तो जाग्रते होते थे। सतवा बगैरह 1985 के बाद आए। जो मर गये, यहाँ उन्हें हत्या मानते हैं। 2-4 साल बाद वो देवता हो जाता है। वो कह रहे हैं कि देवतों की निंदा कर रहा है। जो मोहरे रखे, हम उनके लिए कह रहे हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि के लिए नहीं कह रहे। हम उन मोहरों के लिए कह रहे हैं कि वहम में मत पड़ो। कुछ लोग इससे परेशान हुए। हम कह रहे हैं कि वहम में मत पड़ो। विरोध जमकर है। कुछ मुसलमान कह रहे हैं। हम शुद्ध हिंदू हैं। जो 7 नियम हम बता रहे हैं, वो हिंदूत्व को मजबूत करते हैं। जो हमारे 7 नियमों को नहीं मानते, भावे वो हिंदू कहलाए भी तो भी हम उन्हें शुद्ध हिन्दू नहीं मानते।

राजपुरे में आश्रम था। लोगों ने बन्ना काट लिया। मैं पहुँचा। उसने कहा कि कब्जा हो गया है। मैंने कहा कि यह तो ताजा-ताजा कटा है। एक ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में बन्ने ऐसे ही होते हैं, टेढ़े-मेढ़े होते हैं। मैंने अपने आदमी से पूछा कि यह कौन है? उसने कहा कि इसने दूसरी तरफ से बन्ना काटा है। फिर तीसरे ने तीसरी तरफ से बन्ना काटा था। काफ़ी तादाद में लोग इकट्ठा थे। वो लोग कहते हैं कि—

नक्क ते मक्खी बैन नी देनी। साहिब बंदगी रैन नी देनी।

मेरे बंदे ने कहा—

साहिब बंदगी इत्थे रैनी। तैनू मार तगड़ी पैनी॥

मैंने कहा कि हम लड़ने नहीं आए हैं।

...तो ज्योतिष लोग भी नाराज़ हुए, क्योंकि हमने ग्रह-नक्षत्रों से परे कर दिया। लड़का फेल हो जाए तो कहते हैं कि राहू ठीक नहीं है, मंगल की दशा खराब है। भाइयो, न राहू को कुछ लेना था, न मंगल को,

न शनि को। उसे क्या पड़ी कि आपके बच्चे को फेल कर दे। वो यह काम नहीं कर रहा है। वो तो देवता है। वो यह काम नहीं करता है। बस, कुछ लोग उसकी आड़ में अपना धंधा चला रहे हैं।

फिर हमारे लोगों का जीवन नाम लेकर ऑटोमेटिक टॉप हो गया। उनसे बात हुई तो हमारे लोगों ने कहा कि आप तो खा-पी भी रहे हैं, सयानों के चक्कर में भी हैं। यह कौन सी रुहानियत है! वो छटपटाने लगे। उन्हें लगा कि वो कमज़ोर हैं। उन्होंने अपने को तौला तो हीन फील हुआ। तो ईर्ष्या हुई। तो वो भी विरोध करने लगे। हम समाज में देखते हैं कि लड़की निकलती है तो कुछ लोग देखकर आपेक्ष करते हैं। वो ऐसे निकलती है, जैसे कुछ हुआ ही नहीं है। मैं भी गाड़ी में से दूर से ही देख लेता हूँ कि कोई जो मुझे देख रहा है, वो अपना बंदा है या नहीं। कोई बदतमीज लगता है तो मैं ऐसे निकलता हूँ जैसे मैंने उसे देखा ही नहीं है।

....तो हम सगुण भक्ति की कोई ख़िलाफ़त नहीं कर रहे हैं। यह तो एक दर्जा है। उसकी उपलब्धियाँ देखें। वो कोई ग़लत रास्ता नहीं बता रहा है, पर पहुँच उतनी नहीं है। वो भी बाल-बच्चे वाला है। वो एक दिशा दिया। हम छोटे बच्चे को आँगनबाड़ी भेजते हैं। वहाँ तहजीब सिखाई जाती है। सगुण-भक्ति भी वैसी है। उनके गुरु जी ने एक पोथी दिया। वहाँ तक ही नहीं रहो। जैसे आपके बच्चे हैं, गुरु जी के भी हैं। जैसे आपका रहन-सहन है, वैसा ही उनका भी है। जैसे आप माया में हैं, गुरु जी भी हैं।

बंधे को बंधा मिला, छूटे कौन उपाय।

कर सेवा निर्बन्ध की, पल में लेत छुड़ाय॥

वो भी माननीय हैं। पर वो आपकी आत्मा का कल्याण नहीं कर सकते हैं। दुनिया में सात गुरु हैं। सब माननीय हैं।

प्रथम गुरु माता पिता, रज वीरज के दाता॥

माता-पिता तो पहले गुरु हैं, जिनके रज-वीर्य से शरीर बना। इसलिए कहा—

मात पिता गुरु आज्ञा माने ॥

माता ने पाला, चलना सिखाया। वो आदरणीय है। पर संसार-सागर से पार नहीं कर सकी।

दूसरा गुरु गर्भ की दाई ॥

दाई ने जन्म के समय बड़े सुरक्षित तरीके से बाहर निकाला। वो भी आदरणीय है। नहीं तो कंधे अटक जाते हैं। वो बड़ी सावधानी से जन्म दिलाती है।

सब गुरु संसार में, अपनी अपनी ठौर ॥

सब अपनी-अपनी जगह हैं।

तीसरा गुरु जिन नाम रखा।

चौथा गुरु जिन विद्या दीना ॥

तीसरे ने नाम रखा, जिस नाम से संसार में जाने गये। चौथा वो भी गुरु है, जिसने विद्या दी।

पंचम गुरु संस्कार कराई ॥

विवाह, जन्म आदि के मौके पर जिसने संस्कार किया, वो भी गुरु है। उसने जीवन के संस्कार दिये।

छठा गुरु जिन राम नाम लखाया ॥

छठा—कुलगुरु। वो भी माननीय है।

सातवां जो सबसे तोड़ एक से जोड़ी।

सतगुरु तिसका नाम ॥

मेरा एक जगह प्रवचन था। मैं भोजन कर रहा था। इतने में मेरे कुलगुरु आ गये। मैंने उनसे दीक्षा नहीं ली थी और न ही उन्हें बुलाया था। वो अपने आप आ गये। मैंने उन्हें अपने आसन पर बिठाया। फिर उन्हीं थालियों में भोजन खिलाया, जो मेरे लिए थीं। फिर अपने वाले बिस्तर पर लिटाया और स्वयं नीचे लेटा। वो बड़े खुश होकर गये।

तो सगुण गुरु माननीय हैं। बड़े लोग माननीय हैं। चाहे आप

कितने भी पढ़े-लिखे हैं, बड़ों की इज्जत करना। उसे अनुभव अधिक है। किसी का भी अपमान करने से डरना। आप अपना अपमान नहीं चाहते हैं तो दूसरे के प्रति भी वैसा ही रहना। जैसा व्यवहार आप अपने प्रति चाहते हैं, वैसा ही दूसरों के प्रति रखना। पूरा झमेला ही खत्म हो जायेगा।

...तो सगुण के बाद निर्गुण भक्ति है। पर वो कठिन है। फिर उसमें भी सगुण की तरह दुबारा जन्म होगा। इस पर साहिब ने कहा—

सिद्ध साध त्रिदेवादि ले, पाँच शब्द में अटके।

मुद्रा साध रहे घट भीतर, फिर औंधे मुँह लटके॥

हम इससे अलग बोल रहे हैं। हम गुरु कृपा की बात कर रहे हैं। मन-माया के थपेड़े खाते हुए बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, सिद्ध, साधक भी इस भवसागर में झूलते रहते हैं, पर एक सच्चा गुरु आपको मन-माया के तीन लोक के झमेले से निकाल दूर पहुँचा देता है।

जो भंडारिन कीड़े को अपनी तरह बनाती है, वो उसका जीवन खत्म नहीं करती है। पर जब मैंने शिवकुमार को नाम दिया तो उस शिवकुमार को वहीं मार डाला था। वो बड़ा गंदा था। यह दुनियां का सबसे कठिन कार्य है। ऐसे ही गुरु की इतनी महिमा नहीं गाई गयी है।

सात दीप नव खंड में, गुरु से बड़ा न कोय।

कर्त्ता करे न करि सके, गुरु करे सो होय॥

पारस में अरु संत में, तू बड़ो अन्तरो मान।

वह लोहा कंचन करे, वह करिले आप समान॥



अनहद बाजे जम के थाना। पाँच तत्व करिहै घमसाना॥

पाँचों तत्व गुफा में जाई। नाना रंग करे तहँ भाई॥

अब भया रे गुरु का बच्चा

जिस दुनिया में हम सब जी रहे हैं, क्या सच में काल का देश है ?
जैसा कि आम दुनिया का इंसान विचार करता है कि हमारा संचालन
ईश्वरीय ताकत कर रही है। पर साहिब एक बात कहके चौंका रहे हैं।

यह संसार काल को देशा ॥

हम सब जिस दुनिया में हैं, यह काल का देश है।

गण गंधर्व ऋषि मुनि अरु देवा । सब मिल लाग निरंजन सेवा ॥

सभी काल की भक्ति कर रहे हैं।

ब्रह्मादि शिव सनकादि अज सुर, काल के गुण गावहीं ॥

ब्रह्मादि, शिव, सनकादि, सुर आदि काल के गुण गा रहे हैं क्या ?

उन्हें भी पता न चला ? हाँ, यही सत्य है।

जो रक्षक तहँ चीह्नत नाहीं । जो भक्षक तहँ ध्यान लगाहीं ॥

ऋषि, मुनि, पीर, पैगंबर आदि जितने भी साहिब से पहले आए,

सभी निरंजन तक जाकर सीमित हो गये।

जाय निरंजन माहिं समावे । आगे का कोई भेद न पावे ॥

प्रश्न यह उठता है कि त्रिकाल में जितने भी ऋषि, मुनि थे, सिद्ध,

साधक थे, सभी निरंजन तक गये। आगे कोई नहीं गया।

क्या इन मान्यताओं को हम सच मानें ? पहली बात हम देखते हैं—

अपने देश की उपासना पद्धति को। हमारे देश की उपासना पद्धति कैसी
है ? जो बात मैं बोल रहा हूँ, मान्य है क्या ? यह पूरा तीन-लोक काल की
भक्ति कर रहा है क्या ? इस बात पर विवाद हो सकता है, दुनिया में

मतभेद हो सकते हैं। पर हमें तथ्यों पर चिंतन करना होगा। हमें विचार करना होगा, हमें देखना होगा कि दुनिया के लोग आखिर किस ताक़त को सर्वेसर्वा मान रहे हैं। हम सब लोग मूल रूप से कौन-सी उपासना कर रहे हैं? ये चीज़ें निष्पक्ष होकर, ईमानदार बनकर सोचनी होंगी। अपनी सोच का दायरा बढ़ा करें। जब भी आप सच्चे बनते हैं तो सोच भी सत्य से संबंधित होती है। जब भी पक्षपात करते हैं तो छल, कपट, चारसौबीसी की भावना आती है।

हम निष्पक्ष होकर सोचते हैं तो वर्तमान में दो तरह की उपासना पद्धति नज़र आ रही है—सगुण और निर्गुण। लोग अधिकतर पाँच लोगों को मानते हैं—ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि शक्ति और निराकार निरंजन। पूरी-पूरी सच्चाई इसी में है कि लोग इन पाँचों की उपासना कर रहे हैं। आप देखते हैं कि मुख्य रूप से इन पाँचों की उपासना लोग कर रहे हैं। कुछ वैष्णव सम्प्रदाय से हैं। वो ठाकुर पूजा करते हैं, विष्णु जी को मानते हैं। जो कृष्ण जी भी उपासना कर रहे हैं, वो भी विष्णु जी को ही मान रहे हैं। जो राम जी भी उपासना कर रहे हैं, वो भी विष्णु जी को ही मान रहे हैं। तो कुछ शिवजी को, कुछ ब्रह्मा जी को मान रहे हैं। ब्रह्मा जी को किस तरह मान रहे हैं? वेदों के अधिष्ठाता ब्रह्मा जी हैं। जो वैदिक संहिता को स्वीकार कर रहा है, उसपर चल रहा है, वो ब्रह्मा जी को मान रहा है। वेदों के रूप में, ब्राह्मण के रूप में ब्रह्मा जी को पूजा जाता है।

फिर इनके रहन-सहन में अन्तर है। ब्रह्मा जी के उपासक वैदिक सिद्धांत का अनुकरण करते हैं, वेदमत के अनुसार चलते हैं। वैष्णव सम्प्रदाय के लोगों में मिलता है कि वो मुख्य रूप से विष्णु जी को अधिष्ठाता मानकर चलते हैं। खान-पान में भी अन्तर मिलता है। शैव सम्प्रदाय के लोग शिवजी को अधिष्ठाता मानकर चलते हैं। आदि-शक्ति के उपासक भी काफ़ी तादाद में हैं। पर उनके लोगों को देखें तो खान-पान के मामले में इतना परहेज नहीं है जितना कि वैष्णव में है। वैष्णव

में खान-पान को बड़ा महत्व दिया गया है। फिर निराकार-निरंजन की उपासना करने वाले हैं। हालांकि यह पूरा परिवार है। इसलिए कहा—

सगुण निर्गुण एकै जानौ ॥

तो निर्गुण उपासक सगुण उपासना नहीं करते हैं। वे पंच मुद्राओं और पंच नामों तक सीमित हैं। अगर मत-मतान्तरों की तरफ देखते हैं तो आपस में सामंजस्य दिख रहा है। जो ब्रह्मा जी को मान रहे हैं, विष्णु जी को भी मान लेते हैं। अब जो विष्णु जी के उपासक हैं, वो शिवजी को भी मान लेते हैं। इनके रिवाज भी मिलते-जुलते हैं। त्रिगुण भक्ति में आपस में मेलजोल है। कभी मंदिरों में देखते हैं कि ब्रह्मा की मूर्ति होती है, विष्णु जी की भी होती है, शिवजी की भी होती है और हनुमान जी की भी होती है। इस तरह एक वर्ग सगुण उपासना करता है। हमें चिंतन करना होगा कि ये सगुण उपासना किस तरफ एकाग्र कर रही है। यह कर्म, दया, परमार्थ आदि की सीख दे रही है। इसकी निंदा नहीं कर रहे। सनातन भी कोई खराब नहीं है। वो भी ये सब अच्छी बातें ही बोल रहे हैं। सवाल यह है कि लक्ष्य क्या है? इनसे दो तरह के मोक्ष—सालोक्य और सामीप्य की प्राप्ति होती है। स्वर्गादि और पितरादि लोकों की प्राप्ति होती है। वहाँ अमरत्व को प्राप्त करते हैं क्या? क्या वहाँ जाकर निश्चित हो जाते हैं? नहीं। वहाँ अभय-पद नहीं है। केवल किये हुए कर्मों का फल पाने के लिए जाते हैं। कर्मों का फल पाने के बाद पुनः मृत्यु-लोक में आते हैं। हम यहाँ यह बात बोल रहे हैं। हम निंदा नहीं कर रहे हैं। यही है प्राप्ति। यही शास्त्र भी कह रहे हैं।

साहिब धर्मदास से कह रहे हैं—

सतगुरु वचन बिहसि कर बोले। मुक्ति भेद कहूँ परदा खोले ॥
आदिहि पुरुष निरंजन कीन्हा। माया आदि ताहि कह दीन्हा ॥
तिहि संयोग भये त्रिय बारी। ब्रह्मा, विष्णु महेश विचारी ॥
चार मुक्ति के वे हैं राजा। पंचइ मुक्ति भिन्न उपराजा ॥

प्रथम मुक्ति सालोक बताई। मारग वाम ताहि कर आई॥
 दूजी मुक्ति समीप कहावा। निर्वाण मार्ग हो ताकहँ पावा॥
 तीसरी मुक्ति स्वरूप बखानी। अघोर मार्गही ताकर जानी॥
 चौथी मुक्ति कहिये सायोजा। सभेग मार्ग कलमा पढ़ रोजा॥
 चारों मुक्ति निरंजन लीन्हा। तिनके बसहि जीव सब कीन्हा॥
 अब सुन पाँचइ मुक्ति विचारा। धर्मदास परखो मतसारा॥
 जीवनमुक्ति दरस तब लहये। मृतकदसा होय नामहि गहिये॥
 सत्य वचन मुख सो उच्चरई। नाम सार हृदये महँ धरई॥
 नियम धर्म षट्कर्म अचारा। त्रिगुण फंद सों रहे निन्यारा॥
 सुरति निरति नाम सों राखै। सद्गुरु वचन सत्यकर भाखै॥
 लोभ मोह सों रह निह न्यारा। करम क्रोध ते आप उवारा॥
 दुख सुख की कछु संशय नाहीं। पाप पुण्य नाहीं चित माहीं॥
 अरथ द्रव्य मिथ्याकर मानै। जीवन जन्म नाम पहिचानै॥
 दया क्षमा कुल टूट कहावा। विष में हरषन चित में लावा॥
 सो जिव उतरहि भवजल पारा। जो यह चाल चलै निर्धारा॥

कह रहे हैं कि परम-पुरुष ने निरंजन को उत्पन्न किया और फिर बाद में आदि-शक्ति को उत्पन्न करके उसे दिया। उनके संयोग से ब्रह्मा, विष्णु और महेश की उत्पत्ति हुई। ये ही चार मुक्ति के राजा लोग हैं। पर पाँचवीं मुक्ति इनसे परे है। चारों मुक्तियाँ निरंजन की हैं इसलिए उसी के बस में सारे जीव हैं। पर सद्गुरु से सार नाम को प्राप्त करने वाला ही पाँचवीं मुक्ति की प्राप्ति करता है और वो ही षट्-कर्म, नियम, धर्म, पाप-पुण्य, लोभ-मोह आदि से परे हो भवसागर से सदा के लिए पार हो पाता है।

आखिर यह सगुण-भक्ति की धारणा कैसे चली ? इसका प्रचलन कैसे हुआ ? साहिब कह रहे हैं—

सगुण निर्गुण एकै जानौ ॥

सगुण-निर्गुण संबंधित हैं। इसलिए सगुण वाले थोड़ा विरोध निर्गुण का कर लेते हैं और निर्गुण वाले सगुण का विरोध कर लेते हैं। पर आपसी मामला है। जैसे घर में बाप और बेटे के बीच में भी विरोध हो जाता है, भाई और भाई के बीच में विरोध हो जाता है। पर इसकी एक सीमा है। यह आपसी मामला होता है।

अब निर्गुण उपासना क्या है? मेलजोल है। भिन्नता नहीं है। इसलिए कह रहे हैं कि एक ही बात है। आओ, देखते हैं कि क्या मामला है।

सगुण भक्ति करे संसारा। निर्गुण योगेश्वर अनुसारा॥

निर्गुण वाले कह रहे हैं—

जे जे दृश्यम् ते ते अनित्यम्। जे जे अदृश्यम् ते ते नित्यम्॥

जो भी दिख रहा है, वो नाश हो जायेगा। जो अदृश्य है, वही सच है। आप सुनते हैं कि फलाना निर्गुण उपासक था। निर्गुण पद्धति चलती है। यह पाँच मुद्राओं के गिर्द है। ये लोग सिद्धांत रूप से बाहरी उपासना नहीं करते हैं, कहते हैं कि अपने अन्दर में ही सब है।

तो यह क्या है? हमें मूल रूप से समझना होगा निर्गुण-भक्ति को। यह पंच मुद्राओं के गिर्द है। अन्दर की दुनिया में जाने के भी आयाम हैं। चाचरी, भूचरी, उनमुनि, अगोचरी और खेचरी—ये पंच मुद्राएँ हैं। तो इन्हीं के अनुसार चलते हैं। उनका तर्क है कि अपने अन्दर परमात्मा है, बाहर की चीजें नाश हो जाती हैं। ये पाँच पद्धतियाँ आन्तरिक-जगत में जाने के लिए हैं। साहिब ने इस पर कहा—

प्रथम पूरण पुरुष पुरातन, पाँच शब्द उच्चार।

सोहं सत् ज्योति निरंजन, रंकार ओंकारा॥

सबसे पहले सर्वशक्तिमान ने पाँच नाम पुकारे।

शब्दहि सगुण शब्दहि निर्गुण, शब्दहि वेद बखाना।

शब्दहि पुनि काया के भीतर, कर बैठा अस्थाना॥

जो जाकी उपासना कीना, उसका कहूँ ठिकाना ॥

यही सगुण है, यही निर्गुण है। साहिब कह रहे हैं कि जिसने जिसकी उपासना की, वो कहाँ पहुँचा, उसका ठिकाना कहता हूँ।

मूल रूप से हमारे पूर्वज सगुण नहीं बल्कि निर्गुण उपासक थे। सगुण उपासना तो सम्राट अशोक के काल से प्रारंभ हुई। उसने ही बुद्ध धर्म को अपनाने के बाद बौद्ध मठों में महात्मा बुद्ध की प्रतिमाएँ बनाईं। इससे पूर्व में उदाहरण नहीं मिल रहा है।

दुनिया का हरेक आदमी एक चीज़ चाह रहा है। चाहे किसी भी धर्म का है, वो अपने को जानना चाह रहा है। शुरू में सृजन के बाद जब परमात्मा की खोज में ब्रह्माण्ड को मनुष्य ने तलाश किया होगा तो आगे नहीं जान पाया होगा। क्योंकि संसाधन नहीं थे, जरिये नहीं थे। इंसान थक गया होगा, सुस्ता गया होगा। प्रारंभ में देखा होगा तो खोज की होगी। कोई लंबा टावर देखते हैं तो सोचते हैं कि किसी अमीर आदमी ने बनाया होगा। तो ब्रह्माण्ड को देखकर सोचा होगा कि बड़ी ताक़त ने बनाया है। पूर्व से पश्चिम तक देखा होगा। दौड़-दौड़कर थक गया होगा। पर संतुष्ट नहीं हुआ होगा। खूब चारों दिशाओं में देखने के बाद कुछ ने मान्यता कर ली होगी कि भगवान तो दिखता नहीं; यह पृथ्वी ही भगवान होगी, क्योंकि इसी के गर्भ से सब कुछ निकल रहा है। कुछ ने सोचा होगा कि जल ही परमात्मा है। इसी से जीवन है। कुछ ने हवा को भगवान माना होगा। उन्होंने सोचा होगा कि इसके बिना तो जीवित नहीं रह सकते हैं। कुछ ने सोचा होगा कि इन्हें बनाने वाली कोई ताक़त है। वो है परमात्मा। परमात्मा के प्रति सबके हृदय में एक आदरभाव है। हम सब माता के प्रति कृतज्ञ हैं, क्योंकि जन्म दिया, पाला। इस तरह परमात्मा को सब आदर देते हैं। जिस धरती पर चलते हैं, उसे ही परमात्मा मान इज्जत दी गयी। जिस सूर्य के प्रकाश में देख रहे हैं, उसे ही परमात्मा समझ आदर दिया। कहाँ तक पहुँचा? कुछ आज भी जल को परमात्मा मानते हैं। ऐसे लोगों

की कमी नहीं है, जो जल को परमात्मा मानते हैं, जो कृष्ण जी को परमात्मा मानते हैं, जो राम जी को परमात्मा मानते हैं। आखिर इनमें से सही क्या है? इस देश में एक चीज़ है कि जिसने जो चीज़ पकड़ी है, वो उससे आगे तो बढ़ना ही नहीं चाहता है।

भक्ति में आस्था का बड़ा महत्व है। यदि आस्था नहीं है तो भक्ति नहीं है। जो सबको मान रहा है, उसकी किसी में आस्था नहीं है।

एक आदमी ने कहा कि मैं सबकुछ खा जाता हूँ। चाहे बकरी मिले, चाहे गाय मिले, चाहे चींट, चाहे सब्जी। उसे क्या कहेंगे?

मैं चार लोगों को देखता हूँ—अपने अनुयायियों को। वो तो अपने ही हैं। फिर जिज्ञासुओं को। वो भी बड़े अच्छे हैं। जब बात समझ आयेगी, तो आयेंगे। फिर अपने निंदकों को देखता हूँ। मैं उन्हें भी अपना ही मान रहा हूँ। क्योंकि वो मेरी ही बात कर रहे हैं। चाहे किसी भी तरह से सही, मेरा ही नाम ले रहे हैं। उनका ध्यान मेरी ही तरफ है। वो भी आयेंगे। चौथे किसी तरफ नहीं है, न्यूट्रल हैं। मैं उन्हें खतरनाक मानता हूँ। मुझे ये अपने नहीं लग रहे हैं।

महात्मा बुद्ध को किसी ने पूछा कि कितने टाइप के लोग हैं? बुद्ध ने कहा कि एक शुभ कर्म करने वाले हैं, परमार्थ का काम करते हैं, परमात्मा की भक्ति करते हैं। दूसरे शांत दिखते हैं, लेकिन अपनी ज़रूरत के लिए कुछ भी ग़लत व्यवहार कर सकते हैं। तीसरे, अपने हितों के लिए दूसरों की जान भी ले सकते हैं। उन्हें राक्षस मानता हूँ। चौथे, अकारण भी किसी को पीड़ा दे सकते हैं। उनके लिए मेरे पास शब्दकोष नहीं है। वो ज़्यादा खतरनाक हैं।

तो जो कह रहा है कि सबको मान रहे हैं, वो ज़्यादा खतरनाक हैं। उनकी भक्ति का केंद्र नहीं है। वो अपने को बड़ा भक्त मानते हैं, पर वो भटक रहे हैं। वो अपने को बड़ा भक्त न समझें।

काला ब्राह्मण होने से नन्दवंश के राजकुमारों ने यज्ञ के आयोजन

में चाणक्य का अपमान किया। चाणक्य ने बदले की भावना से दासी पुत्र चंद्रगुप्त को ऊँचा उठाया, उसे अपना हक लेने के लिए प्रेरित किया। चंद्रगुप्त ने धीरे-धीरे सभी राजकुमारों को मार डाला और पाटलीपुत्र का सम्राट बना। पर दासीपुत्र होने से चंद्रगुप्त को लोगों ने वो सम्मान नहीं दिया।

सम्राट अशोक के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उसने बुद्ध धर्म को कलिंग के युद्ध के बाद नहीं अपनाया। जब उसे राजा के रूप लोगों द्वारा वो सम्मान नहीं मिल पाया तो दुखी होकर उसने बुद्ध धर्म को अपनाया। यहाँ पर एक भूल हुई। उसने बुद्ध मठ बनाए और वहाँ मूर्तियों की स्थापना की। उसकी लड़की ने श्रीलंका आदि देशों में बुद्ध धर्म का प्रचार किया। मैं बताना चाहता हूँ कि धर्मस्थान ही विवाद का विषय रहे हैं। बाद में क्षत्रिय राजा आए, बुद्धों को क्रतल किया गया, मार डाला गया। उन मठों में रहने वालों के पास धन बहुत था। वो बाद में विषयों में लग गये। क्षत्रियों का राज आया तो बुद्ध मठों से वो मूर्तियाँ निकाल दी गयीं और देवी-देवताओं की मूर्तियाँ आ गयीं। हमारे वर्ग ने देखा कि धन है तो देवी-देवताओं की स्थापना की। यहीं से सगुण-भक्ति की स्थापना हुई। महोम्मद बिन कासिम ने भी सारनाथ आदि मंदिरों पर आक्रमण किया और मस्जिदों का सृजन किया। देखा न, धर्मस्थान ही विवाद का विषय रहा न! फिर अंग्रेज आए तो उन्होंने पैसे के बल पर चर्च बनाए। वर्तमान में भी देखें तो सगुण-भक्ति में रोमांस आ गया है, नाच-गाना आ गया है। तो कम-से-कम बाहरी भक्ति में आत्म-कल्याण कम देख रहे हैं। मैंने कोई पाठी नहीं रखा, कोई रागी नहीं रखा। भक्ति इनमें छिप गयी है। इसी में सिमट कर रह गयी है। परिपक्व लोग इस भक्ति में नहीं मिल रहे हैं। व्यवसायिक हैं। कुंठितपना आ गया है। बुद्धिजीवी वर्ग इससे हटता जा रहा है। इसमें दूषण अधिक हो गया है। सावधान होना होगा।

फिर दूसरा निर्गुण रूप दिख रहा है। इसमें पंच मुद्राओं का महत्व है। मैं इन पाँचों का ज्ञाता हूँ। पर आज जो इनके अध्यापक लोग हैं, उनको बिलकुल भी जानकारी नहीं है। वो अपना व्यवसाय चला रहे हैं। समाज भ्रमित हो रहा है। भारत के 16 प्रमुख पंथ इन्हीं के गिर्द हैं। पर कोई नियम नज़र नहीं आ रहा है। साहिब ने ऊँची चीज़ दी।

...तो इंसान बहुत देर बाद अपने अन्दर घुसा है।

पहले तो निर्गुण उपासना थी। क्या है यह? देखते हैं। दोनों में अन्तर क्या है, समझते हैं। साहिब कह रहे हैं—

ज्योति निरंजन चाचरी मुद्रा, सो है नैनन माहिं।

तेहि को जाना गोरख योगी, महा तेज है ताही॥

चाचरी मुद्रा का प्रचलन गोरखनाथ के द्वारा हुआ। इसमें तीसरे तिल में साधक ध्यान एकाग्र करता है। साधक दिव्य प्रकाश देखता है। वो आनन्दमय है। मस्तिष्क की कोशिकाएँ जगने से त्रिकाल का ज्ञान होता है। किसी को उच्चाट करने की ताक़त भी आ जाती है। स्वाँसा नासिका के अग्रभाग पर रोककर किसी का ध्यान करो तो वहाँ उसका भी दम घुटेगा। सिद्धियाँ भी आ जाती हैं। इसलिए कभी जाकर कहते हैं कि संतान नहीं है, कृपा करो। इसलिए योगियों में अहंकार भी रहता है। इसमें प्राणायाम का महत्व है। यह स्वर-व्यंजन है; पहली स्टेज है। वो योगेश्वरों में गिने जाते थे। वो कह रहे हैं कि यह साधन करो, अलख ब्रह्म वहाँ प्रकाश रूप में विद्यमान है। उसे प्रकट करो। पर साहिब कह रहे हैं कि यह तो काल है।

शब्द ओंकार भूचरी मुद्रा, त्रिकुटी है अस्थाना।

व्यासदेव ताको पहिचाना, चाँद सूर्य सो जाना॥

त्रेता से पहले रामजी की उपासना नहीं थी। द्वापर से पहले कृष्ण जी की उपासना नहीं थी। पर कुछ उपासनाएँ पहले भी थीं। इसकी साक्षी मिल रही है। आगे और उपासना पद्धतियाँ हो सकती हैं।

तो वो आज्ञाचक्र में ध्यान एकाग्र करके दिव्य अनुभूतियाँ करता है, कहता है कि इसी से कल्याण होगा। इसमें भी प्राणायाम का महत्व आता है। इसमें कई लोक-लोकान्तर अपने अन्दर साधक देख लेता है। पर निर्गुण उपासना की एक सीमा है। मन और मृत्यु के नेटवर्क से नहीं छूट सकता है। पुनर्जन्म होगा। मन-माया की सीमा से हमेशा के लिए पार नहीं हो सकते हैं। फिर इसमें ब्रह्मचर्य की ज़रूरत है। गृहस्थ योग नहीं कर सकता है।

जहाँ भोग तहाँ योग विनाशा ॥

पर आजकल गृहस्थों को ही योग बताया जाता है। बताने वाला खुद भी गृहस्थ है। बच्चों में पढ़ने की क्षमता क्यों है? जब भी इंसान संभोग की तरफ भागेगा तो दिमाग के स्नायुमंडल पर असर पड़ जाता है। पर अचरज यह है कि योग की क्रियाएँ गृहस्थ को बताई जा रही हैं। बच्चों के लिए योग की अलग क्रियाएँ हैं, माता-बहनों के लिए अलग हैं, बूढ़ों के लिए अलग हैं। पर ये खिचड़ी करके बताई जा रही हैं और फिर 1000-1000 रूपये लिये जाते हैं। व्यापार चल रहा है। निर्गुण-भक्ति और भी शांति व्यवसाय की तरफ दौड़ रही है।

तीसरी है—अगोचरी मुद्रा।

सोहंग शब्द अगोचरी मुद्रा, भँवर गुफा अस्थाना।

शुकदेव ताको पहिचाना, सुन अनहद की ताना ॥

कुछ मत-मतान्तर यह नाम जप रहे हैं। वो सुरति-शब्द-अभ्यास करते हैं। इसका सृजन शुकदेव जी ने किया। वो बंकनाल में जाकर धुनें सुनते थे। इस पर साहिब कह रहे हैं—

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय।

सुरति समानी शब्द में, उसको काल न खाय ॥

आज भी कुछ मत-मतान्तर धुनें सुनते हैं। इन धुनों का ध्यान करने के लिए बोलते हैं। इन्हें ही अनहद नाद भी कह रहे हैं। इन्हीं को

परमात्मा भी कह रहे हैं। बंकनाल में जाकर इन्हें सुनते हैं। पर साहिब कह रहे हैं—

वो तो शब्द विदेह॥

शब्द दो बिना नहीं होता। जहाँ दो आ गये, वहाँ द्वैत आ गया। इसलिए खंडन नहीं किया। धुनों तक आनन्द तो है, पर वो सत्य नहीं।

शब्द कहीं तो शब्दै नहीं। शब्द हुआ माया की छाहीं॥

शब्द माया में होता है। इसलिए शब्द सत्य नहीं है।

सत् शब्द सो उनमुनि मुद्रा, सोई आकाश सनेही।

तामें झिलमिल जोत दिखावे, जाना जनक विदेही॥

राजा जनक उनमुनि मुद्रा में जाकर सहस्रसार में ध्यान लगाते थे। साहिब कह रहे हैं कि वो भी तीन लोक में आता है। आगे इनसे सूक्ष्म गंभीर कोशिकाएँ हैं। हम इसमें भी काल-पुरुष के दायरे से बाहर नहीं जा सकते हैं।

ररंकार खेचरी मुद्रा, दसवां द्वार ठिकाना।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, ररंकार को जाना॥

दसवें द्वार के रहस्य के बारे में मैंने कई बड़े-बड़े महात्माओं से बात की, बड़े-बड़े पंथों के अगुआ लोगों से बात की, पर सस्पेंशन लगा। कोई कहीं तो कोई कहीं बताता है। सुषुम्ना में तो ठीक है। पर कैसे खुले, यह पता नहीं है। कुछ कहते हैं कि गुरु जी ने कहा है कि नहीं बोलना है। वाह भाई! जानकारी कोई नहीं है। यह तो शिष्य से छल हुआ। सच ही तो है।

सुन साधु यहाँ है बड़ा धोखा,

ऊपर निर्मल अन्दर खोटा,

गुरु न देता सच्चा सौदा,

सतगुरु को पहचान रे।

हो ब्रह्मचारी बालापन से,

निर्लोभी हो रहता जग में,
 धन अपने की खाता हो जो,
 ऐसा कोई जान रे ॥
 निर्बन्ध हो सदा ही जग में,
 सत्य उसका हो हथियार,
 परमारथ में लगा सदा हो,
 ज्ञाता हो सब लोकों का,
 सतगुरु ऐसा मान रे ॥
 सत्य लोक का दे संदेशा,
 निःअक्षर में रहे समाय,
 नहीं दास हो अनहद का,
 पारस सुरति हो जिसके पासा,
 वो ही साहिब हमार रे ॥

तो उस समय पूरे शरीर के सिस्टम को सीज़ करना पड़ता है। जैसे नींद में जाते हैं तो स्थूल की कोशिकाओं को सीज़ करके जाते हैं। कुछ पर्दा आँखों पर पड़ा। दिखता नहीं है। कुछ पर्दा कान पर पड़ा। सुनाई नहीं देता है। कुछ नाक पर भी पड़ा। खुशबू-बदबू का आभास नहीं रहा। सिद्ध हो रहा है कि स्थूल अवस्था को सीज़ करके स्वप्न में जाते हैं। बगैर बंद किये सुषुम्ना में नहीं जा सकते हैं। रात-दिन एक साथ नहीं रह पायेंगे।

हमारी आँखें दृश्य देख रही हैं। हमारी नाक सूँघ रही है। बुद्धि विचार कर रही है। यह हमारे स्थूल शरीर से क्रियाएँ हो रही हैं। हम ये क्रियाएँ कर लेते हैं। हमारी जाग्रत अवस्था हमारे मस्तिष्क के माध्यम से बनती है। हमारे कुछ अंग काम कर रहे हैं इसमें। जब नींद में पहुँच जाते हैं तो स्थूल शरीर काम नहीं करता है। हम एक और शरीर में चले जाते हैं। यानी आँखों पर कोई शटर गिर गया। हमारी नाक सूँघ नहीं पाती है

यानी वहाँ की चेतना कम हो गयी। हमारे कान सुन नहीं पाते हैं। वहाँ भी एक शटर लग गया। एक ऐसी अवस्था आती है कि इन सारी कोशिकाओं ने काम करना बंद कर दिया। इनका संचालन ब्रेन कर रहा है। वो पूरा सिस्टम एक अद्धमूर्छित अवस्था में हो जाता है।

नींद में हमीं सपना देख रहे होते हैं। हममें याद भी होती है। नींद में अगर पहचान वाला आदमी मिले तो पहचान लेते हैं। यह कैसी याददाश्त थी? यह एक सूक्ष्म याददाश्त थी। यह स्थूल याददाश्त नहीं थी। यानी इस स्थूल याददाश्त के अन्दर भी एक याददाश्त है।

जस केले के पात, पात पात में पात।

अस ज्ञानी की बात, बात बात में बात।।

तो क्या सपने में मिलने वाले शरीर को आत्मा कह सकते हैं? नहीं। वहाँ ग़लत काम भी हो जाते हैं, भय भी लगता है, मारपीट भी होती है। उसे लिंग शरीर भी कहते हैं। तीसरा है—कारण शरीर। यह बड़ा अजीब है। यह एकाग्रता का शरीर है और याददाश्त से संबंध रखता है। इसमें भौतिक शरीर नहीं है। कहीं आप देखते हैं कि कोई कहीं खोया-सा बैठा है। हम यह सब भाषा समझ रहे हैं। हम समझ भी जाते हैं। कभी जाकर हिलाते हैं कि कहाँ हो! वो जहाँ का चिंतन कर रहा था, वहीं पहुँच गया था। एक शरीर द्वारा पहुँचा।

कभी-कभी किसी का ध्यान घूमता है। आप कहते भी हैं कि उनका ध्यान घूम रहा है। यह ध्यान साधारण चीज़ नहीं है। आपने याद नहीं किया। आपको एक आश्चर्य होता है। आप सोचते हैं कि यह क्या हुआ! इसका पहले ध्यान आया था। आप गंभीरता से चिंतन नहीं करते हैं। कभी-कभी हो जाता है। यह एक शरीर था। यह शरीर था—कारण शरीर। चौथा योगी लोगों को महाकारण शरीर ध्यान में प्राप्त होता है। पाँचवा है—ज्ञान देही। वो शरीर बड़ा अद्भुत है। इस शरीर में याददाश्त नहीं होती है। उस अवस्था में सांसारिक बातें बहुत कम याद होती हैं।

साधक अंदर की दुनिया का अनुभव करता है। छठी है—विज्ञानदेही। इसमें आनन्द है। ब्रेन ही चिंता, दुख आदि को अनुभव करता है। उसे याद है। पर उस समय यह बात नहीं होती है। उस समय आप ब्रेन की परिधि से बहुत दूर निकल जाते हैं। नींद में चले जाते हैं तो स्थूल की पहुँच नहीं है। बड़ी अद्भुत देही है। पंच मुद्राएँ छठी तक जाती हैं। वहाँ जाकर निराकार में समाते हैं। पर आत्मनिष्ठ नहीं होते हैं। योग यहाँ तक जाता है। एक शरीर में होते हैं। इसमें भी मन गौण रूप में रहता है। योग की पराकाष्ठा यहाँ तक है। योग तुरीयातीत तक पहुँचता है। इसमें बिना आँखों के देखता है, बिना कान के सुनता है, बिना नाक के सूँघता है, बिना हाथों के नाना कार्य करता है।

इस तरह छः शरीर हैं, अवस्थाएँ हैं। जाग्रत में स्थूल शरीर काम कर रहा है। अभी चिंतन अलग है। स्वप्न वाली अवस्था आती है तो चिंतन अलग हो जाता है। तीसरी अवस्था है—सुषुप्ति। उस समय ध्यान का केंद्र नाभि-क्षेत्र हो जाता है। जाग्रत में ध्यान का केंद्र आँखों में रहता है। सुषुप्ति में पहुँचता है तो ध्यान कॉमा में पहुँच जाता है यानी चेतना अत्यंत कम हो जाती है। पर एक स्पन्दनहीन चेतना तो भी रहती है। स्वप्न में भी याद है कि फलाना हूँ। मूल रूप से सभी अवस्थाएँ एक ही हैं। बस, चेतना की न्यूनता और अधिकता हो जाती है। जैसे वोलटेज कम ज्यादा हो जाती है।

जो वर्तमान अवस्था है, जाग्रत अवस्था है, इसमें मन काम करता है। स्वप्न का आधार हमारा अंतःकरण होता है। तब वो सक्रिय होता है। जाग्रत में मन सक्रिय है। जो अनुभव कर रहे हैं कि लहरसिंह हूँ, यह मन है। आपको याद है कि मेरी माँ है, यह चित्त है। चित्त मन का रूप है। **कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से॥**

देखें, स्वप्न में भी जाते हैं तो अलग चेतना है। वहाँ अभी से 16 गुणा अधिक कम चेतना होती है। स्वप्न में मानसिकता और हो जाती है।

इसमें भी मन तो है न! स्वप्न में भी मन के दायरे से परे नहीं हैं। स्वप्न में हैं, तो भी मन की पकड़ में हैं। इसलिए इसे भी शुद्ध अवस्था नहीं कह सकते हैं। तीसरी है—सुषुप्ति। इसमें न्यूनतम चेतना रहती है। बेहोशी कह लो। इसे भी आत्मावस्था नहीं कह सकते हैं। वो अवस्था भी एक भ्रमांक अवस्था है। चौथी है—तुरीया। यह क्या है? यह भी मन की अवस्था है। इस तुरीया से आन्तरिक लोक देखते हैं, कई आन्तरिक जगहों को देखते हैं। उस समय भी यही अन्तःकरण साथ में होता है। यह अन्तःकरण जन्म-जन्मान्तर तक साथ नहीं छोड़ता है। यही मन है। पर इसमें थोड़ा आत्मा का भी मिश्रण है। अगर उस अवस्था में शिवजी मिला तो याद रहता है कि शिवजी मिला। यानी वहाँ भी मन के दायरे से बाहर नहीं निकले। वहाँ भी हम ऑर्टिकल्स को देख पहचान रहे हैं। वहाँ भी मन है। पर योगेश्वर ऑर्टिकल्स से परे महाशून्य में पहुँचते हैं। इसमें तुरीयातीत अवस्था बनती है। बड़ा आनन्द मिलता है। बहुत ही कम मन की चेतना होती है। पर वहाँ भी मन है। ऑर्टिकल्स का बोध नहीं होता है। योगेश्वर यहीं तक जाते हैं। वो मन से नहीं निकल पाते और—

मनहिं स्वरूपी देव निरंजन, तोहि रहा भरमाई॥

आपने कुछ खाया तो सोचते हैं कि बड़ा मज़ा आया। नहीं, यह मज़ा मन को मिला।

कुछ कहते हैं कि मन को प्रसन्न रखो, मन को नाराज़ मत करो। ऐसा क्यों? हमारी बात तो बिलकुल विपरीत है। ऐसा इसलिए कहा जाता है कि वो निराकार की भक्ति करते हैं।

निराकार मन ही को जानो।

पर उन्हें भी नहीं पता है कि वो ऐसा क्यों कह रहे हैं। हम उलटा कह रहे हैं—

मनहिं आहे काल कराला। जीव नचाए करे बेहाला॥
जीव को संग मन काल रहाई। अज्ञानी नर जानत नाहीं॥

हमारा व्यवहार किसी से भी, कभी भी नहीं मिलेगा। बाकी रिश्तेदारों-नातेदारों से सामंजस्य नहीं हो पा रहा है। बाकी सब एक जैसे हैं। कौवे को कौवे से मिलने में कोई देर न लगेगी। लेकिन कौवे को हंस के साथ मिलने में देर लगेगी। आप हर साइड से अलग हैं। कौवे को देखें तो झगड़ालू हैं, अशांत हैं। कौवा गंदा जीव है। एक तो काला है, रंग-रूप से भी हीन है। दूसरा खान-पान से भी बेकार है। जो भी गंद मिला, चोंच मारता है। कौवे की पूरी करतूतें बेकार हैं। सूअर में भी आत्मा है, पर यह थोड़ा मतलब है कि उसे गले लगाकर घूमो।

....तो साहिब ने आत्मा को मजबूत बनाया है। जो सुख-दुख की अनुभूति कर रहे हैं, ब्रेन से है।

मन ही करता मन ही भोगता।

यह मन की अवस्था है। अच्छी सब्जी खाई, बड़ा मज़ा आया। किसको मज़ा आया? शरीर को। इसी आनन्द के पीछे दुनिया पड़ी है। आपके व्यक्तित्व के पीछे जो सूक्ष्म आत्मा कैद है, उसे भ्रमित किया गया है। इसलिए अन्तःकरण के हर फैसले को अपना फैसला मान रही है, इसके सुख को अपना सुख मान रही है। वहाँ चाँद, सूर्य, तारे प्रकाश नहीं करेंगे। वहाँ गुरु प्रकाश कर देगा।

जो अपने को महसूस कर रहे हैं, इसके पीछे आत्मतत्त्व फँसा है। आत्मा को मन ने भ्रमित क्यों किया है? क्या फायदा है? जितनी भी आनन्द की अनुभूति है, इसमें आत्मा की उर्जा चाहिए। उसके बिना कहीं इसे मज़ा नहीं मिल सकता है।

तो वो कह रहे हैं कि मन को प्रसन्न रखना। मन को न दुखाना। वो निराकार परमात्मा बोल रहे हैं, इसलिए ऐसा बोल रहे हैं। हम उलटा बोल रहे हैं—

जो मन पर असवार है, ऐसा बिरला कोय।।

जब आप कहते हैं कि दुनिया विरोध कर रही है तो मैं कहता हूँ

कि ठीक चल रहे हो। साहिब ने कहा—

चारों तरफ मार मार जब धाएँ। तब लालों के लाल कहाए॥

...तो इसी व्यक्तित्व के बीच आत्मतत्त्व है। वो केवल अनुभव कर रहा है कि मैं देही हूँ। नाम-दान के समय इसी व्यक्तित्व के अन्दर से मथकर रूह को एकाग्र किया है। यह काम दुनिया में कोई नहीं कर सकता है। अब वो रूह मन से लड़ाई कर रही है। पहले नहीं कर पा रही थी।

एक का फ़ोन आया। उसने कहा कि लखबिंदर बोल रहा हूँ। मैंने कहा कि कहो। कहा कि एक महात्मा मेरे पास आया। उसने कहा कि बताओ, अन्दर की दुनिया में कहाँ तक जाते हो? उसने कहा कि गुरु जी, हमें आपपर भरोसा तो है, पर मैं अटक गया, इसलिए कृपा करो और थोड़ा अन्दर पहुँचाओ ताकि हम भी कहीं बात करने योग्य हो जाएँ। वो महात्मा कह रहा था कि साहिब-बंदगी में कुछ नहीं है, मुझसे दीक्षा ले लो।

मैंने कहा कि तुम्हें बहुत दूर पहुँचा चुका हूँ। वो भी अचरज में आ गया कि कुछ मिला नहीं। मैंने कहा कि मन, बुद्धि आदि के दायरे से धीरे-धीरे बहुत ऊपर उठा लिया है। एक आन्तरिक बदलाव ला दिया है। यह तुम ऊँचे नहीं उठे क्या! दुनिया के लोग उलझे हैं। इन्हीं में तो आत्मा फँसी हुई है। तुम निकलते जा रहे हो। तुम कैसे कह रहे हो कि कहाँ तक पहुँचा हूँ! उसने कहा कि पहले आपने यह बात नहीं बताई थी।

मैंने कहा—ओ लखबिंदर! जितने भी साधक हैं, मन-माया के थपेड़े खाते हैं। तुम्हें तीन-लोक के झमेले से ही निकालकर दूर पहुँचा दिया है। वो बोला कि कल बाबे के पास जाऊँगा। वो गया। गोष्ठी की। बाबे ने कहा कि तू आगे है।

तो कहीं भी पहुँचा हो, जब तक इनके दायरे में है, कहीं भी नहीं पहुँचा है। साहिब ने कहा—

अभी नहीं गुरु का बच्चा, अभी कच्चा रे कच्चा॥

हम यह सोचते हैं कि भविष्य बताने वाला मिल जाए तो कहीं पहुँचा हुआ है, कहीं रोशनी मिल जाए तो समझो कि कहीं पहुँचा हुआ है। हमारी धारणा यही बनी हुई है। साहिब कह रहे हैं—

**अबहीं नाहीं गुरु कै बच्चा, अबहीं कच्चा रे कच्चा।
कहीं गुप्त कहीं परगट होवे, गोकुल मथुरा काशी।
पवन चढ़ावे सिद्ध कहावे, होय सूर्य लोक का वासी।
तबहूँ नाहीं गुरु कै बच्चा, अबहीं कच्चा रे कच्चा॥**

कह रहे हैं यदि इतनी शक्तियाँ आ जाएँ कि एक जगह से प्रगट होकर दूसरी जगह पहुँच जाए यानी काशी से गुप्त होकर दिल्ली में प्रगट जो जाए या फिर मथुरा से गुप्त होकर कैलाश पर्वत पर प्रगट हो जाए तो भी समझो कि अभी कच्चा ही है।

**जल के ऊपर आसन मारे, जो बोलै सो होवेगा।
वेद विविध के मारग छाने, तन लक्कड़ करि डारेगा
जोगी होयके जोग कमावे, रोम रोम करि छानेगा।
तीन लोक में कछु न छोड़े, पूरा जोग कमावेगा।
तबहूँ नाहीं गुरु का बच्चा, अबहीं कच्चा रे कच्चा॥**

चारों वेदों का अध्ययन कर ले, तो भी कच्चा ही है, क्योंकि मन के दायरे से नहीं निकला। कोई गुफा से नहीं निकलना है। ऐसा नहीं है। इसका दायरा बहुत लंबा है। जहाँ तक याद का दायरा है, वहाँ तक मन है। मन को तब तक कण्ट्रोल नहीं किया है, जब तक याद है। जब तक होश है कि मैं हूँ, तब तक समझो कि मन है। जब संकल्प भी नहीं हो, विकल्प भी न हो, तब मन से परे है।

जो मन पर असवार है, ऐसा बिरला कोय॥

अब योग से क्या होगा? इस पर साहिब ने गोरखनाथ से कहा—
इड़ा विनशे पिंगला विनशे, विनशे सुखमन नाड़ी।

कहैं कबीर सुनो हो गोरख कहाँ लगाइहों ताड़ी॥

साहिब ने कहा कि मौत के साथ ये नष्ट हो जायेगा। फिर तुम कहाँ ध्यान लगाओगे? तुम्हारा मूल ही कमजोर है। इसलिए साहिब कह रहे हैं—

अभी कच्चा रे कच्चा॥

वाक् सिद्धियाँ भी आ जाएँ तो भी कच्चा है। आज तो कोई पुत्र दे दे तो कहते हैं कि बहुत पहुँचा हुआ है।

कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा।

गृह छोड़ भये सन्यासी, तऊ न पावत पारा॥

क्योंकि तुम मन के दायरे में तभी भी रहोगे। मन ही बैरी है।

तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी मन॥

फिर पक्का कब है?

सार नाम सतगुरु से पाय, क्षर अक्षर से पारा।

अब भया रे गुरु का बच्चा, अब पक्का रे पक्का॥

गुरु से सार नाम पाए, जो क्षर-अक्षर से परे हो, तब पक्का है।

जब गुरु यह ताक़त देता है, तभी मन के दायरे से निकल सकता है। लड़ाई ही मन से है। जितनी क्रियाएँ हैं, मन है, जो इच्छाएँ हैं, मन है। साहिब ठीक तो कह रहे हैं—

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहिं न चीह्नत पंडित काजी॥

तो नाम के बाद यह सब छूटता जाता है। क्योंकि तब मन की स्थिति समझ में आ जाती है। अंतःकरण का पूरा हाल साधक अच्छी तरह से समझने लग जाता है।

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशे हो रहे।

दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए॥

अन्दर में बड़ी लूट हो रही है। यही मन मित्र है; यही मन शत्रु है; यही मन शूरमा है; यही मन कायर है। मान लो लहरसिंह ने गुप्ता जी

को गाली दी। गुप्ता जी के मन ने कहा कि मारो। पर देखा कि लहरसिंह तगड़ा है तो कहा कि रहने दो। यानी मन कायर हो गया। पर कभी ऐसी स्थिति पर भी कहता है कि मारो, जो होगा, देखा जायेगा। तो मन शूरमा हो गया। जैसे बंदर को बाजीगर नचाता फिरता है, ऐसी ही यह आत्मा को नचा रहा है। जब तक यह समझ नहीं आ रहा है, तब तक कहीं नहीं पहुँचे हो। दुनिया ने ग़लत समझा। भ्रमित शास्त्रों को पढ़कर दुनिया भ्रमित हो गयी। देखा-देखी दुनिया लगी है। पर मन को कोई समझ नहीं पा रहा है। यह बड़ा ताक़तवर है। इस नाम के बिना कोई भी जीव इसकी कैद से पार नहीं हो सकता है।

कबीर साहिब युग-युग से हंसों को चेताने आते हैं। कबीर साहिब धर्मदास को यह रहस्य सुनाते हुए कह रहे हैं।

परम-पुरुष ने साहिब से कहा—

हौ ज्ञानी तुम अंश हमारा। वचन सत्य मैं कहौ पुकारा॥
जो कोई साध मोह को साधे। लोभ मोह तृष्णा कहवाधे॥
तृष्णा बांध साध जो पावे। आवत लोक वार नहिं लावे॥
तृष्णा लोभ काल व्यवहारा। जो त्यजि है सो हंस हमारा॥

परम-पुरुष ने कहा कि हे ज्ञानी (कबीर साहिब)! तुम मेरे अंश हो। तुम जीवों को लेने निरंजन के देश में जाओ। जो जीव मोह, लोभ, तृष्णा आदि से परे हो जाए, उसे अमर लोक ले आओ। क्योंकि तृष्णा, लोभ आदि काल का व्यवहार है, जो इन्हें त्याग दे, उसे अपना हंस समझकर ले आना।

साहिब ने कहा—

तत्क्षण ज्ञानी बिनती ठानी। वचन तुम्हार कोई नहिं मानी॥
भक्तहीन आँधर दुनियाई। घट घट फाँस काल गड़ नाई॥
कोट वार जीवन परमोधा। कोई एक सत्य शब्द मम सोधा॥

साहिब ने कहा कि आपकी बात कोई नहीं मानता है। घट-घट

में काल ने फाँस लगाई हुई है। अँधी दुनिया आपकी भक्ति से हीन है। मैंने करोड़ों बार जीवों को समझाया, पर कोई एक ही मेरी बात को समझता है।

जाहु वेग तुम वा संसारा। जो समझो सो उतरे पारा॥
वार वार तुम जग में जाई। आपन कह सब कथा सुनाई॥

परम-पुरुष ने कहा कि तुम जल्दी से संसार में जाओ और जीवों को समझाओ। जो समझता है, वो पार हो जाएगा। तुम बार-बार संसार में जाओ और अमर-लोक की कथा सुनाओ।

धर्मदास तब जग हम आवा। आपन कह जीवन समझावा॥
युग अशंख अर्ब बहु बीता। कै कै बार पृथ्वी हम कीता॥
शेष गणेश महेश न ब्रह्मा। विष्णु नाम धरती नहिं थम्हा॥
यह युग बीत अनन्तन बारा। युग युग आयेउ जिव रखवारा॥
नर जाने जुलहा अवतारा। साधन काज देह हम धारा॥
अगम शब्द नहिं जात गँवारा। बार अनेक जगत पुकारा॥
जीवन बारहिबार पुकारा। नर देही बहुतें हँकारा॥

साहिब कह रहे हैं कि हे धर्मदास ! तब मैं संसार में आया और जीवों को समझाया। असंख्य युग हो गये हैं; कई-कई बार मैं पृथ्वी पर आता रहा हूँ। मैंने जीवों को बार-बार पुकारकर समझाया, पर कोई भी मेरी बात को नहीं समझा।

जीवन सों घर घर कहा, नहिं माने उपदेश।

गुप्त भाव हम तब भये, चले अमरपुर देश॥

कह रहे हैं कि मैंने घर-घर जाकर जीवों को समझाने का प्रयास किया, पर कोई भी मेरा उपदेश नहीं माना। तब ऐसे में मैं गुप्त हो गया और अमर लोक चला आया।

वह सत बोले पुरुष तब, सुनो सँदेशी अंश।

भवसागर बहु दिन रहे, केतक लाये हंस॥

सत्पुरुष ने कहा कि तुम संसार-सागर में बहुत दिन रहे, पर कोई हंस लेकर क्यों नहीं आए ?

रहे शब्दसों तब कर जोरी । बंदीछोर विनय सुन मोरी ॥
काम अरु क्रोध मोह औ लोभा । माया फँसै जीव पर शोभा ॥
सकल जीव अघ आतम पुंजा । फिरि फिरि परहि जनम के कुंजा ॥

साहिब ने कहा कि सब जीव माया में फँसे हैं । कोई भी काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि से नहीं छूट पा रहा है । इस कारण से बार-बार जन्म धारण करना पड़ रहा है ।

तब समरथ अस वचन पुकारा । दुनिया जात काल मुख द्वारा ॥
हो ज्ञानी तुम बहुर सिधाओ । शब्द देव जीवन मुक्ताओ ॥
देव परवाना अपने हाथा । सकल जीव जो होय सनाथा ॥
तिनका तोरहु यम का लेशा । माथे हाथ दे कहो संदेशा ॥
नरियर धोती तान मँगै हो । सत्य शब्द दे अंक चढ़ै हो ॥
येही शब्द येही परवाना । सत्य शब्द निश्चय कर जाना ॥
संत समाज सुनो तुम महिमा । गुरुपद परस दरस एक लहमा ॥
तेहि समधन नहिं जग में औरा । कोट जनम तीरथ फल दौरा ॥
जो कोई साध मंदिर में आवे । चरण पखार चरणामृत लावे ॥
नारी पुरुष एक मत कीजे । सतगुरु दया अमीरस पीजे ॥

तब परम-पुरुष ने कबीर साहिब को सार-नाम (निःशब्द शब्द) देते हुए कहा कि यह नाम लेकर पुनः संसार में जाओ । इस शब्द से जीव आयेगा ।

काम क्रोध तृष्णा तजे, तजै मान अपमान ।

सतगुरु दया जाहि पर, यम शिर मरदे मान ॥

जिस पर सद्गुरु की कृपा हो जाती है, वो काम, क्रोध, तृष्णा, मान, अपमान आदि को त्यागकर काल का घमण्ड तोड़ देता है ।

तो जब गुरु नाम देता है तो इससे लड़ने की ताकत आती है ।

रखबंधु में एक साँड था। बड़ा ताक़तवर था। एक दिन मैंने देखा कि एक 10-12 साल का लड़का उसे नचा रहा था। जब वो लड़का चल रहा था तो साँड भी चल रहा था, जब लड़का दौड़ रहा था तो साँड भी दौड़ रहा था, जब लड़का रुक रहा था तो साँड भी रुक रहा था। बात यह थी कि उसके नाक में नकेल थी। इसी कारण वो छोटा-सा लड़का इतने ताक़तवर साँड को नचा पा रहा था।

इस तरह मन पर गुरु नकेल डाल देता है। फिर जहाँ चाहो, घुमाओ। इस तरह गुरु-कृपा से मन काबू हो जाता है।

सतगुरु मोर रंगरेज चुनरि मोरी रंग डारी॥

एक ने नाम लिया। उसका बेट चला गया था। नाम लेने के कुछ दिन बाद उसने कहा कि गुरु जी, अब मुझे उसके चले जाने का दुख नहीं सताता है। पहले कभी भी बात चलती थी तो रो पड़ता था। अब मैं उस दुख से प्रभावित नहीं हो पाता हूँ।

मन हँसे मन रोवे.....॥

यह अन्तर आया।

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहिं न चीह्नत पंडित काजी॥

साहिब कह रहे हैं—

सतगुरु मोर शूरमा, कसकर मारा बाण।

नाम अकेला रह गया, पाया पद निर्वाण॥

हम बदल देते हैं आदमी को। दुनिया कहती है कि उधर न जाना। ठीक ही कहती है, क्योंकि हम दुनिया के काबिल ही नहीं छोड़ते हैं।

कबीरा खड़ा बाजार में, लिये लुहाटा हाथ।

जो घर फूँ के आपना, चले हमारे साथ॥

बदल दिया। बिलकुल बदल दिया। आप दुनिया में रहो। बीबी-बच्चे को कहीं जंगल में नहीं फेंकना है।

सो सतगुरु मोहि भावे, जो भोग में योग दिखावे॥

पूरी दुनिया नशे में घूम रही है। दुनिया पागल ही तो है।

जगत की नजर में भगत गया। भगत की नजर में जगत गया।।

बस, सुमिरन में रहना।

छन सुमिरे छन बीसरे, यह तो सुमिरन नाहिं।

आठ पहर बीना रहे, सुमिरन सोइ कहाहीं।।

24 घंटे सुमिरन होता रहे। फिर क्या मजाल है कि मन एक कदम भी आगे बढ़े।

एक ने कहा कि आपने नाम के समय कहा था कि तन, मन, धन तीनों दो। मैंने सच्चे हृदय से दे दिये। आपने कहा कि पहले जो अच्छा-बुरा किया, नहीं पूछ रहा हूँ। अब यह शरीर मेरा हो चुका है, अब कुछ गलत नहीं करना। फिर कहा कि धन भी मेरा है। आँख बंद करके यानी विचारकर दिया। अब इसे किसे गंदे काम में नहीं लगाना, किसी पर झूठा मुकद्दमा नहीं करना। आपने कहा कि आज से यह तन, मन, धन मेरा हो चुका है; मेरा समझकर इस्तेमाल करना। फिर आपने कहा कि तन वापिस कर रहा हूँ। गोरखनाथ जिसे नाम देता था, अपने साथ-साथ घुमाता था। आपने कहा कि ज़रूरत होगी तो बुला लूँगा, पर अभी वापिस कर रहा हूँ, क्योंकि घर में माता-पिता होंगे; सेवा करो; बंधन में नहीं डाल रहा हूँ। फिर कहा कि धन भी वापिस कर रहा हूँ। ज़रूरत पड़ेगी। अपनी इच्छा हो, उतना गुरु सेवा में लगा देना। पर यहाँ भी बंधन में नहीं डाल रहा हूँ। फिर आपने कहा कि मन वापिस नहीं कर रहा हूँ। अपने पास ही रख रहा हूँ। अब गुरु जी, यह बताओ कि यदि मन आपके पास है तो हमें यहाँ कौन तंग कर रहा है?

मैंने कहा कि सच में अपने पास में रखा है। यह करार हो चुका है, यह समझौता हो चुका है। मैंने सच में ले लिया। यह बहुत शैतान चीज़ है। यह डुबायेगा। माँ छोटे बच्चे को चाकू नहीं देती है। वो जानती है कि काट लेगा। इस तरह मन खतरनाक है, इसलिए वापिस नहीं किया है।

वो बोला कि फिर यह तंग कौन कर रहा है ? मैंने कहा कि सुनो, कभी हम पशुओं को जंगल में, खुली जगह बाँधते हैं। रस्सी को खुला करते हैं कि आस-पास का घास खा ले, पर भाग न जाने पाए। रस्सी का आयतन 20-25 मीटर तक भी कर देते हैं। वो पशु भी कभी सोचता है कि फ्री हो चुका हूँ। वो दौड़ता है तो फिर वहीं झटका लगता है। मैंने भी रस्सी से बाँधा है ताकि घर-परिवार को भी देख सको। नहीं तो पूरा बाँध सकता था। पर फिर बीबी के पास नहीं जाना था। कुछ भी अच्छा नहीं लगना था। पर इससे नुकसान होता। लहरसिंह वापिस नहीं जाता तो दूसरा मेहरसिंह मेरे पास आता तो लहरसिंह की बीबी ने नहीं आने देना था। उसने मेहरसिंह की बीबी को कहना था कि मेरा पति भी वहाँ गया था, पर निरबसिया आज तक वापिस नहीं आया। फिर मैं और लहरसिंह ही रह जाने थे।

तो मन को लंबे दायरे में बाँधा है। फालतू हरकत नहीं कर सकता है। उसने कहा कि थोड़े लपेटे और दे दो। जैसे पशु की रस्सी का आयतन छोटा करना हो तो उसी खूँटे में लपेटे दे देते हैं। मैंने कहा कि वो कमान भी तेरे हाथ में है। तू ध्यान की रस्सी को मेरे ध्यान के खूँटे में फेंकता रह। इसलिए—

गुरु से सुरति राख रह जोड़ी, जस नटवा राखत है डोरी॥

एक ने फ़ोन किया, कहा कि एक बात है कि ध्यान में बैठने नहीं होता है। मैंने कहा कि यह तो बड़ी ग़लत बात है। तुम चलते-फिरते नाम भजन करो। कहा कि स्वाँस की तकलीफ़ है। मैंने बड़ा प्रयास करके देख लिया, किसी भी तरह से नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में गुरु जी, क्या होगा ? क्या हम भी कहीं पहुँचेंगे या ऐसे ही कहीं वह जायेंगे ! वो पूछ रहा था कि कहाँ पहुँचेंगे ? मैंने कहा कि सात नियम बताए हैं, क्या उनका पालन करते हो ? कहा—हाँ। मैंने कहा कि बस, तू पार है। कहा कि तप तो कोई मैंने किया नहीं। मैंने कहा कि इससे बड़ा तप क्या होगा ? तुम

बड़े-बड़े नियमों का पालन कर रहे हो।

साँच बराबर तप नहीं.....॥

इस कलिकाल में इससे बड़ी तपस्या नहीं हो सकती है। तू चिंता मत कर।

बनत बनत बन जाई। गुरु के द्वारे लगे रहो भाई॥

साहिब कह रहे हैं—

द्वारे धनी के पड़े रहो, धक्का धनी का खाय।

धनी गरीब निवाज है, जो दर छाड़ न जाय॥

तो मैं कह रहा था कि जितनी भी अवस्थाएँ हैं, मन की हैं। जब तुरीयातीत में भी जाता है तो निराकार में ही समाता है। वहाँ भी मन काँमा रूप में हाजिर है। वहाँ भी मुक्ति नहीं है। जैसे यहाँ बंधन में है, वहाँ स्वर्ग में भी बंधन में है। कर्म का फल ही भोगने जाना है। इसलिए मन के साम्राज्य से बिना सद्गुरु के सत्य नाम के पार नहीं हो पायेगा।

कोटि जन्म का पथ था, गुरु पल में दिया पहुँचाय॥

साहिब ने जिस अमृतत्व की बात की, वो सगुण-निर्गुण से परे है। सामाजिक परिपेक्ष्य में दो तरह की भक्तियाँ देख रहे हैं। पर वो भी सही नहीं कर रहे हैं। उसमें भी वर्णित भक्ति देखें तो किसी को दुख देना वर्जित है, झूठ बोलना पाप है, छल, कपट, माँस आदि वर्जित है। सनातन यह प्रेरणा नहीं दे रहा है। ये दोनों पद्धतियाँ उपासना की प्रचलित थीं। साहिब ने इनसे ऊपर कहा। साहिब ने चौथे लोक की बात कही। कुछ चौथे लोक की बात कर रहे हैं, पर जब पूछो तो कुछ पता नहीं है और न ही लक्षण नज़र नहीं आ रहे हैं।

अमर-लोक के बारे में किसी को पूछता हूँ कि कैसे गये तो 10 मुकामी रेखता पढ़े होते हैं, वो सुना देते हैं। मुहम्मद साहिब के दस मुकामी रेखते में आता है कि कैसे-कैसे 10 मुकामों को पार करके अमर-लोक गये।

पर मैं पूछता हूँ कि कि दुबारा गये तो कैसे गये? वो कहते हैं कि वैसे ही गये। मैं कहता हूँ कि जाओ, तुम्हें नहीं पता है। विहंगम का तुम्हें पता नहीं है। मीन और पपील चाल तो अपनी कमाई से भी हो जाती है। मीन और पपील अपनी मेहनत से प्राप्त की जा सकती हैं। विहंगम गुरु-कृपा बिना नहीं होती है। वो है—

एक बार जो दर्शन पाते। जाय बहुरि बिलंब न लाते॥

फिर केवल वहाँ ध्यान करता है और यहाँ कुछ नहीं होता है। बीच के रास्ते नहीं रहते हैं।

कहैं कबीर विहंगम चाल हमारी॥

तब 10 मुकामों को देखते हुए नहीं जाना होता है।

क्या बात है? ऐसा क्यों? क्योंकि परम-पुरुष का आकर्षण इतना है कि सुरति करेगा तो यहाँ कुछ नहीं रहेगा। तभी कह रहे हैं—

एक बार जो दर्शन पाते। जात बहुरि बिलंब न लाते॥

यह है—विहंगम चाल। वो फिर ऐसे नहीं जाना होता है। मीन और पपील से 10वाँ द्वार पार कर सकता है....बस। आगे नहीं। आगे की यात्रा बिना सद्गुरु की कृपा के नहीं हो सकती है। बिना सद्गुरु की कृपा के विहंगम चाल की प्राप्ति नहीं कर सकता है। जब गुरु-कृपा हो जाती है तो सूक्ष्म से सूक्ष्म शरीरों की प्राप्ति होती जाती है। साधक पूरे ब्रह्माण्ड का अवलोकन करता चलता है। विहंगम में मन नहीं होता है। वहाँ मन का अभाव हो जाता है। क्योंकि परम-पुरुष के दरबार में जाना होता है। वहाँ मन का प्रवेश वर्जित है। मन को शाप है कि वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता है। इसलिए यह केवल विहंगम चाल में ही हो पाता है, जो कि सद्गुरु की कृपा के बिना करोड़ों प्रयास करने पर भी प्राप्त नहीं हो सकती है। गुरु-कृपा से ही परम-पुरुष के सम्मुख हो पाता है।

कोटिन भानु उदय जो होई। ऐसे ही पुनि चंद्र लखोई॥
पुरुष रोम सम एक न होई। ऐसा पुरुष न्यारा है॥

क्या वहाँ सूर्य है ? नहीं। अलंकार से बताया जा रहा है। यहाँ पर सूर्य और चंद्र ही अधिक प्रकाशित हैं। तो उनकी उपमा देकर संकेत दे रहे हैं। वास्तव में उसका वर्णन करने के लिए कोई शब्द नहीं है, कोई उपमा नहीं है। केवल शब्दों से आव्यक्त को व्यक्त करने का प्रयास है।

तो जब वहाँ पहुँच जाता है तो फिर उसकी सुरति हमेशा वहीं रहती है।

खावता पीवता सोवता जागता, कहैं कबीर सो रहे माहिं॥

महापुरुष के पास तभी पारस सुरति होती है। यह पारस सुरति कहाँ से आई ? यह परम-पुरुष में समाकर आती है। इसी से नाम देते हैं। वही कमाल करती है।

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।

लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गयी लाल॥

साहिब तेरी साहिबी, सब घट रही समाय।

ज्यों मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय॥

इसलिए महापुरुष के पास परम प्रज्ञावान् चेतन सुरति है। वो चेतन कर देते हैं। आपकी सुरति को नाम-दान के समय एक पल में परम चेतन कर देंगे।

कोटि जन्म का पथ था, गुरु पल में दिया लखाय॥

यह पल में मिल गया। पल में मिला। करोड़ों जन्मों का पथ था, गुरु ने कृपा की तो पल में पहुँचा दिया। यह काम भी वैसे ही हुआ जैसे परम-पुरुष के दर्शन से हुआ।

काग पलट हंसा कर दीना। करत न लागी बार॥

कौवे से हंस कर दिया और करते समय भी पता नहीं लगा।

पारस में अरु संत में, तू बड़ो अन्तरों मान।

वह लोहा कंचन करे, गुरु करले आप समान॥

भुँगे की तरह कर दिया।

गुरु को कीजै दण्डवत्, कोटि कोटि प्रणाम।
कीट न जाने भृंग को, करिले आप समान॥

अपने समान कर लेता है।

पुरुष रचन ते नारि है, नारि रचन ते पुरुष।
पुरुषे पुरुषे जे रचा, ते बिरला संसार॥

साहिब की हरेक बात में रहस्य है। 'पुरुष रचन ते नारि है' यानी परम-पुरुष ने आदि-शक्ति को उत्पन्न किया। यह बात तो समझ आई। फिर आदि-शक्ति ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश को उत्पन्न किया। यानी 'नारि रचन ते पुरुष' वाली बात भी समझ आ गयी। यहाँ तक बात समझ आ रही है। आगे कह रहे हैं—

पुरुषे पुरुषे जे रचा...॥

यह पुरुष से पुरुष की रचना कैसी? क्या पुरुष से पुरुष भी पैदा हो जाता है? बिलकुल। जेनिज़िज्म स्वीकार नहीं कर पायेगा इस तथ्य को। जिस दिन नाम देता है तो आध्यात्मिक जेनिज़िज्म करता है। सुरति के द्वारा आपका वजूद अपनी तरह कर देता है। इस पर कहा—

जब मैं था तो गुरु नहीं, अब गुरु हैं मैं नाहिं।
प्रेम गलि अति साँकरी, ता में दो न समाहिं॥

पहले मन, बुद्धि आदि में समाया हुआ था। 'अब मैं नाहिं' यानी अब गुरु ने अपने रंग में रंग लिया। सांसारिक भाव छिप गया, दब गया। उन्होंने अपना रंग चढ़ा दिया।

सतगुरु मोर रंगरेज, चुनरि मोरी रंग डारी।
स्याही रंग छुड़ाइया, दिया मजीठा रंग॥

स्याही रंग यानी काला रंग। उज्ज्वल रंग दे दिया। निर्मल कर दिया। हृदय प्रकाशित कर दिया। यह काम भृंग-मता से किया। इसलिए—
भृंग मता होय जेहि पासा। सोई गुरु सत्य धर्मदासा॥

साहिब धर्मदास को समझा रहे हैं कि जिसके पास यह भृंग-मता हो, वही गुरु सत्य है और कोई नहीं।

पुरुष से पुरुष की रचना यानी पारस सुरति से परम चेतन कर दिया। व्यक्तित्व बदला। यही चीज़ प्रभु करता है।

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।

लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गयी लाल॥

जब प्रविष्ट हुआ तो मैं भी वैसा ही हो गया।

तो पारस सुरति संत के पास आई। उससे बिलकुल अपनी तरह कर देगा। ‘मैं भी हो गयी लाल’ की तरह वो भी अपनी तरह कर देगा। क्योंकि वो पारस सुरति वहीं से आई।

पारस तो लोहे को पारस नहीं बना सकता है। वो अधिक-से-अधिक लोहे को सोना बना सकता है। पर संत अपने समान कर लेता है। इसलिए गुरुत्व का बड़ा महत्व बोला।

गुरु हैं बड़े गोविंद से, मन में देख विचार।

हरि सुमिरे सो वार है, गुरु सुमिरे सो पार॥

तो लोगों को इन चीज़ों को पता नहीं है। फिर कोई लक्षण भी नहीं दिख रहे हैं। कोई कहे कि पहलवान हूँ, पर शरीर कमजोर-सा हो तो क्या कहेंगे? यदि सयाने-चेले के पास भी जा रहे हैं, हत्या भी मान रहे हैं, ग्रह भी मान रहे हैं, अन्य-अन्य भक्तियाँ भी कर रहे हैं तो उलझन में हो।

खेलना हो तो खेलिये, पक्का होके खेल।

कच्ची सरसों पेर के, खली भया न तेल॥

बीज को जमीन में डालते हैं। फिर सींचते हैं, पनपता जाता है। इस तरह भरोसे के बल पर आपकी भक्ति का बीज पनपता जाता है। भाव यही रखना—

जीवन का अब सौंप दिया, सब भार तुम्हारे हाथों में।

है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में॥

ध्यान और विश्वास ही भक्ति के सिद्धांत हैं। चाहे सगुण-भक्ति हो या निर्गुण-भक्ति, ये चीज़ें चाहिएँ। पर हम दोनों से परे बता रहे हैं।

साहिब ने दोनों से परे कहा। इसमें न क्रिया को, न ज्ञान को, न योग को महत्व दिया। इसमें केवल कृपा को महत्व दिया।

अदाकर खुद खजाने से, छुड़ा ले अपने बंदे को॥
 मैं अपराधी जन्म का, नख शिख भरा विकार।
 तुम दाता दुख भंजना, मेरी करो सम्हार॥
 मैं कामी मैं कुटलू, मैं अवगुण की खान।
 मो पर कृपा न छाड़िये, दास आपनो जान॥
 अवगुण किये तो बहु किये, करत न मानी हार।
 भावै बंदा बखशिये, भावै गर्दन मार॥

इसलिए कह रहे हैं कि पूरा काम गुरु पर छोड़ देना।

तीन लोक नव खंड में, गुरु से बड़ा न कोय।
 कर्त्ता करे न कर सके, गुरु करे सो होय॥

आप कहेंगे कि कैसे होगा? आप आजमाना। एक बंदे ने बड़ी प्यारी बात कही। उसने कहा कि मेरी छोटी दुकान है। पहले घाटा भी हो जाता था, नुकसान भी हो जाता था। फिर आपसे नाम लिया। आपको सबकुछ हृदय से सौंप दिया। अब जब भी घाटा होने लगता है, आप खुद ही खड़े हो जाते हो। मैं चिंता मुक्त हो चुका हूँ। मुझे लगता है कि आप ही सबकुछ कर रहे हैं।

समर्पण सच्चा हो। छोटा बच्चा मस्त घूमता रहता है। उसे किसी भी चीज़ की फिक्र नहीं है। वो जानता है कि माँ खुद खिला भी देगी, सुला भी देगी। बस, संतत्व की धारा में भी समर्पण है। यही भक्ति है। संत-धारा ने भक्ति कही।

आगे भक्त भये बहु भारी। करी भक्ति पर युक्ति न धारी॥

साहिब ने भक्ति के सूक्ष्म पहलुओं को बताया।

खाक हो गुरु के चरण में, तब तुझे मंजिल मिले॥

और —

मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मरतबा चाहे।

कि दाना खाक में मिलकर, गुले गुलजार होता है॥

क्योंकि आप जो भी प्लैनिंग करेंगे, मन की होगी। इसलिए समर्पण कहा। तब ही उसकी कृपा मिलेगी और वही चाहनी है।

एक राजा की सेना में दो वीरों ने बड़ा काम किया। राजा की क्षति बचाई। राजा ने कहा—शाबाश वीरो, माँगो, क्या चाहते हो? एक ने कहा कि 10 हजार सेना, इतने-इतने हाथी-घोड़े, इतना-इतना धन और एक जिले का राज्य। राजा ने कहा कि दिया। दूसरे से पूछा तो उसने कहा कि मुझे कुछ नहीं चाहिए, बस, आप अपनी कृपा रखना। बादशाह ने कहा कि हे वीर, तूने तो मुझे ही माँग लिया।

साहिब से भी कुछ नहीं चाहना है। जो माँगोगे, वो दुनियाबी होगा। बस, यह कहना कि जो रजा है, वही।

जे तू राज देवे, तेरी बड़ियाई।

जे तू भीख मँगाये, ते की घट जाई॥

साहिब ने भी कहा—

न सुख हाल में मजा है, न दुख हाल में मजा है।

जिस हाल में तू राखे, उस हाल में मजा है॥

सुख में भय है कि कहीं यह सुख चला न जाए।

तेरा भाना मीठा लागे॥

जब भी संकट आए तो तोहफा समझना। नहीं तो दुनिया प्यारी लगेगी और जाने का दिल नहीं करेगा यहाँ से। जब प्यारी लगने लगती है तो साहिब झटका दे देता है।

तो तीन-लोक काल की सीमा के अन्दर है। साहिब ने परे की बात की। क्या यह जीव तप से वहाँ पहुँचेगा? नहीं।

कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा।

गृह छोड़ भये सन्यासी, तऊ न पावत पारा॥

गुरु एक सेतु हैं—परमात्मा तक जाने का। नदी पर पुल बन जाए तो चींटी भी पार कर जाती है। इस तरह गुरु एक सेतु हैं, आप पार हो जायेंगे। इसलिए गुरु-भक्ति का संदेश दिया।

गुरु आज्ञा ले आवही, गुरु आज्ञा ले जाहिं।

कहैं कबीर ता दास को, तीन लोक भय नाहिं॥

यह बहुत ही बारीक भक्ति है। मुझे यह भक्ति स्थापित करने में, लोगों को समझाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी है। मनुष्य आसानी से यह भक्ति समझता नहीं है। गली-गली घूमता हूँ, मौहल्ले-मौहल्ले घूमता हूँ, गाँव-गाँव घूमता हूँ, पहाड़ों के ऊपर पहुँच जाता हूँ, नदी पार करके जाना हो, तो भी चला जाता हूँ।

हिमाचल प्रदेश ज्योति प्रकाश के घर पहले 2-3 बार गया। 6-7 कि.मी. ऊपर पैदल चलना पड़ता था। तब 5-10 आदमी जोड़े। आदमी जल्दी आता नहीं है। शराबी आना नहीं चाहता है। सात नियम अच्छे भले आदमी का पसीना छुड़ा देते हैं। लोग सोचते हैं कि पूरा काम ही बंद हो जायेगा। तो आते ही नहीं हैं।

एक बंदा हरिद्वार गया। वहाँ लोग कुछ-न-कुछ छोड़ते हैं। वहाँ पंडित ने उसे भी कहा कि कुछ छोड़ दो, संकल्प करके जाओ। उसने कहा कि क्या छोड़ूँ? पंडित ने कहा कि शराब पीना छोड़ दो। उसने कहा कि यह नहीं छोड़ सकता हूँ। यही तो एक मस्ती वाली चीज़ है।

क्या मस्ती है! पीकर किसी नाली में गिरना है। यह मस्ती है! तो पंडित ने कहा कि माँस खाना छोड़ दो। उसने कहा कि इसी से तो सेहत है। फिर कहा कि झूठ बोलना छोड़ दो। कहा कि इसी से तो फैक्टरी चल रही है। झूठ पर ही तो चल रही है। तो उसने कहा कि कुछ अपनी ही मरजी से छोड़ दो। उसने थोड़ा सोचा और फिर कहा कि ठीक है, मैं यहाँ आना ही छोड़ देता हूँ।

इसी तरह लोग कहते हैं कि साहिब-बंदगी में नहीं जाना है। हम कह रहे हैं कि—

आहार शुद्धम् तो बुद्धि शुद्धम् ।।

तो बड़ी मेहनत की है। हिमाचल में सत्संग होता है तो 10 घंटे आने में और 10 घंटे जाने में लगते हैं। 400 कि.मी. है। खून-पसीना एक करके, रात-दिन मेहनत करके संगत जोड़ी है। रात के 11-12 बजे तक मेहनत करता हूँ। धीरे-धीरे जगह खरीदी, आश्रम बनाया। हर जगह ऐसे ही करता हूँ। पहले आश्रम बनाता हूँ, फिर लोगों को आमंत्रित करता हूँ कि आ जाओ। चंदा नहीं करता हूँ।

पहली बार जब मुम्बई गया तो 10-12 लोग थे। फिर भोपाल से ले जाता था। अब वहाँ भी हजारों हो गये हैं। मेहनत से धीरे-धीरे संगत जोड़ी है। हुजूम मेरे पास नहीं आता है। निरंजन आने नहीं देता है। एक ने मेरे सैकेट्री से कहा कि साहिब को माना कि लाखों लोगों को जोड़ा। मैं अपनी जनानी, अपने बाप, अपनी माँ को नहीं समझा पा रहा हूँ। मैंने कहा कि यह काम मेरी संगत ने ही किया है। तू लगा रह, समझ आएगी। एक-एक माता ने 200-200 आदमी को जोड़ा है।

पर सच यह है कि यहाँ पूरे बंदे साहिब लाया है। लहरसिंह कहे कि 200 आदमी लाया है तो नहीं। साहिब खोपड़ी पर बैठा, तो ही वो आया है। नहीं तो एक को भी नहीं ला सकता था।

एक ने कहा कि शाही अनपढ़ हूँ, पर पता नहीं जब किसी को समझाने लगता हूँ तो कहाँ से शब्द आते हैं! मैं बाद में सोचता हूँ कि यह बात तो मुझे पहले पता ही नहीं थी, जो मैंने उसे समझा दी! मैंने कहा कि तू नहीं समझेगा। साहिब तो कह रहे हैं—

**आपही कं डा तौल तराजू, आपही तौलन हारा।
आपही लेवे आपही देवे, आपही है बनजारा।।
आपही गुरु पुनि शिष्य आपही, आप आप का खेल है सारा।।**

लहरसिंह चेला नहीं है। वो साहिब की रज़ा से चेला है। नहीं तो वो मन है। लहरसिंह नहीं तो भाग जाना था। यह साहिब की रज़ा से साहिब की भक्ति कर पा रहा है।



कहैं कबीर सुनो चितलाई

पुरुष भेद नहिं काहु सो कहई

कहैं कबीर सुनो चितलाई। धर्मदास तुम लेहु अर्थाई॥
तीनि लोक नायक भगवाना। तिन कह पुरुष दीन्ह रजधाना॥
ताते क्रीड़ा करै अनन्दा। खेल अनेक खेल गोविंदा॥
तीनि लोक बाजी दइ राखा। परपंची अपने मुख भाखा॥
सत्य कहइ सत्य भाव लखावै। करि प्रपंच जीवन भरमावै॥
जीव जो मूल बीज के आही। इन पाया सब पुरुष के पाही॥
बीज आदि तिहु लोक जो फूला। आपुहि जानै पुरुषहि तूला॥
करि अभिमान पुरुष विसरावा। आपुहि पूरण पुरुष कहावा॥
सर्वमें व्यापक आपुहि रहई। पुरुष भेद नहिं काहु सो कहई॥

कह रहे हैं कि तीन-लोक के जो भगवान हैं, उन्हें परम-पुरुष ने तीन-लोक का राज्य दिया। अब वो भगवान इस तीन-लोक में अनेक तरह के खेल खेलते हुए सब जीवों को धोखे में रखता है, उन्हें भ्रमित करता रहता है। अहंकार करके यह परम-पुरुष को भूल स्वयं परम-पुरुष बन बैठा। यह सबमें स्वयं मन बन कर समाया हुआ है और परम-पुरुष का भेद किसी से नहीं कहता।

सद्गुरु शब्द करौ विश्वासा

भेद कहै उजरै पुर तीनो। आपन थापन ताते कीनो॥

चारिहु वेद नेति जो गावैं। सद्गुरु रहित पुरुष बतलावैं॥
जीव जन्तु राखैं अरुझाई। बीज पुरुष जो दीन्हो भाई॥
जब नहिं बीज पुरुषपहँ जाई। तबै पुरुष हम कहँ उपजाई॥
बीज अंकुरी लोक ले आवौ। धर्मराज ते हंस छुड़ावौ॥
सेवा वसि वहि दीन्हा राजू। अब मेटौ तौ सुकृतहि लाजू॥
सुत हमार भया वरियारा। जेहि दीन्हों तिहुँ लोक के भारा॥
तुम अंकूरी सेवहु जाई। बार बार मैं कहौं बुझाई॥
ताते मैं संसारहि आवा। पुरुष शब्द टारो नहिं जावा॥
नाहिं तौ तीनौ लोकहि तारौं। धर्मराज ते सबै उबारौं॥
जो जन अंश पुरुष के आही। सो सब आवै हमरे पाही॥
अवर सकल जग काल बसेरा। नित नित प्रलय होत झकझेरा॥
यहि कर काल पुरुष दियो नामा। तीन लोक ते न्यारा धामा॥
धर्मदास मन माहिं विचारो। काल रूप सब भाव निहारो॥
जो तुम कहौ पुरुष की आशा। सद्गुरु शब्द करौ विश्वासा॥

साहिब कह रहे हैं कि यदि निरंजन परम-पुरुष का भेद किसी को दे दे तो इसके तीनों लोक उजड़ जायेंगे। इसलिए अपनी ही महिमा तीन लोक में स्थापित करता है। चारों वेद नेति-नेति कहते हुए जिस पुरुष की बात करते हैं, वो यही निरंजन है। इसने सब जीव जन्तुओं को भ्रमित करके रखा हुआ है। साहिब धर्मदास से कह रहे हैं कि इस तरह जब परम-पुरुष के पास कोई भी जीव नहीं पहुँचा तो परम-पुरुष ने मुझे अपने से निकाला और कहा कि जो अंकुरी जीव हैं, उन्हें काल-निरंजन से छुड़ाकर ले आओ। सेवा के बस होकर परम-पुरुष ने निरंजन को राज्य दिया है। अब यदि उसे मैं मिटा देता हूँ तो शब्द टूट जाता है और लाज होती है। इसलिए परम-पुरुष ने मुझे अंकुरी जीवों को लाने को ही भेजा है। इसलिए मैं बार-बार संसार में आता हूँ और जीवों को समझाकर वहाँ

ले जाता हूँ, क्योंकि परम-पुरुष का शब्द मेटा नहीं जा सकता है अन्यथा तीनों लोक तार दूँ, सबको निरंजन के जाल से छुड़ाकर ले चलूँ।

बिना नाम नहिं ठौर ठिकाना

धर्मदास मैं कहों बुझाई। बिना भेद लोके नहिं जाई ॥
 अँधी सुरति शब्द बिन जानौ। लोक दीप कैसे पहिचानौ ॥
 शब्द पाय जब सुस्थिर होई। थान मुकाम लखै पुनि सोई ॥
 जो लखि पावै थान मुकामा। सुरति चलै तब पावै नामा ॥
 बिना नाम नहिं ठौर ठिकाना। अँध सुरति हो रहे ठगाना ॥

हे धर्मदास ! सार-नाम का भेद जाने बिना जीव अमर-लोक नहीं जा सकता है। नाम के बिना सुरति अँधी है। नाम पाकर ही सुरति स्थिर हो पाती है और अपने मुकाम की ओर चल पाती है। नाम के बिना इसे इसका ठिकाना नहीं मिल सकता है। ऐसे में यह ठगी ही जाती है।

ता दिन पुरुष आप जो रहते

नहिं तब धरती नहिं आकाशा। साखी शब्द नहीं परकाशा ॥
 तबही पुरुष कहाँ धौं रहेऊ। कौन तत्व में बासा लहेऊ ॥
 गुप्तहि तत्व गुप्त अस्थाना। गुप्त वस्तु में रहे निदाना ॥
 गुप्त हते तब प्रकटे भयऊ। अमर दीप उच्चारण लयऊ ॥
 शब्द उचारो अमर अखंडा। बीरा सार विदेही पंडा ॥
 ता दिन पुरुष आप जो रहते। कौन पिंड में वासा करते ॥

साहिब कह रहे हैं कि तब धरती, आकाश, साखी, शब्द आदि कुछ भी नहीं था। तब ऐसे में सत्पुरुष कहाँ थे ? किस तत्व में उनका वास था ? वो तत्व भी गुप्त था और वो स्थान भी गुप्त था। वो गुप्त वस्तु में थे। फिर वहाँ से प्रकट हुए और शब्द पुकारकर अमर-लोक बनाया। तब

केवल परम-पुरुष थे और कोई न था। फिर ऐसे में वो किस शरीर में निवास करते थे?

नाम हमार सुमिरै जो कोई

नाम हमार सुमिरै जो कोई। आवागमन रहित सो होई॥
हमरा नाम लेत घर आवै। सुख सागर निर्मल हो जावै॥
नाम लेत जो काल डराई। सुमिरत नाम हो दूर हो जाई॥
हमरो नाम सार है भाई। जो चीन्हे तेहि काल न खाई॥

कह रहे हैं कि जो हमारे नाम का सुमिरन करता है, उसका आवागमन मिट जाता है। नाम का सुमिरन करने से काल का भय समाप्त हो जाता है। मेरा नाम सार-नाम है। जो इसे पहचान लेता है, उसे काल नहीं खा पाता है।

शब्द अमी सुपुरुष लिख दीन्हा

अमी शब्द सुमिरे जो कोई। अमीस्वरूप होहि पुनि सोई॥
अमी शब्द जिन नाहिं पायब। सोई जीव प्रलय तर आयब॥
एहि शब्द मैं कहौं बखानी। ब्रह्मा विष्णु महेश न जानी॥
इह पुनि नहीं निरंजन पावा। धर्मदास मैं तुमहिं बतावा॥
शब्द अमी सुपुरुष लिख दीन्हा। एकहु अंक परै नहिं चीन्हा॥

साहिब कह रहे हैं कि जो अमृत शब्द का सुमिरन करता है, वो अमृत-स्वरूप ही हो जाता है। जो इस नाम को नहीं पाता, वो जीव प्रलय में आ जाता है। जिस नाम का मैं बखान कर रहा हूँ, इसे ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी नहीं जानते हैं। निरंजन भी इस नाम को नहीं पा सकता है। हे धर्मदास! ऐसा नाम मैंने तुम्हें दिया है। यह अमृत नाम सत्पुरुष ने दिया है, जिसे कोई नहीं जानता है।

पाँचहि अमी पुरुष ने कीन्हा

पाँचहि अमी पुरुष ने कीन्हा। पाँच तत्व ताही सो चीन्हा॥
 अचल अमी जो अकाश बखानी। शब्द अमी वायु उतपानी॥
 अजर अमी सो तेज पसारा। अकह अमी जल तत्व सम्हारा॥
 रंग अमी सो पृथ्वी भयऊ। रचना सब याही पय ठयऊ॥
 पाँचों अमृत तहँवा छाजै। पाँच तत्व तासों उपराजै॥
 पाँच तत्व सों देह सँवारी। तीनों गुण तामें अनुसारी॥
 देही गति काहू नहिं पावा। देह धरै यम काम सतावा॥
 आतम रूप रंग जिन जाना। प्रफुल्लित होय कमल बिकसाना॥

परम पुरुष ने पाँच अमृत की रचना की। उन्हीं से पाँच तत्व हुए।
 अचल अमी से आकाश तत्व, शब्द अमी से वायु तत्व, अजर अमी से
 तेज तत्व (अग्नि) अकह अमी से जल तत्व, रंग अमी से पृथ्वी तत्व
 हुआ। इन्हीं पाँच से आगे शरीर की रचना हुई और उसमें तीन गुणों का
 समावेश किया गया। शरीर का रहस्य किसी ने नहीं जाना। शरीर धारण
 करते ही काल और काम दोनों सताने लगे। जिसने आत्म रूप को जाना,
 वो ही आनन्द स्थिति को प्राप्त कर सका।

गुरु बिन अंत न कोई पावै

गुरु होहि वहि ताहि लखावै। गुरु बिन अंत न कोई पावै॥
 जिन गुरु की कीन्ही परतीती। एक नामकर भवजल जीती॥
 गुरु पुरुष जिय करहि मराला। गुरु सनेह बिन काग कराला॥
 गुरु दया गुरु शब्द हमारा। गुरु प्रगट है गुप्त अधारा॥
 गुरु पृथ्वी गुरु पवन अकाशा। गुरु जल थल महुँ कीन निवासा॥
 चंद्र सूर्य गुरु सब संसारा। गुरु गंधर्व गुरु सब व्यवहारा॥
 गुरु ब्रह्मा और विष्णु महेशा। गुरु भगवान कूर्म औ शेषा॥

चराचरहि जहँ लगि सब देखा। गुरु बिना कछू और नहिं पेखा॥
 उत्तम मध्यम और कनिष्ठा। ये सब कीन्हे गुरु शरिष्ठा॥
 ये सब जीव गुरुमय जानो। गुरु से भिन्न अन्य नहिं मानो॥
 कहै कबीर सो हंस पियारा। येहि भांति गुरु दरश निहारा॥

गुरु ही परमात्मा के दर्शन करवाता है। गुरु के बिना कोई भी भवसागर का अंत नहीं पा सकता है। जो गुरु पर भरोसा रखते हैं, वो एक सत्यनाम के बल पर भवसागर को जीत कर चल पड़ते हैं। गुरु प्रेम को हृदय में धारण करने वाला हंस के समान है और जो मनुष्य गुरु प्रेम से रहित है, वो कौवे के समान है। गुरु ही शब्द (सार नाम) है। शरीर रूप में गुरु प्रगट भी है और शब्द रूप में गुप्त भी है। गुरु ही पृथ्वी, पवन, चंद्र, सूर्य और आकाश है। जल-थल में गुरु ही निवास कर रहा है। गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही महेश है, गुरु ही परमात्मा है, गुरु ही कूर्म और शेष है। शिष्य को चाहिए कि चराचर जगत में जो कुछ भी दिख रहा है, गुरु के बिना और कुछ नहीं दिखे। ये सब जीव गुरुमय ही जाने और गुरु से अलग न समझे। साहिब कह रहे हैं कि वो बड़ा प्यारा हंस हो जाता है, जो हरेक जीव में गुरु के ही दर्शन करता है।

गुरु चरण जे राखे ध्याना

गुरु चरण जे राखे ध्याना। अमर लोक वह करत पयाना॥
 भ्रमर कमल ज्यों रहैं लुभाई। या विधि गुरु चरणन लपटाई॥
 तन मन धन न्योछावर राखे। दर्शहि पर्श अमी रस चाखे॥
 चरण धोय चरणामृत पावै। पुरुष समीप पहुँच सो जावै॥
 गुरु बिहून अमृत नहिं दीजै। अमृत छाड़ि विषय रस लीजै॥

जो हर समय गुरु चरणों में ही ध्यान रखता है, वो अमर लोक में प्रस्थान कर जाता है। जैसे भँवरा कमल के फूल की तरफ आकर्षित

रहता है, ऐसे ही शिष्य को चाहिए कि गुरु के चरणों में ही लिपटा रहे। गुरु को तन, मन और धन न्यौछावर कर दे और उनके दर्शन कर अमृत रस पान करे, उनका चरणामृत ले। ऐसे में परम पुरुष के समीप पहुँच जायेगा। जो गुरु से बिहूना है, उसे अमृत रस नहीं देना है, क्योंकि वो अमृत को छोड़कर विषयों में ही उलझा है।

तब गुरु शिष्य हृदय संचारे

सीख गुरु या बिचि जो धरहीं। जैसी विधि तुम हम सो करहीं॥
तन मन शीस न्योछावर डारै। तब गुरु शिष्य हृदय संचारे॥
रंचक कपट हिये महुँ राखे। गुरु सनेह रस कैसे चाखे॥
कैसे ताकर होय उबारा। बूढ़हि भवसागर की धारा॥

हे धर्मदास, जिस तरह तुम मेरी सीख मान रहे हो, ऐसे ही शिष्य को चाहिए कि गुरु की सीख को हृदय में धारण करे। तन, मन और शीश सब गुरु पर न्योछावर कर दे। ऐसे में गुरु शिष्य के हृदय में प्रवेश कर लेते हैं। पर यदि थोड़ा सा भी कपट हृदय में होगा तो गुरु प्रेम के रस का आस्वादन नहीं कर सकता है। फिर उसका कल्याण नहीं हो सकता है। वो भवसागर की धारा में ही डूबेगा।



आसान और कठिन

बड़ा आसान है,
 पाप करते जाना ।
 मन के वश होकर,
 क्रोध को बढ़ाना,
 मारना काटना,
 लड़ना झगड़ना,
 दूसरों का खून बहाना ।
 राक्षस होकर,
 कष्ट पहुँचाना ।
 कठिन है,
 बहुत कठिन है,
 दूसरों की भूलों को,
 दिल से भुला,
 माफ करते जाना ।
 मुश्किल नहीं है,
 काम को बुलाना
 वासना में अँधे हो,
 कुकर्म में रम जाना ।
 मुश्किल तो है,
 विचार कर लेना
 वासना को रोकना
 विरक्त हो जाना ।
 बहुत आसान है,
 लोभ को जगाना
 तिजौरियां भरने हेतु
 गरीबों का खून,
 चूसते चले जाना ।
 बहुत कठिन है मगर,
 सत्य भक्ति पकड़ना
 धन को अपने,
 परमार्थ में लगाना ।
 आसान ही तो है,
 मोह में डूबे रहना

हर समय,
 बीबी की, बच्चों की,
 अपनों की याद आना ।
 पर कठिन है,
 कितना कठिन है!
 एक पल के लिए भी,
 सबको भूल जाना
 चित्त को दुनिया से हटा,
 सतगुरु में लगाना ।
 बहुत आसान है,
 अहंकार को जगाना
 धन पे इतराना
 सौंदर्य दिखाना
 अक्लमंद बन,
 दूसरों को समझाना
 ऊँचे कुल का,
 घमंड दिखाना
 ताकत का रोब दिखाना,
 मासूमों को डराना
 पर कठिन बड़ा है,
 अहंकार का त्यागना
 सच का सामना
 निंदा भी सह जाना ।
 बहुत ही सरल है,
 मन को रिझाना ।
 लहरों में उसकी,
 बहते चले जाना ।
 पर
 कठिन बहुत है साधो,
 मन पर असवार होना
 गुरु आज्ञा में रहना
 लोक-लाज त्यागना
 सतगुरु को रिझाना ।।

तीन लोक जो काल सतावे ।
 ताको सब जग ध्यान लगावे ॥
 निराकार जेहि वेद बखानै ।
 सोई काल कोई मरम न जानै ॥

जस निराकार की बात वेद कर रहा है, वही काल है, पर कोई उसका भेद नहीं पा रहा है। उसी के तीन बेटे त्रिदेव हैं और सारा संसार उन्हीं की सेवा, उन्हीं की भक्ति कर रहा है। त्रिगुण के जाल में सारा संसार फँस गया है। जिनकी यह जग भक्ति करता है, अंत में वही उसे खा जाता है। सभी जीव सत्पुरुष के हैं, परम-पुरुष के हैं, साहिब के हैं, पर यम ने, काल ने धोखे से उन्हें अपने जाल में फँसा लिया है। पहले तो यम असुर रूप में जीवों को सता रहा है। दूसरे, फिर वो ही अवतार धारण कर असुरों का संहार कर रहा है। जीव कष्टों से बचने के लिए पुकार कर रहे हैं, रक्षा के लिए परमात्मा को पुकार रहे हैं। जीव सोच रहे हैं कि यह हमारा स्वामी है, रक्षक है। काल विश्वास देकर धोखा कर रहा है। उसकी प्रभुता देखकर जीव विश्वास कर रहे हैं कि यह ही हमारा रक्षक है, पर अंतकाल में वो ही जीवों को फिर निराश कर रहा है, उनका भक्षण कर रहा है। काल दयाल-पुरुष का भेष बनाकर, दया दिखाकर बाद में उन्हें मरवा रहा है।

ना कुछ किया ना करि सका, ना करने योग शरीर।

जो कुछ किया साहिब किया, भया कबीर कबीर ॥

जो आपको कह रहा है कि कुछ कर, कमाई कर, समझना कि वो संत नहीं है, संत वेश में कोई पाखण्डी है, जिसे यथार्थ ज्ञान कुछ भी नहीं है, केवल किताबों से पढ़कर सुना रहा है। संत तो सक्षम होता है, पर वो अक्षम है; संत आँखों देखी वाली बात करता है, वो किताबों वाली बात कर रहा है; संत यथार्थ में अमर-लोक से होकर आते हैं, उसने कभी अमर-लोक सपने में भी नहीं देखा है। यदि सपने में भी देखा होता तो जान जाता कि अपनी ताक़त से नहीं देखा, कोई दिखा गया। यह पक्की बात है कि सपने में भी अमर-लोक नहीं देखा जा सकता है। फिर वहाँ पहुँचना तो बड़ी दूर की बात है। इसलिए जिसके पास भृंग मते वाली श्यूरी नहीं है, वो आपका बहुत बड़ा बैरी है, क्योंकि आपको धोखे में रखे हुए हैं। इस बात को अपने दिल में गहराई से उतार लेना कि वो आपका सर्वनाश करने पर तुला है, जो कह रहा है कि कुछ कमाई कर, कुछ साधना कर, तभी कुछ होगा। क्योंकि उस पाखण्डी को पता नहीं है कि—

सन्त-मत में शीश पर हाथ रखकर नाम दिया जाता है। कोई कहता है कि हमें गुरु जी ने माइक पर नाम दिया, कोई कहता है कि टी. वी. पर दिया। नहीं, नाम ऐसे नहीं दिया जाता। एक ने मुझसे भी पूछा कि यदि आपको हजार आदमी को एक साथ नाम देना पड़ेगा तो क्या तब भी ऐसे ही शीश पर हाथ रखकर देंगे? मैंने कहा कि यदि एक लाख आदमी को भी नाम देना पड़ा तो ऐसे ही दूँगा, क्योंकि नाम देने की विधि ही यही है। वो ऐसे ही दिया जाता है। यही सिस्टम है नाम का क्योंकि वो किरणें शिष्य को प्रदान करनी हैं।

—सतगुरु मधुपरमहंस जी

पुस्तक सूची

हिन्दी में

1. परा रहस्या
2. मासिक पत्रिका सत्यकेतु
3. पावन प्रार्थनाएँ
4. सद्गुरु चालीसा
5. वार्षिक डायरी
6. सद्गुरु भक्ति
7. कहाँ से तू आया और कहाँ
तुझे जाना रे?
8. सत्संग सुधारस
9. नाम अमृत सागर
10. अमृत वाणी
11. सद्गुरु नाम जहाज़ है
12. चल हंसा सतलोक
13. कोटि नाम संसार में तिनते
मुक्ति न होय
14. मूल नाम गुप्त है, जाने बिरला
कोय
15. गुरु सुमिरै सो पार
16. तीन लोक से न्यारा
17. सेहत के लिए ज़रूरी
18. सहजे सहज पाइये
19. रोगों से छुटकारा
20. सद्गुरु महिमा
21. भक्ति के चोर
22. अनुरागसागर वाणी
23. भक्ति सागर
24. हरि सेवा युग चार है, गुरु
सेवा पल एक
25. सत्य नाम के सुमरते उबरे
पतित अनेक
26. काग पलट हंसा कर दीना
27. कस्तूरी कुण्डल बसै मृग
खोजे बन माहिं
28. गुरु पारस गुरु परस है
29. गुरु अमृत की खान
30. शीश दिये जो गुरु मिले तो
भी सस्ता जान
31. मूल सुरति
32. भृंग मता होय जिहि पासा,
सोई गुरु सत्य धर्मदासा

33. मैं कहता हूँ आँखिन देखी
34. गुरु संजीवन नाम बतावे
35. नाम बिना नर भटक मरे
36. रोगों की पहचान
37. यह संसार काल को देशा
38. न्यारी भक्ति
39. साहिब तेरी साहिबी सब
घट रही समाय
40. जाप मरे अजपा मरे अनहद
भी मर जाए
41. आयुर्वेद का कमाल रोगों के
निदान में
42. सुरति समानी नाम में
43. सबकी गठरी लाल है, कोई
नहीं कंगाल
44. निन्दक जीवे युगन युग
काम हमारा होय।
45. निराले सद्गुरु
46. कुँजड़ों की हाट में हीरे का
क्या मोल
47. जीवड़ा तू तो अमर लोक का
पड़ा काल बस आई हो
48. मुझे है काम 'सद्गुरु से
जगत रूठे तो रूठन दे'
49. जेहि खोजत कल्पो भये
घटहि माहिं सो मूर
50. आत्म ज्ञान बिना नर भटके
51. बिन सतगुरु बाँचे नहीं
कोटिन करे उपाय
52. अँधी सुरति नाम बिन जानो
53. सत्यनाम निज औषधि
सद्गुरु दर्ई बताय
54. सेहत संजीवनी
55. भक्ति दान गुरु दीजिए
56. मन पर जो सवार है ऐसा
ऐसा विरला कोई
57. सत्यनाम है सार बूझौ सन्त
विवेक करि
58. रोग निवारक
59. मुक्ति भेद मैं कहौं विचारी
60. "तेरा बैरी कोई नहीं
तेरा बैरी मन"
61. सुरति का खेल सारा है
62. सार शब्द निहअक्षर सारा
63. करूँ जगत से न्यार
64. बिन सत्संग विवेक न होई
65. सत्य नाम को जनि कर दूजा
देई बहा
66. सुरत कमल सद्गुरु स्थाना
67. अब भया रे गुरु का बच्चा